"ओ३म"

वैदिक जीवन पद्धति

VEDIC LIFE

राय साहिब चौ॰ प्रताप सिहं धर्मार्थ ट्रस्ट,
५७, माडल टाऊन, करनाल



समर्पण

राय साहिब चौधरी प्रतापसिंह जी की दिवंगता माता श्रीमती कौड़ी बाई की पुण्य स्मृति में सादर समर्पित ।

Dedicated to the memory of late Shrimati Kauri Bai, mother of Rai Sahib Chaudhary Pratap Singh ji

ओ३म्

वैदिक-जीवन-पद्धति



VEDIC-LIFE





—अनुवादक—

डा० रत्नचन्द्र शर्मा

ऍम० ए० (संस्कृत-हिन्दी-इंग्लिश) ऍम० ओ० एल०, पी-एच०डी०

भूतपूर्व प्रिंसिपल

दयालसिंह कालिज करनाल

राय साहिब चौ० प्रताप सिंह धर्मार्थ ट्रस्ट

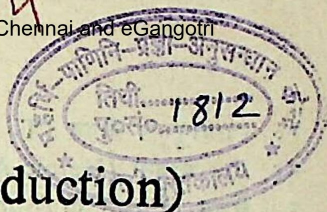
५७, माडल टाऊन, करनाल

मूल्य : 7·00

प्रकाशक
राय साहिब चौ० प्रताप सिंह धर्मार्थ ट्रस्ट (न्यास)
५७, माडल टाऊन करनाल

द्वितीय संस्करण

मुद्रक
नटराज प्रैस दिल्ली



विषय-सूची (Introduction)



विषय-प्रवेश

वेद हिन्दूओं के सर्वाधिक सम्मान्य, सर्वाधिक प्रामाणिक और परम पवित्र धर्मग्रन्थ तो हैं ही, इसके साथ ही वे विश्ववाङ्मय के भी सर्वप्रथम और सम्मानित ग्रन्थ हैं तथा ज्ञान के भण्डार हैं। हिन्दू उन्हें वैदिक-सनातन धर्म के मूलाधार एवं ईश्वरीय ज्ञान स्वीकार करते हैं जो परवर्ती समस्त वैदिक तथा अवैदिक (लौकिक) साहित्य के प्रेरणास्रोत है। "वेदोऽखिलो धर्ममूलम्"[1] कह कर मनु महाराज ने इसी तथ्य की ओर संकेत किया है। अन्यत्र मनु महाराज ने वेद को चारों वर्णों, तीनों लोकों, चारों आश्रमों, भूत, भविष्य और वर्तमान सभी के ज्ञान का आधार बताते हुए कहा है—

"चातुर्वर्ण्यं त्रयो लोकाश्चत्वारश्चाश्रमा· पृथक्।
भूतं भव्यं भविष्यच्च सर्वं वेदात्प्रसिध्यति ॥"[2]

सांख्य, योग, वेदान्त, वैशेषिक और पूर्वमीमांसा दर्शनों में वेदों को स्वतः-प्रमाण वताया गया हैं और नित्य स्वीकार किया गया है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज के नियमों में तीसरे नियम के रूप में लिखा है—"वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।" डाक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन् ने भी वेदों को 'शाश्वत' तथा 'स्वतःप्रमाण' बताया है।[3] "ब्राह्मणास्तेन वेदाश्च यज्ञाश्च विहिताः पुरा"[4] अर्थात् "सृष्टि के आरम्भ में ब्रह्म से ब्राह्मणों, वेदों और यज्ञों की सृष्टि की गई" कह कर भगवान् श्री कृष्ण ने भी गीता में वेदों की नित्यता और स्वतः प्रामाणिकता का समर्थन किया है।

ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, स्मृतिग्रन्थ, दर्शनशास्त्र, रामायण, महाभारत, पुराण आदि सभी धर्मग्रन्थों में वेदों का महत्त्व स्वीकार किया गया है और

---

१. मनु स्मृति २/६
२. मनु स्मृति १२/९७
३. Indian Philosophy, vol II
४. गीता १७/२३

उन्हें ईश्वरीय ज्ञान के प्रतिपादक ग्रन्थ बताया गया है। स्वयं अनेक वेदमन्त्रों में वैदिक संहियाओं को परब्रह्म से प्रादुर्भूत कहा गया है और उनकी अपौरुषेयता तथा सहिमा का प्रतिपादन किया गया है। महात्मा बुद्ध, शंकराचार्य, गोस्वामी तुलसीदास, सूरदास, महात्मा कबीर, गुरु नानकदेव, स्वामी दयानन्द सरस्वती, डॉक्टर राधाकृष्णन्, श्री अरबिन्द घोष आदि भारतीय महापुरुषों, विद्वानों और महाकवियों एवं श्री ज़रथुस्त (पारसी मत के प्रवर्तक), लात्री (अरबी कवि), मैक्समूलर, डॉ० एल्फ्रेड रस्सेल वैलेस, श्री मोरिस फिलिप, प्रोफेसर हीरन, श्रीमती व्हीलर विलैक्स आदि पाश्चात्य महापुरुषों ओर विद्वानों ने वेदों के प्रति अगाध श्रद्धा का भाव व्यक्त किया है जोर उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है।[1]

जहां तक वेदों में प्रतिपादित विषयों का सम्बन्ध है, भारतीय विद्वानों का कहना है कि इनमें ज्ञान, कर्म और उपासना; यज्ञ, योग और साधना; धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष; ग्रहण और त्याग; प्रेय और श्रेय; भौतिक, दैविक और आध्यात्मिक; मानवीय जीवन और उसके उन्नायक सभी प्रकार के आचार-व्यवहार आदि संकेतपूर्वक अथवा विस्तारपूर्वक प्रतिपादित हैं। वैज्ञानिक अर्थ सांकेतिक रूप में हैं। वेदों के श्रद्धालु प्रशंसकों का तो कहना है कि कोई भी ऐसा मानवीय जीवन से सम्बद्ध भौतिक अथवा आध्यात्मिक विषय नहीं है जिसका वेदों में प्रतिपादन नहीं है, चाहे वह प्रतिपादन सांकेतिक रूप में ही हो। वेदों के विषयों पर विचार करते हुए स्वामी दयानन्द सरस्वती ने उन्हें चार भागों में विभक्त किया है—(१) विज्ञान, (२) धर्म, (3) उपासना और (४) ज्ञान। विज्ञान से अभिप्राय है समस्त विश्व का विज्ञान अर्थात् परब्रह्म परमेश्वर से लेकर कीट, पतंग और तृणादि तक सभी पदार्थों का ज्ञान। भारतीय दर्शनशास्त्र और आध्यात्मिक चिन्तन इसी से सम्बन्धित है। धर्म का अर्थ है शारीरिक तथा मानसिक, सकाम तथा निष्काम सभी प्रकार का धर्म। वेदों में इन सभी के सम्बन्ध में उपदेश दिया गया है और मानवीय जीवन के सभी पहलुओं पर, आचारव्यवहार पर और सभी प्रकार की आवश्यकताओं पर वे सूत्रात्मक, सांकेतिक अथवा विस्तृत भाव व्यक्त किये गये हैं जो जीवन को पूर्ण बनाने में सहायक हो सकते

१. देखिये लेखक की पुस्तक 'धर्मग्रन्थावलोकन' पृ० १४-२६

हैं। ब्रह्मचर्य, शिक्षा-प्राप्ति, गुरु-शिष्य सम्बन्ध, गृहस्थ धर्म, समाज व्यवस्था; राजनीति, शासन व्यवस्था, परोपकार, सहकारिता आदि सभी विषयों का प्रतिपादन वेदों में विद्यमान है। इनके अतिरिक्त इन सभी प्रकार के कार्यों में शारीरिक तथा मानसिक एवं ज्ञान तथा क्रिया के समन्वय की प्रवृत्ति पर ज़ोर दिया गया है। धर्म, अर्थ, काम ओर मोक्ष चारों की उपलब्धि के लिए वेद आदेश देता है। 'उपासना' का अर्थ है ईश्वर का सान्निध्य प्राप्त करना। वेदों से विश्व के रचयिता, रक्षक और संहर्ता ब्रह्म (परमात्मा) की उपासना पर बहुत बल दिया गया है। उसके सान्निध्य की उपलब्धि ही मोक्ष है। वेदों का चौथा विषय है 'ज्ञान' 'वेद' शब्द का अर्थ ही है—'ज्ञान'। वेद भौतिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार के ज्ञान क भण्डार हैं। ज्योतिष, गणित, वैद्यक, शरीर रचना विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, जीव विज्ञान आदि का मूल वेदों में ढूंढ़ा जा सकता है। आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री ने अपनी पुस्तक 'साइंसिज़ इन दि वेदाज़' में आधुनिक विज्ञान की सभी शाखाओं को वेदों में सिद्ध करने का प्रयास किया है। प्रसिद्ध अमरीकन विदुषी श्रीमती व्हीलर विलैक्स ने वेदों में विज्ञान को स्वीकार करते हुए लिखा है—: भारत वेदों की भूमि है जो न केवल जीवन को पूर्ण बनाने वाले उच्च धार्मिक विचारों से ही परिपूर्ण है, वरन् उन तथ्यों से भी युक्त है जिन्हें विज्ञान ने सत्य सिद्ध किया है। ऐसा प्रतीत होता है कि विद्युत् (Electricity), रेडियम, इलैक्ट्रोन, वायुयान आदि सभी से वैदिक ऋषि परिचित थे।" श्री अरविन्द घोष का कहना है कि "दयानन्द के इस विचार में कुछ भी विचित्रता नहीं है कि वेद में वैज्ञानिक सत्य और धार्मिक सत्य दोनों विद्यमान है।" मेरी तो यह भी धारणा है कि" वेद में अन्य वैज्ञानिक सत्य भी हैं जिनका अभी तक आधुनिक विज्ञान को भी ज्ञान नहीं।" श्री जैकोलियट का कहना है कि "वेद ही एक ऐसी पुस्तक है जिसकें विचार आधुनिक विज्ञान के अनुकूल हैं।"

वस्तुतः आधुनिक विज्ञान के मूल तत्त्व वेदों में उपलब्ध हैं। आधुनिक विज्ञान का मूल आधार विद्युत् शक्ति हैं। वैदिक विज्ञान का मूल आधार प्राण शक्ति है जो कि विद्युत् शक्ति की अपेक्षा अधिक व्यापक है। विद्युत् शक्ति भी प्राण शक्ति का ही भेद है, परन्तु इस प्रकार के अनेक भेद प्राणशक्ति में समाविष्ट हैं। वह प्राणशक्ति विश्व में यज्ञ के रूप में प्रवृत्त है। देवता, ऋषि, पितर, गन्धर्व, असुर आदि जिनका मन्त्रों और ब्राह्मणों में स्थान-स्थान पर संकेत मिलता है, विश्व-यज्ञ के परिचालक हैं। 'यज्ञ' शब्द 'यज्' धातु से व्युत्पन्न

होता है जिसका अर्थ पाणिनि ने देवपूजा, संगतिकरण और दान लिखा है। इन अर्थों के अनुसार प्राणरूप देवताओं की पूजा अर्थात् उनका प्रसादन करना यज्ञ है। संगतिकरण अर्थात् दो तत्वों को मिलाकर एक नया तत्त्व बनाना भी यज्ञ है और सम्पूर्ण विश्व में समस्त पदार्थों में जो आदान-प्रदान अर्थात् लेन-देन की प्रक्रिया चल रही है वह भी यज्ञ है। इस विश्व-यज्ञ के प्रमुख परिचालक देवता हैं—अग्नि और सोम। "अग्नीषोमात्मकं जगत्" कह कर ब्राह्मण में इसी तथ्य की ओर संकेत किया गया है। इनमें से अग्नि' को अत्ता अथवा अन्नाद (अन्न खाने वाला) कहा गया है और 'सोम' को अन्न बताया गया है। अग्नि नित्य सोम को खाता रहता है और अपने रूप में परिणत करता रहता है। इसी को अग्नि पर सोम की निरन्तर आहुति पड़ना कहा गया है। उदाहरण रूप में सूर्य एक महाविशाल अग्निपिण्ड है जो निरन्तर प्रज्वलित रहता है। उसमें से अनन्त तेज अथवा अग्नि समस्त सौर जगत् में फैलती रहती है, परन्तु इतनी अग्नि को निरन्तर प्रसृत करने पर भी सूर्य क्षीण नहीं होता, क्योंकि "सोमेनादित्या बलिन:" के अनुसार उस पर अनन्त सोम की आहुति पड़ती रहती है और यह सोम निरन्तर अग्निरूप में परिणत होता रहता है। यही अग्नि-प्रक्रिया समस्त पदार्थों में बराबर चल रही है। इसी प्रकार पृथ्वी, जल आदि की विभिन्न अवस्थाओं का प्रतिपादन वेदमन्त्रों में देखा जा सकता है। वर्तमान विज्ञान जल में हाइड्रोजन और ऑक्सीजन का योग मानता है। वैदिक विज्ञान में उसे अग्नि और सोम का योग बताया गया है। यह भेद केवल भाषागत भेद है, तात्विक रूप से दोनों बातें एक ही तत्त्व को सिद्ध करती हैं। आधुनिक विज्ञान में यह स्वीकार किया गया है कि अब तक जो सौ से भी अधिक तत्त्व आविष्कृत हुए थे वे मौलिक नहीं हैं। मौलिक तत्त्व केवल दो है—इलैक्ट्रोन और प्रोटोन। इन्हीं दो के विलक्षण संयोग से भिन्न-भिन्न तत्त्व बनते हैं। यह भी प्रायः सिद्ध हो चुका है कि ये दोनों तत्त्व भी मूलतः एक ही तत्त्व के विकास हैं। इस दृष्टि से आधुनिक विज्ञान उस एकतत्त्ववाद पर आ पहुंचा है जिसका समर्थन वेद ओर भारतीय दर्शन करते हैं। परन्तु वेद और भारतीय दर्शन जिस एक तत्व का निरूपण करते हैं, आधुनिक विज्ञान अभी वहां तक नहीं पहुंच पाया। इलैक्ट्रोन और प्रोटोन की निर्धारित की गई परिभाषाओं के अनुसार एक अणु में स्थित है और दूसरा उसके चारों ओर निरन्तर

घूमता है। शतपथ ब्राह्मण में वेदों से सृष्टि की उत्पत्ति का वर्णन कहते हुए स्पष्ट रूप में बताया गया है कि 'यजुः' 'यत्' और 'जुजुः' दो शब्दों के योग से बना है। 'यत्' का अर्थ है निरन्तर 'चलनशील' और 'जुजुः' का अर्थ है स्थिर। इन दो तत्त्वों से ही सृष्टि की रचना हुई है। वहीं इन दोनों तत्त्वों का नाम वायु और आकाश भी दिया गया है। ईथर का उल्लेख भी इसी सम्बन्ध में किया जा सकता है। सभी वैज्ञानिक अभी इस पर एकमत नहीं हैं, परन्तु वेद में इन्द्र के जो चौदह नाम बताये गये हैं उनमें से एक ईथर भी है। विद्युत् शक्ति भी इन्द्र का ही रूप है। इस संक्षिप्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि आधुनिक विज्ञान का मूल स्रोत वेदों में खोजा जा सकता है और कुछ विद्वान् इस पर कार्य कर भी रहे हैं।

वेद मन्त्रों के सामान्यतः तीन-तीन अर्थ किये जा सकते हैं—(१) आधिभौतिक, (२) आधिदैविक और (३) आध्यात्मिक। परन्तु विद्वानों की की धारणा है कि तीन प्रकार के अर्थ तीन प्रकार की अर्थ-श्रेणियाँ हैं जिनके अन्तर्गत शब्दों के यौगिक अर्थ करते हुए राजनीतिपरक, समाजपरक, विज्ञान-परक आदि अर्थ भी किये जा सकते हैं और किये गये हैं। आचार्य यास्क ने निरुक्त में वैदिक शब्दों के यौगिक अर्थ पर बल दिया है और अग्नि, इन्द्र, गौ, जातवेदाः, वैश्वानर आदि शब्दों का अनेक दृष्टियों से निर्वचन किया है और विभिन्न अर्थ बताये हैं। आचार्य सायण ने यज्ञपरक आधिभौतिक और आधि-दैविक अर्थ किये हैं। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आध्यात्मिक और आधिदैविक अर्थोंपर जोर दिया है। पं० जयदेव शर्मा ने अनेक सूक्तों के राजनैतिक और राज्यव्यवस्थापरक अर्थ किये हैं। पं० श्रीपाद दामोदर सातवलेकर ने शब्दों के यौगिक अर्थों पर बल दिया है और उनका सरलार्थ दिया है। यूरोपीय विद्वानों ने अधिकतर आचार्य सायण का अनुकरण किया है। कुछ एक सूक्तों के विज्ञानपरक अर्थ भी किये गये हैं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि वेदमन्त्रों के विभिन्न दृष्टियों से अर्थ किये जा सकते हैं।

उपर्युक्त अर्थों अथवा अर्थश्रेणियों में से चाहे किसी भी दृष्टि से वेदमन्त्रों का अर्थ किया जाये, आचार्य यास्क के एवं अन्य नैरुक्तों के इस सिद्धान्त को अवश्य ध्यान में रखना चाहिए कि वेदों में प्रयुक्त सभी संज्ञा आर विशेषण यौगिक शब्द है। इस लिए वेद-मन्त्रों में जो शब्द व्यक्तिवाचक संज्ञाओं के रूप में प्रयुक्त किये गये हैं, वे ऐतिहासिक संज्ञाएं नहीं हैं, बल्कि सामान्य यौगिक शब्द

हैं जो उनके मूलभूत धातुओं के अर्थ के अनुसार विभिन्न अर्थ रखते हैं। इसी लिए वेदों के भारतीय विद्वानों का कहना है कि वेदों में इतिहास नहीं है। आचार्य यास्क ने निरुक्त में देवापि, शन्तनु, विश्वामित्र, वशिष्ठ आदि ऐतिहासिक प्रतीत होने वाली व्यक्तिवाचक संज्ञाओं के ओर गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप् आदि छन्दों के भी विभिन्न निर्वचन किये हैं और यौगिक अर्थ बताये हैं। ऐसे शब्दों के आधिभौतिक, आधिदैविक अथवा आध्यात्मिक अर्थ किये जा सकते हैं। निरुक्त तथा ब्राह्मणग्रन्थों में ऐसे अर्थ देखे जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त वेदों के व्याख्याताओं एवं पाठकों को यह बात भी ध्यान में रखनी चाहिए कि वैदिक भाषा तथा संस्कृत भाषा में प्रयुक्त शब्दों के अर्थ में बड़ा अन्तर है। निम्नलिखित कुछ शब्द इस तथ्य को भली भांति पुष्ट कर सकते हैं :—

शब्द	संस्कृत में अर्थ	वेद में अर्थ
१. न	नहीं	नहीं, समान
२. गिरि	पर्वत	पर्वत, मेघ
३. समुद्र	सागर	सागर, पर्वत, आकाश
४. गौ	गाय, पृथ्वी, इन्द्रिय, किरण	गाय, गाय का चमड़ा, गौ का दूध, पृथ्वी, इन्द्रिय, सूर्य की किरण, धनुष की मौर्वी, सूर्य, वाणी आदि।
५. अग्नि	आग	आग, ईश्वर, शक्ति
६. व्रत	व्रत, उपवास	उपवास, कर्म, अन्न
७. नभ	आकाश	सूर्य, आकाश
८. स्वः	स्वर्ग	सूर्य, आकाश, स्वर्ग
९. नाक	स्वर्ग	सूर्य, आकाश, स्वर्ग
१०. अहि	सांप	सांप, मेघ
११. उपल	पर्वत, पत्थर	मेघ, पर्वत
१२. पर्वत	पर्वत	मेघ, पर्वत

शतपथ ब्राह्मण में यजुर्वेद के तेरहवें अध्याय के ५४, ५५, ५६, ५७ और ५८ मन्त्रों की व्याख्या करते हुए विश्वामित्र, जमदग्नि, भरद्वाज, अत्रि, अंगिरा, विश्वकर्मा आदि व्यक्तिवाचक संज्ञाएं प्रतीत होने वाले शब्दों के व्युत्पत्ति-जनित अर्थ दिये गये हैं और कहा गया है, वसिष्ठ का अर्थ है 'प्राण' ; भरद्वाज का 'मन' ; विश्वामित्र का 'कान' ; जमदग्नि का 'आंखें' ; अंगिरा का 'प्राण' ; विश्वकर्मा का 'त्राणी' आदि। आचार्य यास्क ने 'कण्व' शब्द का निर्वचन करते हुए कहा है कि 'कण्व' अत्यन्त मेधावी व्यक्ति को कहा जाता है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका' में 'गंगा', 'यमुना' ओर 'सरस्वती' शब्दों का क्रमशः अर्थ किया है—'इडा', पिंगला' और 'सुषुम्ना'। ये वे नाड़ियां हैं जिनका योगसमाधि में साक्षात्कार किया जाता जाता है एवं जिनका योग सम्बन्धी ग्रन्थों में उल्लेख है।

वेदमन्त्रों का अर्थ करते हुए और वेद के विषयों की विवेचना करते हुए, इस बात को भी ध्यान में रखना चाहिए कि वेद ईश्वरीय ज्ञान होने के नाते ऋषियों द्वारा साक्षात्कृत उदात्त धर्म होने के नाते और मानव जन्म के साथ ही आविर्भूत होने के नाते, मानव मात्र के लिए है। अन्य धर्मों, मतों और सम्प्रदायों की धार्मिक पुस्तकों के समान किसी मत विशेष अथवा सम्प्रदाय विशेष के लिए नहीं है। अतः उसकी शिक्षाएं मानव मात्र के लिए हैं, किसी मत अथवा सम्प्रदाय विशेष के लिए नहीं। सम्भवतः इस लिए भी ऋषियों ने वेदमन्त्रों के सामान्य रूप से ही आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक तीन-तीन अर्थ करने का निर्देश किया था। कई मन्त्रों के तो आठ-आठ दस-दस तक अर्थ किये गये हैं। यदि हम प्रत्येक मन्त्र के आधि-भौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक अर्थ नहीं कर पाते अथवा नहीं कर पाये तो वह हमारी अल्पज्ञता का दोष है, वेदमन्त्रों का दोष नहीं है। हमें स्वाध्याय द्वारा अपने वेद-विषयक ज्ञान को बढ़ाना चाहिए। तैत्तिरीयोपनिषद् में इसीलिए ऋषि ने शिक्षा-प्राप्त कर घर लोटने वाले शिष्यों को दिये गये उपदेश में स्वाध्याय पर सबसे अधिक बल दिया है। इसलिए वेदमन्त्रों की व्याख्या इस ढंग से नहीं की जानी चाहिए कि वे किसी मत अथवा सम्प्रदाय विशेष से सम्बद्ध सिद्ध हों। वेदों को हिन्दुओं अर्थात् भारतीय आर्यों के प्रमुख धर्मग्रन्थ कहा जाता है, और ऐसा कहकर उन्हें केवल हिन्दुओं से सम्बद्ध किया

जाता है, परन्तु इसका मुख्य कारण यह है कि भारतीय ब्राह्मणों ने सभी प्रकार का त्याग करके वेदों की सुरक्षा की है और यह ब्राह्मणों की ही देन है कि आज हमें वेद उसी रूप में उपलब्ध है जिस रूप में उनका आविर्भाव हुआ था। वेद ही विश्वसाहित्य के वे धर्म ग्रन्थ हैं जिनमें किसी प्रकार का प्रक्षेप नहीं हो सका है। इसी कारण से ब्राह्मणों को यह गौरव प्रदान किया गया है और उनका नाम वेदों और वैदिक धर्म के साथ जोड़ा गया है। बौद्ध, जैन आदि मत इसी दृष्टि से वेदों को ब्राह्मणों के धर्मग्रन्थ बताते हैं। परन्तु वस्तुत: ब्राह्मणों के अथवा हिन्दुओं के ही धर्मग्रन्थ होने पर भी वेद मानव मात्र के धर्म-ग्रन्थ है और उनमें मानव के जीवन को मंगलमय बनाने के लिए आदर्श सिद्धान्त और उपदेश निहित है।

वेद के सूक्तों तथा मन्त्रों के विभिन्न संकलन तैयार किये गये हैं जिनमें संकलयिताओं ने विभिन्न दृष्टिकोणों को सामने रखा है, परन्तु एक ऐसे संकलन की आवश्यकता निरन्तर बनी रही है जिसमें ऐसे मन्त्रों को संग्रहीत किया जाये जो मानवीय जीवन से सीधा सम्बन्ध रखते हों और जीवनयापन के लिए मार्गदर्शन करते हों। प्रस्तुत लेखक का यह संकलन इसी दिशा में उठाया गया कदम है। इसमें लगभग अढ़ाई सौ मन्त्र हैं जो ऋग्वेद, यजुर्वेद और अर्थ-वेद से संग्रहीत किये गये हैं। उनका हिन्दी और इंग्लिश में अनुवाद दिया गया है। व्याख्या करने का प्रयास नहीं किया गया। ऐसा इस लिए किया गया है जिससे पाठकों के समाने मूल मन्त्र और उनका अर्थ प्रस्तुत हो ताकि वे स्वयं उनके आधार पर चिन्तन कर सकें और लेखक की व्याख्या के अनुसार सोचने-विचारने पर विवश न हों। फिर भी इस बात को ध्यान में रखा गया है कि संग्रहीत मन्त्र मानवीय जीवन के सारे पहलुओं पर प्रकाश डालें। इसी दृष्टि से ईश-स्तुति, जगत् की उत्पत्ति, समाज-निर्माण, सामाजिक वर्गीकरण जीवन के स्तर (आश्रम), ब्रह्मचर्य और छात्रावस्था, मानसिक पवित्रता, विवाहित जीवन ओर गृहस्थ, पति-पत्नी के कर्त्तव्य, विविध व्यवसाय, पारिवारिक और सामाजिक शान्ति और सामञ्जस्य, शासकों के कर्त्तव्य, मातृभूमि का अभिनन्दन, वैदिक रहस्यवाद, मृत्यु आदि विषयों से सम्बन्धित मन्त्रों का संकलन किया गया है।

भारतीय विचारकों द्वारा मानवीय जीवन के लक्ष्यों पर विचार करते हुए

उनका दो प्रकार से वर्गीकरण किया गया गया है—लक्ष्यचतुष्टय की दृष्टि से और साधन-त्रितय की दृष्टि से। लक्ष्यचतुष्टय की दृष्टि से मानव-जीवन के चार लक्ष्य हैं—(१) धर्म, (२) अर्थ (३) काम और (४) मोक्ष। साधन-त्रितय की दृष्टि से मानवीय जीवन को मंगलमय बनाने के तीन साधन हैं—(१) ज्ञान (२) कर्म और (३) उपासना। इनमें से पहले वर्गीकरण के अनुसार मानव-जीवन का प्रथम लक्ष्य धर्म की प्राप्ति अर्थात् धर्मानुकूल धन का कमाना है और तीसरा लक्ष्य धर्मानुकूल काम अर्थात् धर्मानुकूल वैवाहिक कामोपभोग है। इन तीनों की प्राप्ति को धर्मशास्त्रों में त्रिवर्ग-फल-प्राप्ति कहते हैं जिसे किसी भी जाति और किसी भी वर्ण का व्यक्ति वेदानुकूल धार्मिक जीवन व्यतीत करते हुए प्राप्त कर सकता है। मोक्ष प्राप्ति का विधान सबके लिए नहीं है। उसे उसके अधिकारी ही प्राप्त कर सकते हैं! परन्तु उसके लिए भी वेद मुख्य सहायक है। साधनत्रितय की दृष्टि से मानवीय जीवन की सफलता एवं पूर्णता के लिए सर्वप्रथम ज्ञान अपेक्षित है। उसके पश्चात् तदनुकूल धार्मिक कर्मों का अनुष्ठान होना चाहिए और अन्तिम साधन है उपासना, अथवा भगवद्भक्ति। 'उपासना' शब्द का व्युत्पत्ति जनित अर्थ है 'निकट बैठना' अर्थात् ईश्वर की निकटता प्राप्त करना। इसके लिए ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना, भक्ति आदि अनिवार्य है। लक्ष्यचतुष्टय की प्राप्ति अथवा साधनत्रितय की प्राप्ति ही मानव जीवन को सफल एवं पूर्ण बना सकती है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि वेद मानवीय जीवन के अभ्युत्थान के के समर्थक हैं और उसकी पूर्णता के लिए पथप्रदर्शन के साथ-साथ पथ-निर्माण भी करते हैं।

प्रस्तुत संकलन में मन्त्रों का क्रम इस ढंग से रखा गया है कि वह लक्ष्य-चतुष्टय एवं साधनत्रितय दोनों दृष्टियों से ठीक रहे तथा उसमें यथासम्भव मानवीय जीवन के सभी पहलू आ जाएं। विषयानुक्रमणिका से ही इस तथ्य का संकेत मिल सकता है।

इससे पूर्व कि मैं इस वैदिक संकलन का उपसंहार करूं, मैं रायसाहब

चौधरी प्रतापसिंह जी के प्रति आभार व्यक्त करना अपना कर्त्तव्य समझता हूं, क्योंकि उन्हीं की प्रेरणा से मैं यह संग्रह तैयार कर सका हूं। मैं उन पूर्व-संकलयिताओं का भी, जिनमें सर्वश्री ए० सी० बोस, ब्रह्ममुनि, पी० पीटर्सन, ए० ए० मैक्डानल आदि सम्मिलित हैं, हृदय से आभारी हूं जिनके वैदिक सूक्तसंग्रहों और वेद-मन्त्र-संग्रहों से मैंने सहायता प्राप्त की है।

विनीत—
रत्नचन्द्र शर्मा

INTRODUCTION

The Vedas are not only the most esteemed, authentic and sacred books of the Hindus but are also the first and foremost books of the world-literature. They are the repositories of knowledge. The Hindus regard them as the books of divine knowledge as well as the root of Vedic-Sanātana religion. They are the main source of all the succeeding literature, Vedic as well as classical. Manu says : "वेदोऽखिलो धर्ममूलम्" *i.e.* Veda is the main source of all Law. By saying so Manu has referred to this fact. At an other place Manu has pointed out that the Vedas are the bases of all the four varnas (castes or classes) ; three lokas (worlds) ; four ashrams (periods of life ; present, future and past :

"चातुर्वर्ण्यं त्रयो लोकाश्चत्वारश्चाश्रमाः पृथक् ।
भुतं भव्यं भविष्यच्च सर्वं वेदात्प्रसिध्यति ।"

(Four castes, three worlds and four period of life, the past, the present and the future—all are accomplished by Veda.

Sānkhya, Yoga Vedānt, Vaisheshik and Pūrvamīmānsā propound that the Vedas are self-evident and eternal. Swami Dayanand Saraswati, in the third of his ten principles of Arya Samaj, says, "Vedas are the scriptures of all ture knowledge. It is the first duty of all Aryas to study them, teach them, recite them and hear them being read." Dr. Sarvapalli Rrdhakrishanan has called the Vedas 'eternal' and 'valid in themselves'. Lord Krishna has also upheld 'eternity' and 'validity' of the Vedas in themselves and has said in the Gita : "ब्राह्मणास्तेन वेदाश्च यज्ञाश्च विहिताः पुरा" *i e.* "In the beginning of the world He created Brahmans, Vedas and sacrifices."

The Brahmanas, the Aranyakas, the Upanishads, the

Smritis, the Darshans, the Ramayan, the Mahabharat, the Purāns etc. all the religious books lay emphasis on the importance of the Vedas and acknowledge them as to be the books ascertaining divine knowledge. Many Mantras (verses) of the Vedas themselves describe Vedic Samhitas as having been manifested by Para-Brahman and as such not created by any human being. They sing the dignity and elation of the Vedas. Indian dignitaries, scholars and poets like Buddha, Shankarāchārya, Tulsidās, Sūrdās, Kabir, Nanak, Dayanand Saraswati, Dr. Raddhakrishnan, Arvind Ghosh etc. and foreign dignitaries and scholars like Zarathustra (Zoroaster; Founder of Zoroastrinism), Lavi (Arabian poet), Max Muller, Dr. Alfred Russel Wallace, Rev. Morris Philip, Prof. Heeren, Mrs. Wheeler Willax etc. have expressed their reverence for the Vedas and have praised them again and again.

As for as the subject matter of the Vedas is concerned, Indian scholars hold that the Vedas teach in short or in detail jnan (knowledge), karma (action) and upāsanā (worship); yajna (sacrifice), yoga (union with Supreme Soul by means of contemplation) and Sāddhanā (devotion); dharma (righteousness), artha (wealth), kāma (desires) and moksha (salvation); grahan (reception) and tyāga (renunciation); preyas (agreeable) and shreyas (auspiciousness); bhautik (material), daivik (relating to gods, divine) and ādhyatmik (spiritual); human life and of its progress and evolution etc. Staunch devotees of the Vedas go to the extent of saying that there is nothing pertaining to human life, material or spiritual, which has not been referred to in the Vedas. Discussing the subject matter of the Vedas Swami Dayanand Saraswatī remarks that they treat of four classes of subjects, *viz.* (*i*) Vijnāna (philosophy or metaphysics), (*ii*) Karma (action in general), (*iii*) Upasanā (communion with God) and (*iv*) Jnāna (knowledge in general). Vcijnān or metaphysics means realization of all things from the Almighty God to the ordinary blade of grass and tiny insects. Indian philosophy and metaphysical studies deal with

this subject. Karma means all sorts of action (activities), physical or mental, with or without a desire of any reward. The Vedas teach all these and explain in short or in detail all aspects and needs of human conduct which may be helpful in making the human life cultured and sublime. Celibacy, education, relation between the teacher and the taught, married life, social order, politics, administration and discipline, governance, charity and benevolence, co-operation etc. all have been explained in the Vedas. Besides, stress has been laid on unity between physical and mental actions as well as knowledge and action. The Veda instructs for the attainment of all the four objects of life *viz*. righteousness, wealth, fulfilment of desires and salvation. Upasana means communion with the Almighty God, The Vedas have laid stress on the worship of God, the creator, preserver and destroyer of the universe. The attainment of His nearnes is salvation.. The fourth subject matter of the Vedas is knowledge. The word 'Veda' means knowledge'. The Vedas are the store-houses of knowledge of two sorts *viz*. material and spiritual. The origin of Astronomy, Mathematics, Medical Science (Ayurveda), Physics, Botany, Zoology etc. may be found in the Vedas. Āchārya, Vaidya Nath Shastri in his book 'Sciences in the Vedas, has tried to find all the branches of modern science in the Vedas. Mrs. Wheeler Willax (an eminent American lady), admitting the existence of science in the Vedas, remarks : "We have all heard and read about the ancient religion of India. It is the land of the great Vedas, the most remarkable works containing not only religious ideas for a perfect life, but also facts which all the science has since proved true. Electricity, Radium, Electrons, Airship all seem to be known to the seers who found the Vedas." Shri Arvind says : "There is nothing fantastic in Dayanand's idea that Veda contains truth of science as well as truth of religions. I will even add my own conviction that Veda contains the other truths of science the modern world does not all possess". Mr. Jaccolliot says :

"The Hindu Revelation (Veda) is of all revelations the only one whose ideas are in perfect harmony with Modern Science, as it proclaims the slow and gradual formation of the world."

In fact, the seeds of modern science exist in the Vedas. The basis of modern science is 'Electricity' but the basis of Vedic science is 'Life-force' which is more pervasive than electricity, because electricicy is itself a part of 'Life-force' which has many other similar parts. Life-force pervades this universe in the form of Yajna *ie.,* sacrifice.[1] Deities, seers, manes, gandharvas, asuras etc. that thave been referred to in the mantras and Brahmans are the organisers of Vishva-Yajana *ie.,* the world sacrifice. The world 'Yajna' is derived from the 'Yaj' which according to Panini, means 'to worship,' 'to interconnect' 'to intercommune' and 'to give' or 'to offer'. According to these meanings of the 'Yaj' worship of the deities in the form of breath of life or accomplishment and perfection of vital airs of life may be regarded as Yajna. Similarly the creation of a new element by means of interconnection or intercommunion of two elements is also a 'Yajna'. Thus intercommunion of various elements in the universe forms *i.e.,* universal sacrifice are Agni and Soma. "This univers is made by Agni and Soma" says Brahman. By saying so it has referred to the same fact. Of the two Agni is said to be devourer of food while Soma is food. Agni is always eating Soma and is transforming it into its own form. Metaphoricallly it is said that oblation of Soma is incessantly being offered to Agni. For instance, the sun is a grand fire (Agni) which is burning unintermittenly and is diffusing infinite energy and light throughout the universe. But inspite of diffusing so much

1. In English the world 'sacrifice' is used as synonym of the world 'Yajna' but it does not express the correct sense of 'Yajna'.

energy and light the sun is never enfeebled and diminished because the oblations of Soma are incessantly streaming into it and are being transformed into fire. Verifying this the Brahmana says "The sun is empowered by Soma." This very process of fire *i.e.* Agni, is working in all the objects of Nature. Similar explanations as regard the formation of earth, water etc. in their different forms may be traced in the Vedas. According to modern science, water is produced by the combination of Hydrogen and Oxygen. Vedic science regards it the combination of Agni and Soma. Essentially both these indicate the same process of the same elements. The difference lies only in language. Modern science admits that more than hundred elements that have been invented so far, are not rudimentary. Rudimentary elements are only two, *viz* Electron and Proton. All other elements develop from the queer combination of these two rudimentary elements. It has also been proved that both these elements are originally two developed forms of a single element. Thus modern science has arrived at the doctrine of Monotheism which the Vedas and Indian philosophy have all along been emphasising. But Monotheism, as propounded and explained by the Vedas and Indian philosophy, is still to be attained by modern science. According to the definitions of Electron and Proton the former rotates while the latter remains comparitively motionless Shatpath Brahmana has derived the word 'Yajuh' from 'Yat' and 'jūh' which indicate the meaning 'moving incessantly' and 'motionless' respectively. The world, according to Shatpatha, has been developed from these two elements, *viz.* 'Yat' and jūh'. In the same book these two elements have been referred to as 'Vāyu' and Akāsh'. Ether may also be referred to here. The scientists are not of one and the same opinion about it. But the Vedas refer to fourteen Indras and one of them may be Ether. Electricity is also a form of Indra. This brief discussion leads us to the conclusion that the origin of modern

science may be traced in the Vedas and some scholars are already working on this topic.

Ordinarily Veda- mantras have three meanings—(*i*) ādhibhautika *i.e.* materialistic, (*ii*) ādhidaivika *i.e.* relating to deities and (*iii*) ādhyātmika *i.e.* relating to Supreme Spirit But the scholars are of the view that these three meanings are in fact three types or classes of meanings which, in accordance with the etymological meanings of the words derived from their roots, may suggest even such meanings as are concerned with statecraft, social order, science etc. Accepting Yaugic method of interpreting Vedic words etymologists have given such interpretations. Yāska in his Nirukta has emphasised the Yaugic method of interpreting Vedic words, has proclaimed that all the Vedic words are derived from verbal roots and has suggested different derivative meanings of Agni, Indra, Gau, Jātaveda, Vaishvānara etc. Āchārya Sāyana, in his commentary on the Vedas, has interpreted Vedic words in accordance with the requirements of Yajna .and therefore, has given ādhibhautika and ādhidaivika meanings. Swami Dayanand Saraswati has emphasised ādhidaivika and ādhyātmika meanings. Pt. Jayadev Sharma has suggested political and administrative interpretations of many hymns. Pt. Shripād Dāmodar Sātavalekar has given simple word-meanings of the Vedic hymns, based on the derivation of words from their verbal roots. Foreign scholars have generally followed Ācharya Sāyana. Scientific interpretations of some hymns have also been presented by some scholars. So we may say that the mantras of the Vedas may be interpreted in different ways.

Of all the three categories of the meanings of the Vedas whichever is adopted for the interpretation and translation one must keep in view the established standpoint of the etymologists like Yāska that all the Vedic words are derived from verbal roots. Thus the words which appear to be proper nouns are not historical names, but are Yaugic words with different meanings

based on their derivation from verbal roots. It is why Indian scholars of the Vedas hold that there is no history in the Vedas. Acharya Yāska explained Yaugika meanings and etymological interpretations of proper nouns Devāpi, Shantanu, Vishvāmitra Vasishtha etc., apparently historical personages, and metres like Gāyatri,, Ushnic, Anushtup etc. Ādhibhautika, ādhidaivika and ādhyātmika interpretations of such words may be given and are available in the Nirukta and Brahmanas. Besides, the interpreters and readers of the Vedas must understand that there is great difference between the meanings of Vedic words and words of classical Sanskrit. The following few words will be sufficient to illustrate this point :

	Word	*Meaning in classical Sanskrit*	*Meaning in the Veda*
1.	na	no	no, like
2.	giri	mountain	mountain, cloud
3.	Samudra	ocean	ocean, cloud, sky.
4.	gau	cow, earth, organ of sense of perception, ray	cow, cow-skin, milk of cow. earth, organ of sense or preception, ray of sun bow-string, sun, speech etc.
5.	agni	fire	fire, God, energy
6.	vrata	austerity, fasting	austerity, fasting, action, food.
7.	nabha	sky	sun, sky
8.	svha	heaven	sun, sky, heaven
9.	nāka	heaven	sun, sky, heaven
10.	ahi	snake	snake, cloud
11.	upala	mountain	cloud, mountain
12.	parvata	mountain	cloud, mountain

Shatpatha Brahmana commenting on the mantras 54, 55 56, 57, and 58 of the thirteenth chapter of Yajurveda gives etymological interpretations of Vishwāmitra, Jamadagni, Bharadwāja, Atri, Angirā, Vishvakarmā etc., apparently all proper

nouns, and says: "Vasishtha means Prāna (breath); Bharadwāja means mind; Vishvāmitra, ears; Jamadagni, eyes; Angirā, breath; Vishwakarmā, speech etc. Yāska, explaining the word 'Kanva' says, "Kanva means one who is intellectually brilliant." (Nirukta 3/15). In his 'Introduction to the commentary on the Vedas' Swami Dayanand Saraswati has interpreted the words Gangā, Yamunā and Saraswati as Idā, Pingalā and Sushumnā respectively, the nerves that are perceptible during Yoga-Samadhi and may be seen in the books on Yoga.

While interpreting Veda-mantras and discussing Vedic topics one must keep in view that the Vedas being divine knowledge, being elevated truth perceived by the seers in their intuition and having been appeared along with the birth of man on earth are for all mankind. They are not meant for any particular religion, sect or faith and therefore, they are not like other sacred books of various sects and faiths. Their teachings, too, are for all mankind and not for any particular sect or faith. Perhaps for this reason the sages instructed three fold interpretation of Veda-mantras, *viz*.. ādhibhautika, ādhidaivika and ādhyātmika. And some Veda-mantras have been presented with seven, eight or even ten explanations. If we fail or have failed to provide ādhibhautika, ādhidaivika and ādhyātmika meanings of every Veda-mantra, it is the fault of our own meagre or defective knowledge and not of the Vedas. We should add to our knowledge (of the Vedas) by regular and continuous study of the Vedas. With this idea in view the sage in the Taittiriya Upanished instructed his disciples returning home after completing their studies, not to neglect the study and teaching of the Vedas. Veda-mantras, therefore, should not be interpreted as having their relation with some particular sect or faith. The Vedas are said to be the sacred books of the Hindus and thus they are associated with them, but the main reason for such a conception is that Indian Brahmanas have preserved the Vedas by making all sorts of

sacrifices and it is due to Brahmans that the Vedas are available to us in the same form in which they were manifested. The Vedas are the only books that are free from interpolation. For this Brahmans have been honoured and have been associated with the Vedas and Vedic religion. Bauddhas, Jains etc. regard Vedas as the holy books of Brahmans only. But, in fact, the Vedas, besides being the relgious books of Brahmans and Hindus, are the sacred books of all mankind and contain ideals, principles and teachings for the welfare of humanity.

Various anthologies of Vedic hymns and mantras have been prepared by scholars in accordance with their viewpoints, but an anthology containing such mantras as may have direct relation with buman life and as may provide guidance for making human life dignified and perfect, has always been needed. This compilation is a step in this direction. It contains about 250 mantras taken from Rigveda, Yajurveda and Atharvada. They have been translated into Hindi and English, but no attempt to comment on them has been made, so that, the readers should be free to interpret them on the basis of given translation and should not be forced to follow the writer's views. However, this has been kept in view that the selected mantras, should cover almost all aspects of human life. So the mantras regarding celestial song, creation of the world, formation of society, social gradation, stages of life, celibacy and student-life, purity of mind, married life, role of husband and wife, different occupations, domestic and social harmony, duties of the rulers, homage to motherland, Vedic mysticism, death etc., have been included.

Indian thinkers, while discussing the objects of human life, have classified them in two ways *viz.*, fourfold division and threefold division, According to fourfold division there are four principal objects of human life (*i*) righteousness (*ii*) wealth

(*iii*) love and fulfilment of desires and (*iv*) salvation. According to threefold division there are three means to make human life perfect. They are (*i*) knowledge, (*ii*) action and (*iii*) worship. Of the four objects of the life the first is to lead a life of righteousness; the second, to earn wealth by rightful methods; the third, to satisfy carnal appetite and enjoy sexual pleasures as provided by lawful married life. These three objects are also called Trivarga *i.e.*, threefold object of human life in Hindu scriptures and may be attained by any person belonging to any caste or creed, sect or faith by leading a rightful life as prescribed by the Vedas. Salvation is not meant for all. That may be attained only by those who get entitled for this but there, too, the Vedas are chief helpers. Of the three means of perfection of human life the first is knowledge which is essential to make one's life sublime. Knowledge is followed by religious activities and they by worship and devotion. The word 'upāsanā' means 'to sit near God' or 'to attain proximity of God' for which the prayer and invocation of the Almighty is essential. Attainment to fourfold or threefold object of human life can only make human life successful and sublime. Thus we may say that the Vedas stand for dignity and sublimity of human life and pave a path for its perfection.

In the present compilation Veda-mantras have been arranged in such a way as may fall in with the fourfold as well as threefold division of objects of human life. The list of contents may indicate this fact.

Before I conclude I must express may gratitude to Rai Sahib Chaudhry Pratap Singh ji whose insistent inspiration has enabled me to prepare this anthology. My sincere thanks are also due to my predeccessors including Shri A.C. Bose, Shri Brahma Muni, P. Petersen. A.A. MacDonell. etc, whose anthologies of Vedic hymns and Veda-mantras I have consulted.

—*R.C. Sharma*

१. वेद-प्रशंसा

(Glory of the Vedas)

बृहस्पते प्रथमं वाचो अग्रं यत्प्रैरत नामधेयं दधानाः ।
यदेषां श्रेष्ठं यदरिप्रमासीत्प्रेणा तदेषां निहितं गुहाविः ॥१॥
(ऋग्वेद १०।७१।१)

हे बृहस्पते ! पहले सृष्टि के आरम्भ में नाम धारण करते हुए अथवा नामरहित को भी नाम देते हुए ऋषियों ने जो वाणी सबसे पहले उच्चरित की वह ही उनको सर्वश्रेष्ठ और निर्दोष वाणी थी । उससे उनके हृदयरूपी गुहा में प्रेमपूर्वक रखा हुआ दिव्य तत्त्व अर्थात् वेद का ज्ञार आविर्भूत हुआ ।

When the sages attend, giving the unnamed a name,
Lord of our prayer, the first and foremost of speech,
Which was their best, and their most stainless, then they
With love revealed the Divine secret in their souls.

अन्ति सन्तं न जहात्यन्ति सन्तं न पश्यति ।
देवस्य पश्य काव्यं न ममार न जीर्यति ॥२॥
(अथर्ववेद १०।८।३२)

समीप होते हुए को वह छोड़ता नहीं है और समीप होते हुए को वह देखता नहीं है । भगवान् के काव्य को देख । न वह मरता है और न जीर्ण होता है ।

When one is near that leaves not one,
When one is near that sees not one.
Behold the poetry of God; it does not die,
It does not grow old.

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय।
प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृध्यतामुप मादो नमतु ॥३॥
(यजुः २६/२)

मैंने इस कल्याणी वाणी को सब जनों के लिए अर्थात् उनके हित के लिए उच्चारित किया है ? ब्राह्मणों और क्षत्रियों के लिए, शूद्रों और वैश्यों के लिए, पुत्रों और भृत्यों के लिए, उपदेश, दानादि के लिए मैं सबका प्रिय होऊँ, मेरी यह कामना समृद्ध हो। वह कामना और सुख आप को भी प्राप्त हो।

As I have revealed this Vedic lore for this benefit of all,
For Brahmanas & Kshatinyas, for Shurdas & Vaishyas, for sons & servants alike;
May you get your desire fulfilled & be happy,
As I am by imparting this lore & by charity.

२. पर ब्रह्म को नमस्कार

(Homage to Supreme Brahman)

यो भूतं च भव्यं च सर्वं यश्चाधितिष्ठति ।
स्वर्यस्य च केवलं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः ॥१॥

(अथर्ववेद २०।७।३१)

जो भूत और भविष्यत् का तथा इन कालों में होने वाले सबका अधिष्ठाता है, सुख ही जिसका केवल स्वरूप है, उस सबसे महान् परब्रह्म परमात्मा को हमारा नमस्कार है।

Homage to that Supreme Brahma,
The greatest and the most high,
Who rules the past and the future,
And all that exists in the present;
Who is the sovereign Lord of all,
Self-effulgent and absolute bliss.

यस्य भूमिः प्रमान्तरिक्षमुतोदरम् ।
दिवं यश्चक्रे मूर्धानं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः ॥२॥

(अथर्ववेद १०।७।३२)

यह समस्त भूमि जिसके चरणों के रूप में है, अन्तरिक्ष जिसके उदर के समान है और द्युलोक को जिसने अपना मस्तक बनाया है, उस सबसे महान् परब्रह्म परमात्मा को नमस्कार है।

Homage to that supreme Brahma,
The greatest and the most high,
Whose feet are the earth;
Whose abdomen is the space,
Intervening between the sun and the earth;
And who has made the uppermost region,
Illumined by solar rays, his head.

यस्य सूर्यश्चक्षुश्चन्द्रमाश्च पुनर्णवः ।
अग्निं यश्चक्र आस्यं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः ॥३॥

(अथर्ववेद १०।७।३३)

जिसकी आंखें सूर्य और चन्द्रमा हैं जिन्हें वह (सृष्टि के आरम्भ में) बार-बार रचता है और जिसने मुख के रूप में अग्नि को उत्पन्न किया उस सब से महान् परब्रह्म परमात्मा को हमारा नमस्कार है।

Homage to that Supreme Brahma,
The greatest & the most high,
Whose eyes are the sun & the moon,
Which are renewed again & again,
And who has formed fire
As His mouth.

यस्य वात: प्राणापानौ चक्षुरंगिरसोऽभवन् ।
दिशो यश्चक्रे प्रज्ञानीस्तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नम: ॥४॥
(अथर्ववेद १०।७।३४)

वायु जिसके प्राण ओर अपान है, अंगिरा जिसके नेत्र हैं, जिस ने ज्ञान और क्रियाओं के स्रोत दिशाओं को उत्पन्न किया है उस सब से महान् परब्रह्म परमात्मा को हमारा नमस्कार है ।

Homage to that Supreme Brahma,
The greatest & the most high,
Whose in-breathings & out-breathings
Are the atmospheric air,
Whose eyes are the illuminating Angira,
And who has formed the directions,
the seats of all knowledge & activities.

हिरण्यगर्भ: समवर्तताग्रे भूतस्य जात: पतिरेक आसीत् ।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥५॥
(ऋग्वेद १०।१२१।१)

हिरण्यगर्भ परमात्मा सृष्टि के आदि में विद्यमान थे । समस्त उत्पन्न हुए संसार के वह ही एक मात्र पति (स्वामी) हैं । इस पृथिवी और आकाश को उन्होंने ही धारण किया हुआ है । उस देव के लिए हम हवि द्वारा अपनी भक्ति-भावना को अर्पित करते हैं ।

Hiranyagarbha existed before creation,
Sole Lord of every born creature;
He sustains this earth & sky;
to their Lord we offer our oblation.

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्यच्छायामृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥६॥
(ऋग्वेद १०।१२१।२५)

जो परमेश्वर आत्मा (शरीर, प्राण, आत्मिक तेज आदि) का देने वाला है, जो बल (शारीरिक, मानसिक और आत्मिक) का देने वाला है, सारा विश्व जिसकी उपासना करता है, देवता भी जिसकी आज्ञा का पालन करते हैं, जिसकी छाया ही अमरता है और मृत्यु जिसके अधीन है, उस देव के लिए हम हवि द्वारा अपनी भक्ति भावना को अर्पित करते हैं।

We offer our oblation to that Lord
Who is the giver of breath & the giver of strength;
Whom all creatures adore, even the Gods wait on His command,
His shadow is immortality & death is His.

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव।
य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥७॥
(ऋग्वेद १०।१२१।३)

जो इस प्राणी जगत् एवं सुषुप्त जगत् (अथवा अप्राणी जगत्) का अपनी महिमा से ही एकमात्र राजा है, जो इस द्विपाद और चतुष्पाद जगत् का स्वामी है, उस देव के लिए हम हवि द्वारा अपनी भक्ति-भावना को अर्पित करते हैं।

We offer our oblation to that Lord,
Who with His sublime power is the only Lord,
of all this world—that breathes & sleeps.
And who rules over man & beast;
two-footed & four-footed.

यस्येमे हिमवन्तो महित्वा यस्य समुद्रं रसया सहाहुः।
यस्येमाः प्रदिशो यस्य बाहू कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥८॥
(ऋग्वेद १०।१२१।४)

ये ऊंचे-ऊंचे पर्वत और नदियों सहित सागर जिसके नियन्त्रण में हैं, जैसा कि विद्वान् कहते हैं। ये सब दिशाएँ जिसकी भुजाएं हैं, उस देव के लिए हम हवि द्वारा अपनी भक्ति-भावना को अर्पित करते हैं।

We offer our oblation to that Lord,
Under whose control are these high hills,
And the ocean with great rivers,
as they say,
And the regions of the sky are whose arms.

येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढ़ा येन स्वः स्तभितं येन नाकः ।
यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।९।।
(ऋग्वेद १०।१२१।५)

जिसने प्रकाशमान द्युलोक और पृथ्वी लोक को सुदृढ़तापूर्वक धारण किया हुआ है, जिसने स्वर्गलोक को स्थिर किया है और जिस ने अन्तरिक्ष में अनेक लोकों की रचना की है उस देव के लिए हम हवि द्वारा अपनी भक्ति-भावना को अर्पित करते हैं ।

We offer over oblation to that Lord
Who established firmly the great sky & the earth,
Who fixed fast firmament of heaven,
And created many worlds in the mid-sky.

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव ।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ।।१०।।
(ऋग्वेद १०।१२१।१०)

हे प्रजापते परमात्मन् ! तुम्हारे अतिरिक्त और किसी की शक्ति नहीं कि इन सारे (जड़-चेतन आदि) लोकों पर शासन करे । जिन कामनाओं को लेकर हम तुम्हारी वन्दना करते हैं, वे सब हमें प्राप्त हों, हम सब प्रकार के धन के स्वामी हों ।

Lord of all creatures, thou & none else,
Rulest over all this universe;
Give us, that call upon thee, the desires of our hearts,
May we be the owners of all good things (riches).

स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा ।
यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ॥११॥
(यजुर्वेद ३२।१०)

वह परब्रह्म परमात्मा हमारा बन्धु है, जनक है ; वह विधाता है ; वह सब भुवनों को और उसमें होने वाले जन्मों और योनियों को जानता है । उसी तीसरे धाम परमात्मा में मोक्ष को प्राप्त होकर देवगण स्वेच्छापूर्वक विचरण करते हैं ।

He is our kin, our father, our creator,
He knows all the world and all the objects containd therein,
In Him Devas, attaining life eternal,
Have attained the loftiest station, their divine life.

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम ॥ १२ ॥
(ऋग्वेद १।१८९।१ ; यजुर्वेद ४०।१६)

हे अग्निदेव ! (ज्ञानस्वरूप प्रकाशमय भगवान्) आप सब कर्मों को जानने वाले हो । आप हमें ऐश्वर्य और उन्नति के लिए सत्पथ की ओर प्रेरित करो । कुटिलतापूर्ण और शुभ मार्ग के प्रतिबन्धक पाप को हम से दूर कर दो । हम बार-बार आपको नमस्कार करते हैं ।

Agni Deva ! Thou knowest all the ways.
Lead us by the right path to rectitude.
Drive off our evil that leads astray;
We repeatedly praise and adore Thee.

इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि चित्तिं दक्षस्य सुभगत्वमस्मे ।
पोषं रयीणामरिष्टिं तनूनां स्वाद्मानं वाचः सुदिनत्वमह्नाम् ।। १३ ।
(ऋग्वेद २।२१।६)

हे इन्द्र ! हमें श्रेष्ठ धन दे, हमें बल अथवा दक्षता (कुशलता) का सौभाग्य दे । इसी प्रकार हमें धनों का पोषण और शरीर की नीरोगता, वाणी की मधुरता और दिनों की उत्तमता प्रदान कर ।

Bestow on us, Indra, the best of treasures,
The efficient mind and great brilliance,
The increase of wealth, the health of bodies
The sweetness of speech and the fairness of days.

*ओ३म् भूर्भुव स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयात् ।। १४ ।।
(ऋग्वेद, ३।६२।१० ; यजुर्वेद ३।३५, २२।९
३०।२, ३६।३ ; सामवेद)

उस सर्वशक्तिमान् सर्वव्यापक सविता देव के उस श्रेष्ठ और वरण करने योग्य तेज का हम ध्यान करते हैं जो हमारी बुद्धियों को उत्तम मार्ग में प्रेरित करे ।

We meditate upon the adorable glory of God,
The creator of the world and giver of peace and bliss;
May He inspire our intellects and prompt our actions.

---

* भूर्भुवः स्वः ये व्याहृतियां यजुर्वेद ३६।३ में हैं, अन्यत्र नहीं हैं ।

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव ।
यद्भद्रं तन्न आसुव ।। १५ ।।
(ऋग्वेद, ५।८२।५ ; यजुर्वेद ३०।३)

हे सविता देव ! हे जगत् के उत्पादक दिव्यगुणसम्पन्न परमेश्वर ! आप हमारे समस्त दुर्गुणों को दूर करें और जो शुभ गुण हैं वे हमें प्रदान करें ।

Keep away from us, O God Savita, all that is evil,
And bring us whatever be good.

देवस्य सवितुर्वयं वाजयन्त, पुरंध्या ।
भगस्य रातिमीमहे ।। १६ ।।
(ऋग्वेद, ३।६२।११)

धन की अभिलाषा करने वाले हम अपनी श्रेष्ठ बुद्धि से सविता देव से ऐश्वर्य का दान मांगते हैं ।

Desiring power we, with our
Intellect, pray to Deva Savita.
For the gift of His grace.

अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्
होतारं रत्नधातमम् ॥ १७ ॥
(ऋग्वेद ,१।१।१)

मैं सबके अग्रणी ज्ञानस्वरूप परब्रह्म परमात्मा की स्तुति करता हूं, जो सबके सामने स्थित, यज्ञों का प्रकाशक, ऋत्विक् (ऋतुओं का उत्पादक और सब ऋतुओं में पूजनीय), होता (यजमान अथवा पुरोहित अथवा सब सुखों को देने और लेने वाला) तथा रत्नों (रमणीय पदार्थों) का कारण करने वाला है।

I adore Agni, the foremost placed,
The Deity of our rites, the Priest,
The Invoker and the highest source of treasure.

अग्निना रयिमश्नवत् पोषमेव दिवे दिवे ।
यशसं वीरवत्तमम् ॥ १८ ॥
(ऋग्वेद, १।१।३)

अग्निमय परमात्मा से ही मनुष्य वह धन प्राप्त करता है जो दिन प्रतिदिन बढ़ता है, यश और कीर्ति को देता है, और श्रेष्ठ बल अथवा वीर सन्तान देने वाला है।

Through Agni man gets prosperity,
Increasing from day to day & consisting of
glory and sons having distinguished heroism.

उप त्वाग्ने दिवेदिवे दोषावस्तर्धिया वयम् ।
नमो भरन्त एमसि ॥ १९ ॥
(ऋग्वेद, १।१।७ ; यजुर्वेद ३।२२ ; सामवेद १४)

हे अग्निमय परमेश्वर ! हम प्रतिदिन, सायं और प्रातः, अपनी बुद्धि और कर्मों से आपको नमस्कार करते हुए आपको प्राप्त होते हैं।

To Thee, 'Agni (dispeller of darkness),
We approach with prayer day and night,
Offering our noble thoughts and noble deeds.

स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव ।
सचस्वा नः स्वस्तये ॥ २० ॥
(ऋग्वेद, १।१।९ ; यजुर्वेद ३।२४)

हे अग्निमय ज्ञानस्वरूप परमेश्वर ! आप हमारे लिए उसी प्रकार सुखदायक, हितकारक और कल्याणप्रद होओ जिस प्रकार पिता पुत्र के लिए होता है।

Like father to son Thou Agni be easy of access to us,
Be with us for a blissful life.

त्वमग्न इन्द्रो वृषभः सतामसि त्वं विष्णुरुरुगायो नमस्यः ।
त्वं ब्रह्मा रयिविद् ब्रह्मणस्पते त्वं विधर्तः सचसे पुरन्ध्या ।। २१ ।।
(ऋग्वेद, २।१।३)

हे अग्नि! (तेजोमय परमेश्वर) तू श्रेष्ठों का नेता इन्द्र है। तू ही बहुतों से स्तुत्य और नमस्कृत व्यापक विष्णु है। हे ब्रह्मणस्पते (वेदों के ज्ञाता अग्नि) ! तू ही धन का वेत्ता ब्रह्मा है। तू ही सबको धारण करने वाला और विविध प्रकार की बुद्धियों से युक्त मेधावी है। (हमें मेधा से युक्त कर।)

O Agni, Thou art Indra, the hero of heroes,
Thou art Vishnu of wide strike, adorable,
Thou art Brahmanaspati, the knower of the Vedas and
the wealth finder
Thou art the sustainer, Bless us with wisdom.

त्वमग्ने राजा वरुणो धृतव्रतस्त्वं मित्रो भवसि दस्म ईड्यः ।
त्वमर्यमा सत्पतिर्यस्य संभुजं त्वमंशो विदथे देव भाजयुः ।। २२ ।।
(ऋग्वेद, २।१।४)

हे अग्नि (प्रकाशमय परमात्मा) ! तू व्रत का धारण करने वाला राजा वरुण है। तू सुन्दर तथा स्तुति के योग्य मित्र है। तू सज्जनों का पालक अर्यमा है जिसका दान सर्वव्यापी है अथवा जो सबको प्रसन्न करता है। हे देव ! तू सूर्य है। तू ही यज्ञ में दिव्यगुणयुक्त अंश है। (हमें भी यज्ञ में अभीष्ट फल प्राप्त हो।)

O Agni, Thou art King Varuaṇa who upholds the Law,
Thou art Mitra, wonder-worker, fit to be adored,
Thou art Aryaman, Lord of the virtuous, delighting all,
Thou art personified divinity in the *assembly*.

त्वमग्ने द्रविणोदा अरंकृते त्वं देवः सविता रत्नधा असि ।
त्वं भगो नृपते वस्व ईशिषे त्वं पायुर्दमे यस्तेऽविधत् ।।२३।।

(ऋग्वेद, २।१।७)

हे अग्ने (ज्ञानमय और प्रकाशमय परमात्मा) ! तू अपनी सेवा करने वाले को धन देता है। तू रत्नों को धारण करनेवाला सविता है। हे नरपति! तू भगदेव के रूप में धनों का स्वामी है। जो अपने घर में तेरी सेवा करता है, उसकी तू ही रक्षा करता है और तू ही रक्षा कर।

O Agni, Thou glvest wealth to him who serves Thee,
Thou art God Savita, the bestower cf jewels,
Thou art Bhaga, Lord of men, and rulest over riches,
Thou att Protector of home of one who worships Thee.

त्वमग्ने अदितिर्देव दाशुषे त्वं होत्रा भारती वर्धसे गिरा ।
त्वमिडा शतहिमासि दक्षसे त्वं वृत्रहा वसुपते सरस्वती ।।२४।।

(ऋग्वेद, २।१।११)

हे अग्निदेव ! तू दान देने वाले के लिए अदिति है। तू होता और भारती है जो स्तुति द्वारा बढ़ता है तू सैकड़ों वर्षों की इडा है जो दान करने में समर्थ है। हे धन के स्वामिन् ! तू वृत्र को मारने वाला और सरस्वती है।

O Agni Deva, Thou art Aditi to the offerer of oblation,
Thou art the Invoker and Bhārati thriving by praise-songs;
Thou art Idā of a hundred winters to the deft performer of rites,
Thou, Lord of wealth, art Vritra-slayer and Saraswati.

त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं हवेहवे सुहवं शूरमिन्द्रम् ।
ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रं स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ॥२५॥

(ऋग्वेद, ६।४७।११)

त्राण (रक्षा) करनेवाले, परमैश्वर्यवान्, रक्षक, शूरवीर, उत्तम नाम वाले, उत्तम संग्रामकारी इन्द्र को मैं प्रत्येक संग्राम में अथवा प्रत्येक यज्ञ में पुकारता हूं। शक्तिशाली, बहुतों से आह्वान करने योग्य इन्द्र को मैं पुकारता हूं। वह उत्तम, धनवान् और सब प्रकार के ऐश्वर्य को देने वाला इन्द्र हमारा कल्याण करे।

I call again and again our Saviour and Protector Indra,
Easily called at each call, Hero Indra,
I call on the mighty, much-invoked Indra,
May He, the bounteous Indra, bless us.

३. सृष्टि-रचना से पूर्व स्थिति

(Before Creation of the World)

नासदासीन्नो सदासीत्तदानीं नासीद्रजो नो व्योमा परो यत् ।
किमावरीवः कुह कस्य शर्मन्नम्भः किमासीद् गहनं गभीरम् ॥१॥

(ऋग्वेद, १०।१२९।१)

उस समय अर्थात् सृष्टि-रचना से पूर्व प्रलयावस्था में न असत् था और न ही सत् था, अर्थात् शून्य अथवा नितान्त अभाव नहीं और न ही प्रकट रूप में कुछ विद्यमान था। उस समय न तो अन्तरिक्ष ही था और न ही आकाश था जो उससे परे है। उस समय यहां क्या ढका हुआ था ? किसके सुख-शान्ति और आश्रय के लिए था ? अर्थात् यह सब कुछ नहीं था। अगाध और गहन जल) (पाँच भूतों का समीपवर्ती करण) भी कहाँ था ? अर्थात् कारण प्रकृति के सिवा उसका कोई भी विकृत रूप सृष्टि से पूर्व प्रलयावस्था में नहीं था।

There was neither existence nor non-existence then;
These was neither the aerial space nor the sky that lies beyond it ;
Where and what covered all ? And by whom was it protected ?
Was there water, deep and unfathomable ?

न मृत्युरासीदमृतं न र्तहि न रात्र्या अह्न आसीत् प्रकेतः ।
आनीदवातं स्वधया तदेकं तस्माद्धान्यन्नपरः किं चनास ।।२।।

(ऋग्वेद, १०।१२९।२)

उस समय मृत्यु नहीं थी, मृत्यु का अभाव अमृत भी नहीं था। रात और दिन का कोई चिह्न अथवा ज्ञान नहीं था। उस समय केवल वह एक (पुरुष-ब्रह्म) था जो प्रकृति के साथ बिना वायु के स्वधारणशक्ति से प्राण रूप में स्फूर्तिमान् था। उससे भिन्न उस समय निश्चित रूप से और कुछ भी नहीं था।

उस समय पुरुष (परमात्मा और आत्मा) तथा मूल प्रकृति के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं था।

There was neither mortality nor immortality,
Nor was there any sign of day or night,
There was one who breathed without breath, by self-impulse ;
Apart from Him there was nothing whatsoever.

तम आसीत्तमसा गूढमग्रेऽप्रकेतं सलिलं सर्वमा इदम् ।
तुच्छ्येनाभ्वपिहितं यदासीत्तपसस्तन्महिनाजायतैकम् ।।३।।

(ऋग्वेद, १०।१२९।३)

सृष्टि की उत्पत्ति से पूर्व प्रलयावस्था में अन्धकार से आवृत्त अन्धकार था अर्थात् जो कुछ था वह अन्धकारावृत्त था। उस समय जो कुछ था वह सब चिह्नरहित जल (कारण रूप में) था। तुच्छ रूप से छिपी हुई 'आभु' सब ओर विस्तृत जो अव्यक्त प्रकृति थी (अर्थात् उपादान कारण रूप में विद्यमान थी) वह परमात्मा के तप के महत्त्व से एक व्यक्त कार्य के रूप में प्रकट हुई।

Darkness was there, veiled by darkness,
And all this was concealed in indiscriminate chaos ;
The One that lay hidden by void and formless,
Manifested Himself through His greatness and might.

कामस्तदग्रे समवर्तताधि मनसो रेतः प्रथमं यदासीत् ।
सतो बन्धुमसति निरविन्दन् हृदि प्रतीष्या कवयो मनीषा ।।४।।
(ऋग्वेद, १०।१२६।४)

सृष्टि से पूर्व (प्रलयावस्था में) काम अर्थात् सृष्टि-सृजन सम्बन्धी ईश्वरीय कामना अथवा आत्मा का वासनात्मक संकल्प विद्यमान था जो मन आदि अन्तःकरणों के बीज रूप में था। क्रान्तदर्शी ऋषियों ने हृदय में बुद्धि से विचार कर जान लिया कि कारण-रूप अव्यक्त प्रकृति में और कार्य-रूप व्यक्त प्रकृति में परस्पर बन्धुता है।

In the beginning there was Kāma
The primal seed of the mind.
The sages searching in their hearts with wisdom
Found kinship between existence and non-existence.

तिरश्चीनो विततो रश्मिरेषामधः स्विदासीदुपरि स्विदासीत् ।
रेतोधा आसन्महिमान आसन्त्स्वधा अवस्तात् प्रयतिः परस्तात् ।।५।।
(ऋग्वेद, १०।१२६।५)

इनकी (अर्थात् ईश्वर, जीव और प्रकृति तीनों की) किरणें तिरछी फैली थीं, नीचे की ओर भी थीं और ऊपर की ओर भी थीं। रेतोधाः (जीवन के बीज-रूप वीर्यधारक जीव) थे और वे महान् थे। इधर स्वधा (प्रकृति) थी और परे (प्रयति (प्रयत्न=ईक्षण की शक्ति) थी।

प्रकृति के कार्य-रूप में परिवर्तन के लिए ईश्वर, जीव और प्रकृति तीनों हेतु बने।

Their rays slanted out traversed
Wonderfully below and above.
There were seeds of life, mighty forces,
Sustaining power below and forward movement beyond.

को अद्धा वेद क इह प्रवोचत्कुत जाजाता कुत इयं विसृष्टिः।
अर्वाग्देवा अस्य विसर्जनेनाथ को वेद यत आबभूव ॥६॥
(ऋग्वेद, १०।१२९।६)

कौन यथार्थ जानता है और कौन यहां कह सकता है कि यह सृष्टि कहां से बनी और किस निमित्त-कारण द्वारा यह विविध प्रकार की सृष्टि उत्पन्न हुई ? इसकी उत्पत्ति के पश्चात् देव उत्पन्न हुए। इसलिए यह कौन जानता है कि कहां से इसकी उत्पत्ति हुई।

अर्थात् सृष्टि-रचना का यथार्थ ज्ञान मनुष्यों अथवा देवों को नहीं हो सकता, क्योंकि उनकी उत्पत्ति सृष्टि (जगत) की उत्पत्ति के बाद हुई।

Who really knows and who can tell—
Whence was it born and whence came this creation ?
The Devas were born after this creation ;
Who knows then whence it came into being ?

इयं विसृष्टिर्यत आबभूव यदि वा दधे यदि वा न।
तोऽस्याध्यक्षः परमे व्योमन्त्सो अङ्ग वेद यदि वा न वेद ॥७॥
(ऋग्वेद, १०।१२९।७)

जिससे यह विविध प्रकार की सृष्टि उत्पन्न हुई वह उसे धारण करता है अथवा नहीं। परम आकाश में जो इसका अधिष्ठाता है वही उसे जानता होगा। और यदि वह भी न जानता होगा तो और कौन जानता होगा ? अर्थात् सब का अधिष्ठाता परमेश्वर ही जानता होगा।

He from whom this multiple creation came into being,
Upheld by anyone or not;
He who is the master of the highest heaven,
He verily knows it.
If not, who else does ?

४. सृष्टि-रचना

(Creation of the World)

ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत ।
ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः ॥१॥

(ऋग्वेद, १०।१९०।१)

सब ओर प्रकाशमान तप से ऋत और सत्य प्रकट हुआ। तब उसी से रात्रि उत्पन्न हुई। तब उस तप से ही आकाश और जल की तरंगों से युक्त समुद्र उत्पन्न हुआ।

(वेद में आकाश को भी समुद्र कहते हैं।)

Rita and Satya were born of blazing tapas,
And thence was born night, and thence
Samudra (eth erial ocean) and Arnava (the earthly ocean).
(In the Vedas ethcr is also called Ocean)

समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत।
अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी ॥२॥

(ऋग्वेद, १०।१९०।२)

आलोडित और तरंगित समुद्र (आकाश और सागर) से ही संवत्सर प्रकट हुआ। होते हुए जगत् के स्वामी ने ही दिन और रात्रियों को भी बनाया।

From the Samudra and Arnava
Was born Time—the year.
The ruler of universe
Made days and nights (without an effort)

सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत् ।
दिवं च पृथिवीं चाऽन्तरिक्षमथो स्वः ॥३॥

(ऋग्वेद १०।१९०।३)

विधाता ने (सृष्टि के आरम्भ में) पहले के समान ही सूर्य और चन्द्रमा को, आकाश और पृथिवी को, अन्तरिक्ष और प्रकाश लोक को बनाया।

In the beginning, as before,
The Creator made the sun,
The moon, the heaven and the earth,
The etherial region and heavenly bodies.

५. पुरुष सूक्त

(Universal Soul)

सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
स भूमिं विश्वतो वृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥१॥

(ऋग्वेद १०।९०।१; यजुर्वेद ३१।१; सामवेद ६१७)

पुरुष अर्थात् पूर्ण परमेश्वर के सहस्रों सिर हैं, सहस्रों आंखें हैं और सहस्रों पैर हैं। वह इस समय भूमि को सब प्रकार से और सब ओर से व्याप्त कर (घेर कर) भी दस अंगुल अतिक्रान्त कर स्थित है। अर्थात् वह परमेश्वर समस्त विश्व में व्याप्त होता हुआ समस्त विश्व को अपने में व्याप्त किये किये हुए है।

Purusha (Supreme Being) is thousand-headed,
Thousand-eyed, thousand-footed;
Pervading the earth on all sides,
He transgresses the universe by ten fingers beyond.

पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम् ।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥२॥

(ऋग्वेद १०।९०।२; यजुर्वेद ३१।२)

पुरुष (परमात्मा) ही यह सब कुछ है जो कि भूत और भविष्य है। वह परमात्मा ही मोक्ष का स्वामी है और जो कुछ अन्न से बढ़ता है उस सबका स्वामी भी वह (परमात्मा) ही है।

Purusha (God), indeed, is all this,
What has been and what will be;
He is Lord of immortality
And all what grows by food.

एतावानस्य महिमाऽतो ज्यायाँश्च पूरुषः ।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं भुवि ॥३॥

(ऋग्वेद १०।९०।३; यजुर्वेद ३१।३)

इस विश्व की बहुत बड़ी महिमा है, परन्तु वह परम पुरुष परमेश्वर तो इससे भी कहीं अधिक बड़ा है। समस्त भूत (उत्पन्न पदार्थ) और लोक उसके एक चरण के समान हैं। उसके तीन चरण प्रकाशमय स्वरूप में अमृत अर्थात् अविनाशी हैं। परमात्मा का त्रिपादात्मक अमृतमय रूप स्वप्रकाशरूप में अथवा मोक्ष स्वरूप में वर्तमान है।

Such is His greatness, but
Purusha is greater than this;
All worlds are only a part of Him,
Three (remaining) parts of Him
are immortal in heaven.

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः ।
ततो विश्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि ॥४॥

(ऋग्वेद १०।६०।४; यजुर्वेद ३१।

तीन चरणों (अंशों) वाला वह परमात्मा सब से ऊपर और सर्वोत्कृ रूप से अर्थात् संसार से पृथक् सदा मुक्त स्वरूप में उदय को प्राप्त हो रहा है उसका व्यक्त चरण यहाँ जगत् रूप से प्रकट हुआ है। वह प्रभु सर्वत्र व्या है। वह अशन (भोजन-व्यापार से युक्त चेतन प्राणियों) और अनशन (भोज व्यापार से शून्य पदार्थों) सभी में विद्यमान है।

Three-fourths of Purusha is most sublime ;
His fourth part is here again and again,
Diversified in various forms. It pervades
The animate and the inanimate world.

तस्माद्विराडजायत विराजो अधि पूरुषः ।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥५॥

(ऋग्वेद १०।६०।५; यजुर्वेद ३१।५)

उस परम पुरुष परमात्मा से विराट् अर्थात् ब्रह्माण्ड रूप महान् शरीर उत्पन्न हुआ। विराट् अर्थात् ब्रह्माण्डमय शरीर के ऊपर अध्यक्ष रूप से वह परम पुरुष स्थित है। वह व्यक्त होकर भी सबसे पृथक् रहता है और सब से बड़ा है। विराट् के प्रकट होने के पश्चात् परम पुरुष परमेश्वर ने भूमि को उत्पन्न किया और उसके पश्चात् नाना शरीर उत्पन्न किये।

From Him Virat was born, and
From Virāt was born Purusha;
Born but remaining aloof from His creation
He spread over the earth from beyond and in front.

यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ॥६॥
(ऋग्वेद १०।९०।६; यजुर्वेद ३१।१४)

जब देवों (सृष्टि आदि में वेद प्रकाशक अग्नि आदि महर्षियों) ने पुरुष हवि से अर्थात् अपनी अन्तरात्मा में आहुत करने योग्य—ग्रहण करने योग्य और जानने योग्य—पूर्ण परमात्मा के द्वारा यज्ञ (मानस यज्ञ) का अनुष्टान किया तब उस यज्ञ के लिए वसन्त ऋतु ही घृत था, ग्रीष्म ऋतु इंधन (समिधाएं) था और शरद् ऋतु हवि (हव्य द्रव्य) था ।

When with Purusha as offering
The Devas performed a cosmic sacrifice
Spring was the melted butter
Summer, the fuel and autumn, the oblation.

तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः ।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये ॥७॥
(ऋग्वेद १०।९०।७; यजुर्वेद ३१।९)

सृष्टि से पूर्व प्रकट हुए उस यज्ञ पुरुष को विद्वान् (बर्हिषि) मानस ज्ञान यज्ञ में सींचते अर्थात् धारण करते हैं । उससे अथवा उसके उपदिष्ट वेद से देव; साधक और ऋषि उसी का यजन उपासना आदि करते हैं ।

They besprinkled Him the sacrificed Purusha,
The first born on the sacred altar,
With Him sacrificed the Devas,
And the sages of learning and and wisdom.

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम् ।
पशून् तांश्चक्रे वायव्यानारण्यान् ग्राम्याश्च ये ॥८॥

(ऋग्वेद १०।९०।८; यजुर्वेद ३१।६) अथर्ववेद १९।६।१४

उस सर्वहुत अर्थात् सर्वसमर्पित अत्यन्त पूजनीय यज्ञपुरुष से घृतादि विवि पदार्थ उत्पन्न हुए। सिंह, सूकर आदि वन में रहने वाले और गौ, अश्व आदि ग्रामों में रहने माले पशुओं को तथा वायु से सम्बन्धित पशु-पक्षियों को भी उसी ने उत्पन्न किया।

From that adorable Lord of oblation fully offered
Were obtained milk and butter.
And all the animals were created,
The air-borne, the wild and the domestic.

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे ।
छान्दांसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥९॥

(ऋग्वेद १०।९०।९; यजुर्वेद ३१।७) अथर्ववेद १९।६।१३

उस सर्वहुत अर्थात् सर्वसमर्पित परम पूजनीय यज्ञमय पुरुष से ही ऋचाएं (ऋग्वेद) और सामगान (सामवेद) उत्पन्न हुए। उसी से अथर्ववेद उत्पन्न हुआ और उसी से यजुर्वेद की उत्पत्ति हुई।

From that adorable Lord of oblation, fully offered
The Ric and the Sāman were born
The Atharvaveda was born of that
And from that the Yajus was born.

तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः ॥१०॥
(ऋग्वेद १०।९०।१०; यजुर्वेद ३१।८; अथर्ववेद १९।६।१२)

उस सर्वहुत यज्ञ पुरुष से ही घोड़े एवं अन्य सभी ऊपर-नीचे दोनों ओर दांत रखने वाले ऊंट, गधा आदि पशु उत्पन्न हुए। उससे ही गौ, बैल आदि उत्पन्न हुए। उससे ही बकरी, भेड़ आदि की उत्पत्ति हुई।

From that were born horses, and
Animals with two rows of teeth;
Cows, too, were born of that, and
Of that were born the goats and sheep.

यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्य कौ बाहू का ऊरू पादा उच्येते ॥११॥
(ऋग्वेद १०।९०।११; यजुर्वेद ३२/१० अथर्ववेद १९।६।५)

जिस विराट् पुरुष की विद्वान् ऋषि मुनि विविध प्रकार से धारणा एवं कल्पना करते हैं; उसे कितने रूपों में विभक्त किया गया अर्थात् उसकी विभाजन-कल्पना किस प्रकार की गई। उसका मुख क्या था ? भुजाएं कौन-सी थीं ? उसकी जंघाएं और पाँव कौन कहे जाते हैं ?

When they divided Purusha
How many portions did they make ?
What was His mouth called ? What His arms ?
And What His thighs and feet were ?

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः ।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याँ शूद्रो अजायत ॥१२॥
(ऋग्वेद १०।९०।१२; यजुर्वेद ३१।११; अथर्ववेद १९।६।६)

उस विराट् पुरुष का मुख ब्राह्मण था अर्थात् वेद-विद्या, ब्रह्मज्ञान और शमादि उत्तम गुणों को रखने के कारण ब्राह्मण मुखस्थानीय था। राजन्य (क्षत्रिय) बाहू था अर्थात् बाहुबल, वीर्य, शूरता और युद्धविद्या आदि गुणों के कारण क्षत्रिय भुजस्थानीय था। वैश्य उसकी जंघाएं थीं अर्थात् व्यापार, कृषि आदि माध्यम गुणों से युक्त वैश्य जंघास्थानीय था। उस विराट् पुरुष के पैरों से शूद्र उत्पन्न हुआ अर्थात् सेवा, चाकरी आदि निम्न गुणों से युक्त शूद्र पादस्थानीय था।

The Brahmaṇa was His mouth and the
Rājanyas were made His arms
The Vaishyas were His thighs and
the Shudras were born from His feet.

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत।
मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत ॥[1] १२॥
(ऋग्वेद १०।९०।१३; यजुर्वेद ३१।१२; अथर्ववेद १९।६।७)

उसी विराट् यज्ञपुरुष से चन्द्रमा प्रकट हुआ। अर्थात् जो स्थान शरीर में मन का है वही विराट् शरीर में चन्द्रमा का है। उसकी आंखों से सूर्य उत्पन्न हुआ। अर्थात् सूर्य उसका नेत्रस्थानीय है। उसके मुख से इन्द्र और अग्नि उत्पन्न हुए तथा प्राण से वायु की उत्पत्ति हुई।

From His mind was born the moon and
From His eye the sun.
From His mouth Indra and Agni were born
And Vayu was born from His breath.

१—यजुर्वेद में / Yajurveda reads. "श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत" पाठ है।

नाभ्या आसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन् ।।१४।।
(ऋग्वेद १०।९०।१४; यजुर्वेद ३१।१३; अथर्ववेद १९।६।८)

उस विराट् यज्ञपुरुष की नाभि से अन्तरिक्ष प्रकट हुआ। उसके सिर से द्युलोक कल्पित हुआ। पैरों से भूमि प्रकट हुई, श्रोत्र से दिशाएं और अन्य लोक उत्पन्न हुए। अर्थात् अन्तरिक्ष, द्युलोक, भूमि आदि सभी लोक उस विराट् पुरुष के ही अंग हैं।

From His navel came the mid-world,
From His head the sky was made;
From His feet the earth and from His ears
The quarters were made.
Thus they formed all the worlds.

सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम् ।। १५ ।।
(ऋग्वेद १०।९०।१५; यजुर्वेद ३१।१५; अथर्ववेद १९।६।१५)

जिस यज्ञ (मानस ज्ञान, सृष्टि विकास आदि) को विस्तृत करते हुए देवों (ईश्वर की दिव्य शक्तियों, विद्वान् ऋषियों) ने जानने योग्य पुरुष अर्थात् परमात्मा को ध्यानयोग से हृदय में बांधा (धारण किया), इस यज्ञ की सात परिधियां (लपेट) थीं और इक्कीस समिधाएं बनाई गईं।

सात परिधियां—गायत्री आदि सात छन्द।

इक्कीस समिधाएं—मूल प्रकृति, महत्त्व, अहंकार, पांच सूक्ष्म भूत, पांच स्थूल भूत, पाँच ज्ञानेन्द्रिय, सत्त्व, रसज् और तमस् नामक तीन गुण।

Seven were the sticks of the enclo sure,
Thrice seven were the logs of wood,
When Devas, performing the sacrifice,
Bound Purusha as their victim.

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥१६॥

(ऋग्वेद १०।९०।१६; यजुर्वेद ३१।१६)

देवों (ऋषियों, विद्वानों आदि) ने यज्ञ से अर्थात् मानस यज्ञ से यज्ञपुरुष परमात्मा का (पूजन आदि) किया। वे यजन-पूजन आदि धारणात्मक धर्म अनादिकाल से हैं। वे देव निश्चय ही महिमा से युक्त होकर उस ब्रह्मलोक को प्राप्त होते हैं जहां पूर्व साध्य देव विद्यमान हैं अर्थात् पहुंच चुके हैं।

Through Yajna the Devas performed Yajna,
Those were the earliest holy ordinances.
Through Yajna the great ones attain that heaven
Where the ancient Devas and the Sādhyas abide.

६. पृथिवी और उसकी प्रार्थना

(Prayer of Earth)

सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति ।
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरुं लोकं पृथिवी नः कृणोतु ॥१॥

(अथर्ववेद १२।१।१)

महान् सत्य, परमतत्त्व सम्बन्धी उच्चज्ञान, दीक्षा, तप, ब्रह्मज्ञान, यज्ञ आदि सब मिलकर जिस पृथिवी को धारण करते हैं, वह पृथिवी हमारे भूत एवं भविष्यत् की रक्षा करने वाली है। वह हमारे लिए निवासार्थ विशाल और विस्तृत हो।

Truth, Eternal Order that is high and potent,
Dedication. Austerity, Prayer and Ritual—
These uphold the Earth.
May she, the Queen of what has been and will be,
Make a wide world for us.

असंबाधं मध्यतो मानवानां यस्या उद्वतः प्रवतः समं बहु ।
नानावीर्या ओषधीर्या बिभर्ति पृथिवी नः प्रथतां राध्यतां नः ॥२॥

(अथर्ववेद १२।१।२)

जिस पृथ्वी पर मानवों के मध्य में बाधा रहित ऊंचे नीचे और सम बहुत से स्थान हैं; जो पृथ्वी नाना प्रकार के वीर्यों एवं बलों के देने वाली औषधियों को धारण करती है; वह पृथ्वी हमारे लिए विस्तृत हो तथा सुख समृद्धि को देने वाली हो ।

Earth which is not overcrowded,
Which has many heights and floods and level plains;
Earth that bears plants of various healing powers,
May she spread wide and be merciful for us.

यस्यां समुद्र उत सिन्धुरापो यस्यामन्नं कृष्टयः संबभूवुः ।
यस्यामिदं जिन्वति प्राणदेजत् सा नो भूमिः पूर्वपेये दधातु ॥३॥

(अथर्ववेद १२।१।३)

जिस पृथिवी पर समुद्र और स्पन्दनशील नदी-नाले प्रवाहमान हैं; जिसपर अन्न और प्राणी उत्पन्न होते हैं; जिस पर सम्पूर्ण प्राणि-जगत् प्रगतिशील होता, श्वास-प्रश्वास लेता तथा चलता फिरता है; वही पृथिवी हमारे लिए श्रेष्ठ पेयरस धारण करने वाली हो।

Earth, in which lie the sea, the rivers and other waters,
In which food and corn lands have their existence,
In which live all that breathes and that, moves,
May that Earth confer on us the foremost of her yield.

यस्याश्चतस्रः प्रदिशः पृथिव्या यस्यामन्नं कृष्टयः संबभूवुः ।
या बिभर्ति बहुधा प्राणदेजत् सा नो भूमिर्गोष्वप्यन्ने दधातु ।।४।।
(अथर्ववेद १२।१।४)

जिस पृथिवी पर चार प्रधान दिशाएं हैं; जिस पर अन्न के लिए कृषि की जाती है; जो प्राण धारण करने वाले और गतिशील जीवों को धारण करती है; वह पृथिवी हमें गौओं तथा अन्न से समृद्ध बनाए ।

Mistress of four quarters, in whom
Food and corn lands have their being.
Who bears in many forms the breathing and moving life,
May that Earth give us cattle and crops.

यस्यां पूर्वे पूर्वजना विचक्रिरे यस्यां देवा असुरानभ्यवर्तयन् ।
गवामश्वानां वयसश्च विष्ठा भगं वर्चः पृथिवी नो दधातु ।।५।।
(अथर्ववेद १२।१।५)

जिस पृथिवी पर पूर्वजन (पूर्व पुरुष लोग) विविध प्रकार के कर्तव्य कर्म करते रहे हैं; जिस पर देवजनों ने असुरों को पराभूत कर उन्हें अपनी ओर अभिवर्तित किया अर्थात् उन्हें दैवी भावों की ओर आकृष्ट किया; जो गौओं, अश्वों, पक्षियों आदि के लिए निवासस्थान है; वही पृथिवी हमारे लिए सौभाग्य और वर्चस् प्रदान करे ।

Earth, on which men of old before us
Performed their various deeds,
Where Devas overwhelmed the Asuras,
Earth, the home of kine, horses, birds,
May she give us good luck and lustre.

गिरयस्ते पर्वता हिमवन्तोऽरण्यं ते पृथिवि स्योनमस्तु।
बभ्रुं कृष्णां रोहिणीं विश्वरूपां ध्रुवां भूमिं पृथिवीमिन्द्रगुप्ताम्।
अजीतोऽहतो अक्षतोऽध्यष्ठां पृथिवीमहम् ॥६॥

(अथर्ववेद १२।१।११)

हे पृथिवि ! तेरे ऊपर उठे हुए टीले-पहाड़ और हिमाच्छादित पर्वत एवं विशाल वन सुखप्रद हों। बभ्रु (भूरे रंग वाली अथवा औषधियों से भरपूर); कृष्ण रंग वाली (अथवा कृषि युक्त), लाल रंग वाली (अथवा लाल रंग वाली औषधियों से युक्त), नाना रंगों वाली, स्थिर और इन्द्र द्वारा सुरक्षित पृथिवी पर मैं अजित, अहत और अक्षत होकर रहूँ।

Auspicious be thy hills, O Earth,
Thy snow-clad mountains and thy woods !
On Earth—brown, black, ruddy and multi·coloured—
On the firm Earth protected by Indra,
I stand unvanquished, unslain, unhurt.

यत् ते मध्यं पृथिवी यच्च नभ्यं यास्त ऊर्जस्तन्वः संबभूवुः।
तासु नो धेह्यभि नः पवस्व माता भूमिः पुत्रोः अहं पृथिव्याः।
पर्जन्यः पिता सउनः पिपर्तु ॥७॥

(अथर्ववेद १२।१।१२)

हे पृथिवि ! तुम्हारा जो मध्यभाग है; तुम्हारा जो केन्द्रीय भाग है; तुम्हारे शरीर से उत्पन्न होने वाली जो रसभरी ऊर्जाएं (क्यारियां) हैं; उनमें हमें धारण कर और हमें पवित्र कर। भूमि माता है और मैं उसका पुत्र हूं। पर्जन्य (मेघ) पिता है, वह हमारा पालन करे।

Set me, O Earth, amidst, what is shy centre and thy navel,
And vitalising forces issued from thy body.
Purify us from all sides.
I am the son of Earth, Earth is my mother.
Parjanya my father; may he fill us with plenty.

ये ग्रामा यदरण्यं याः सभा अधि भूम्याम् ।
ये संग्रामाः समितयस्तेषु चारु वदेम ते ॥८॥

(अथर्ववेद १२।१।५६)

इस भूमि पर जो ग्राम हैं, जो वन हैं, जो सभाएं और गणस्थान हैं, जो युद्ध स्थान और शिविर हैं, उन सब में, हे पृथिवि ! हम तेरे लिए प्रेम तथा प्रशंसा के शब्द बोलें ।

In villages and in woodland, and in the assemblies on earth,
In congregations and in councils of the folk,
May we speak of thee in lovely terms.

उपस्थास्ते अनमीवा अयक्ष्मा अस्मभ्यं सन्तु पृथिवी प्रसूताः ।
दीर्घं न आयुः प्रतिबुध्यमाना वयं तुभ्यं बलिहृतः स्याम ॥९॥

(अथर्ववेद १२।१।६२)

हे पृथिवि ! तेरे ऊपर प्रकट हुए उपस्थ (गोद रूप आश्रय) स्थान हमारे लिए कृमि रहित और रोगरहित हों । हमारी आयु दीर्घ हो । हम सावधान होते हुए तेरे लिए बलि (भेंट) देनेवाले हों ।

My thou born of thee, O Earth,
be for our welfare. free from sickness and waste.
Wakeful though long-extended life, may we be
bearers of tribute to thee.

स्योना पृथिवि नो भवानुक्षरा निवेशनी ।
यच्छा नः शर्म सप्रथाः ॥१०॥

(अथर्ववेद १८।२।१९)

हे पृथिवी ! तू हमारे लिए सुखदायिनी, कण्टकरहित और विश्रामप्रद निवास देने वाली बन । तू हमें विस्तृत सुख और निवास स्थान प्रदान कर ।

Be pleasant unto us, O Earth,
Thornless, and our resting place !
Vouchsafe us shelter far-extending.

७. आश्रम धर्म

(Division of life into periods)

८. ब्रह्मचर्य

(Celibacy)

ब्रह्मचर्येण तपसा राजा राष्ट्रं वि रक्षति ।
आचार्यो ब्रह्मचर्येण ब्रह्मचारिणमिच्छते ॥
ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम् ॥१॥

(अथर्ववेद ११।५।१७-१८)

राजा ब्रह्मचर्य के तप से ही राष्ट्र की विशेष रूप से रक्षा करता है। आचार्य ब्रह्मचर्य द्वारा ब्रह्मचारी शिष्य को चाहता है। कन्या ब्रह्मचर्य द्वारा ही युवक पति को प्राप्त करती है।

By the spiritual discipline of Brahmacharya
the king protects his state;
by the spiritual discipline of Brahmacharya
the preceptor seeks his pupil;
by the spiritual discipline of Brahmacharya
the maiden gets a youthful husband.

ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत ।
इन्द्रो ह ब्रह्मचर्येण देवेभ्यः स्वराभरत् ॥२॥

(अथर्ववेद ११।५।१९)

ब्रह्मचर्य और तप से देवों ने मृत्यु को दूर किया । इन्द्र ने ब्रह्मचर्य से ही देवों अथवा दिव्य शक्ति सम्पन्न इन्द्रियों के लिए तेज एवं सुख को धारण किया ।

By austerity of Brahmacharya
the Devas drove away death,
and Indra through Brahmacharya
brought heavenly lustre to Devas.

ब्रह्मचारीष्णंश्चरति रोदसी उभे तस्मिन् देवाः संमनसो भवन्ति ।
स दाधार पृथिवीं दिवं च स आचार्यं तपसा पिपर्ति ॥३॥

(अथर्ववेद ११।५।१)

ब्रह्मचारी पृथ्वी और द्युलोक दोनों लोकों को पुनः पुनः अनुकूल एवं दृढ़ बनाता हुआ चलता है । उस में सब देव अनुकूल मन के साथ रहते हैं । वह (ब्रह्मचारी) पृथ्वी और द्युलोक को धारण करता है और तप से आचार्य को परिपूर्ण करता है ।

ब्रह्मचारी देवों से ज्ञान लेकर उस ज्ञान के रूप में विद्वानों को अपने अन्दर रखता है अर्थात् हृदय में स्थान देता है ।

The Brahmacharin moves, strengthening both the worlds,
in him the Devas meet in concord,
he upholds firmly earth and heaven
and he satisfies his Acharya with austerity.

पूर्वो जातो ब्रह्मणो ब्रह्मचारी धर्मं वसानस्तपसोदतिष्ठत् ।
तस्माज्जातं ब्राह्मणं ब्रह्म ज्येष्ठं देवाश्च सर्वे अमृतेन साकम् ॥४॥

(अथर्ववेद ११।५।५)

ब्रह्म (वेदज्ञान) से पूर्व उत्पन्न हुआ ब्रह्मचारी धर्म (पुरुषार्थ के तेज) अथवा धर्म को धारण करता हुआ तप के साथ ऊपर उठता है (उन्नति करता है)। उससे ही ब्रह्म सम्बन्धी श्रेष्ठ ज्ञान और अमृतत्व सहित देवगण उत्पन्न होते हैं ।

The Brahmacharin born before the sacred knowledge
robed in libation, stood up through his austerity;
through him were manifested the sacred lore,
highest Brahma, and all Devas with immortality.

ब्रह्मचारी ब्रह्म भ्राजद् विभर्ति तस्मिन् देवा अधि विश्वे समोताः ।
प्राणपानौ जनयन्नाद् व्यानं वाचं मनो हृदयं ब्रह्म मेधाम् ॥५॥

(अथर्ववेद ११।५।२४)

ब्रह्मचारी ब्रह्मचर्य से ही चमकने वाले ब्रह्मज्ञान को धारण करता है। उस में सभी देव समवेत रहते हैं । इसीलिए वह (ब्रह्मचारी) प्राण, अपान, व्यान, वाणी, मन, हृदय, ब्रह्म (ज्ञान) और मेघा (बुद्धि) को प्रकट करता है। अर्थात् ब्रह्मचारी के लिए ही ये सब उपयोगी हो सकते हैं ।

Brahmachari wields the radient Brahma,
where in all Devas are woven together,
creating breath and in breath and out breath,
speech, mind, heart, Brahma and holy wisdom.

९. व्रत की दीक्षा

(Self-dedication & consecration)

व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाऽऽप्नोति दक्षिणाम् ।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ।।

(यजुर्वेद १९।३०)

व्रत से मनुष्य दीक्षा (उत्तम अधिकार) प्राप्त करता है, दीक्षा से दक्षिणा को प्राप्त करता है, दक्षिणा से श्रद्धा को पाता है और श्रद्धा से सत्य प्राप्त किया जाता है।

By self-dedication one attains
Consecration, by consecration grace,
by grace reverence
and by reverence truth is obtained.



१०. ब्रह्मचारी द्वारा सरस्वती आराधना

(Prayer to Sarasvati by the Brahmachari)

पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती ।
यज्ञं वष्टु धियावसुः ।।१।।

(ऋग्वेद १।३।१०; यजुर्वेद २०।८४; सामवेद १८९)

सरस्वती हमें पवित्र करने वाली है, वह हमें अन्न देने वाली है। बुद्धि द्वारा सम्पन्न होने वाले अनेक कर्मों से नाना प्रकार का धन देने वाली वह सरस्वती हमारे यज्ञ को सफल करे अथवा हमारे जीवन यज्ञ को कल्याणमय बनाये।

Bounteous is Sarasvati, the purifier,
rich in wealth and with intellect, her treasure,
May she purify us and enable us to lead noble life.

चोदयित्री सूनृतानां चेतन्ती सुमतीनाम् ।
यज्ञं दधे सरस्वती ॥२॥

(ऋग्वेद १।३।११; यजुर्वेद २०।८५)

सत्य कर्मों को प्रेरणा देने वाली, उत्तम बुद्धियों को विकसित करने वाली सरस्वती (विद्या की देवी) हमारे यज्ञ अथवा उपासना को स्वीकार करे ।

May Sarasvati,
Inspirer of the truthful,
rouser of the noble-minded
accept our prayer and worship.

महो अर्णः सरस्वती प्र चेतयति केतुना ।
धियो विश्वा वि राजति ॥३॥

(ऋग्वेद १।३।१२; यजुर्वेद २०।८६)

सरस्वती (विद्या की देवी) ज्ञान से संसार रूपी महासागर का ज्ञान कराती है और सब प्रकार की बुद्धियों को प्रकाशित करती है ।

Sarasvati rouses up with her hight,
the mighty ocean of knowledge,
and brightens all intellects.

प्र णो देवी सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती ।
धीनामवित्र्यवतु ॥४॥

(ऋग्वेद ६।६१।४)

सरस्वती देवी ज्ञान, बल और अन्न को देने वाली है। वह उत्तम बुद्धियों और कर्मों का पालन और रक्षण करने वाली है। वह हमारी रक्षा करे।

May Goddess Sarasvati,
rich in her treasures, inspirer
of intellects, protect us well.

भारतीले सरस्वति या वः सर्वा उपब्रुवे ।
ता नश्चोदयत श्रिये ॥५॥

(ऋग्वेद १।१८८।८)

हे भारती, इडा और सरस्वती ! मैं आप सब को आमन्त्रित करता हूं, आप से प्रार्थना करता हूं। आप सब हमें दिव्य ऐश्वर्य की ओर प्रेरित करें।

भारती, इडा और सरस्वती तीनों यहाँ पर्यायवाचक शब्दों के रूप में एक-दूसरे के विशेषण बन कर प्रयुक्त हुए हैं।

Bharati, Ila, Sarasvati !
All of you I ivoke.
Urge us to winning brilliance and glory.

यस्ते स्तनः शशयो यो मयोभूर्येन विश्वा पुष्यसि वार्याणि ।
यो रत्नधा वसुविद् यः सुदत्रः सरस्वति तमिह धातवे कः ॥६॥
(ऋग्वेद १।१६४।४६; यजुर्वेद ३८।५; अथर्ववेद ७।१०।१)

हे सरस्वती माता ! जो तुम्हारा स्तन पुष्टिकारक और सुखदायक है, जिससे तुम सभी वरणीय धनों को पुष्ट करती हो, जो विविध प्रकार के रत्नों को धारण करने वाला और धनों को दिलाने वाला है, जो कल्याणकारक है, उसे तुम हमें पिलाने के लिए हम पिलाने के लिए हमारे मुख में भी डाल दो ।

The breast of thou wich is exhaustless, health-giving.
by which thou nursest all that is noble,
Containing treasure, bearing wealth, bestowed freely,
lay that bare, Sarasvati, for our nurture.

११. शिव संकल्प

(Good Will)

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति ।
दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ।।१।।

(यजुर्वेद ३४।१)

जो जाग्रत अवस्था में दूर-दूर तक भागता है, जो सुप्तावस्था में भी वैसे ही दूर-दूर तक चला जाता है, वह दूर जाने वाला, ज्योतियों का ज्योति (इन्द्रियों को प्रकाश देने वाला), एकमात्र और दिव्य शक्ति से संयुक्त मेरा मन अच्छे संकल्प वाला हो ।

May the divine Entity that goes far away
from the waking, and likewise from the sleeping.
that is the only one light of all the lights
whieh travels far and wide,
may that mind of mine be possessed of noble intentions.

येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः ।
यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ।।२।।

(यजुर्वेद ३४।२)

जिस (मन) से परिश्रमी और मननशील पुरुष यज्ञों में, सभा भवनों में और युद्धों मैं कर्म करते हैं, जो सभी प्रजाओं में अपूर्व एवं पूजनीय है, वह मेरा मन शुभ संकल्प वाला हो ।

May that by which wise men, skilful in rituals
and steady in assemblies, perform their tasks
that peerless Spirit that lies in all creatures,
may that mtnd of mine possess noble intentions.

यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु।
यस्मान्न ऋते किञ्चन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥३॥

(यजुर्वेद ३४।३)

जो मन ज्ञान, चिन्तन शक्ति और धैर्य से युक्त है, जो प्रजाओं में अमृत और ज्योति है और जिसके विना कोई भी काम नहीं किया जाता, वह मेरा मन शुभ संकल्प वाला हो।

May that which is deep knowledge, intellect, memory,
that which is immortal light in living beings,
that without which nothing can be accomplished,
may that mind of mine possess noble intentions.

येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्यत्परिगृहीतममृतेन सर्वम्।
येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः सिवसंकल्पमस्तु ॥४॥

(यजुर्वेद ३४।४)

जिस अमर मन से यह भूत, वर्तमान और भविष्यत् सब कुछ परिगृहीत है। जिश (मन) से सात ऋत्विजों द्वारा होने वाला यज्ञ फैलाया जाता है, वह मेरा मन शुभ संकल्प वाला हो।

May that immortal Essence by which all
the past, present and future world is comprehended,
by which the ritual spreads with the seven priests,
may that mind of mine possess noble intentions.

यस्मिन्नृच: साम यजूᳬषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवारा: ।
यस्मिंश्चित्त् सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मन: शिवसंकल्पमस्तु ॥५॥
(यजुर्वेद ३४।५)

जिस मन में ऋचाएं, और जिस में साम और यजु रथनाभि में अरो के समान प्रतिष्ठित हैं और जिस में सब प्रजाओं का चित्त ओत-प्रोत है, वह मेरा मन शुभ संकल्प वाला हो ।

May that in which the Ricah, the Saman, the Yajus are held firm.
like spokes in nave of a chariot-wheel,
in which lie interwoven all thoughts of living beings,
may that mind of mine possess noble intentions.

सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव ।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मन: शिवसंकल्पमस्तु ॥
(यजुर्वेद ३४।६)

जिस प्रकार अच्छा सारथि घोड़ों को लगामों से चलाता है, उसी प्रकार जो मन मनुष्यों के इन्द्रिय रूपी घोड़ों को चलाता है और जो हृदय में प्रतिष्ठित, अजर और जविष्ठ (बलवान्) है, वह मेरा मन शुभ संकल्प वाला हो ।

May that which guides men like a good Charioteer
who, with the reins, controls swift-moving horses,
that which abides in the heart and is most swift and active,
may that mind of mine possess noble intentions.

१२. भद्रालक्ष्मी

(Auspicious Wisdom)

सक्तुमिव तितउना पुनन्तो यत्र धीरा मनसा वाचमक्रत ।
अत्रा सखायः सख्यानि जानते भद्रैषां लक्ष्मीर्निहिताधि वाचि ॥१॥

(ऋग्वेद १०।७१।२)

जहाँ चलनी से सत्तू को साफ करने के समान धीर मेधावी मन से वाणी को पवित्र करते हैं अर्थात् प्रत्येक वचन को शुद्ध करते हुए मन द्वारा प्रेरित करते है, वहाँ मित्र मुख्य रूप से सख्य भाव को जानते हैं। इन की वाणी में कल्याणी लक्ष्मी निवास करती है।

Where the sages formed the speech with their
mind straining it, as they strain flour with the sieve.
therein have friends discovered bound of friendship,
where holy beauty lies hidden in that speech.

उत त्वः पश्यन्न ददर्श वाचमुत त्वः शृण्वन्न शृणोत्येनाम् ।
उतो त्वस्मै तन्वं वि सस्रे जायेव पत्य उशती सुवासाः ॥२॥

(ऋग्वेद १०।७१।४)

कोई एक देखता हुआ भी वाणी को [वेद वाणी को अथवा ज्ञान तत्त्वों को) नहीं देखता, कोई एक सुनता हुआ भी इसे नहीं सुनता; परन्तु किसी एक के लिए वाणी उसी प्रकार अपने रहस्यों को खोल देती है जैसे पति की कामना करती हुई पतिपरायण पत्नी सुन्दर वस्त्र धारण किये हुए अपने आप को पति के अर्पण कर देती है।

There is one who seeing does not see it,
there is one who hearing it does not hear it;
but to another it reveals its lovely form,
like a well-dressed and loving wife to her husband.

उत त्वं सख्ये स्थिरपीतमाहुर्नैनं हिन्वन्त्यपि वाजिनेषु ।
अधेन्वा चरति माययैष वाचं शुश्रुवाँ अफलामपुष्पाम् ॥३॥

(ऋग्वेद १०।७१।५)

किसी एक को (वाणी के मर्मज्ञ को) वाणी की स्थिर मित्रता वाला बताते हैं। उसे वाद-विवाद आदि में (प्रतिद्वन्द्वी) जीत नहीं सकते। वाणी के मर्म को न जानने वाला माया की बनी अर्थात् असत्य धेनु के साथ घूमता है क्योंकि वह फल और फूलों से रहित वाणी को सुनता है।

आचार्य यास्क ने यज्ञज्ञान और देवता-ज्ञान को अथवा देवता-ज्ञान और आध्यात्मज्ञान को क्रमशः वाणी के पुष्प और फल बताया है।

There is the man whom they declare to be steadfast in friendship. None would overpower him in debates and contests. But that man wanders with a barren delusion who listened to speech that is without fruit or flower.

अक्षण्वन्तः कर्णवन्तः सखायो मनोजवेष्वसमा बभूवुः ।
आदघ्नास उपकक्षास उ त्वे ह्रदा इव स्नात्वा उ त्वे ददृश्रे ॥४॥

(ऋग्वेद १०।७१।७)

समान आँखों और कानों वाले मित्र भी मन के वेग में अर्थात् मानसिक प्रगतियों में समान नहीं होते। उन में से कुछ उन सरोवरों के समान हैं जिन में मुख तक अथवा कक्ष तक जल भरा रहता है और कुछ ऐसे सरोवरों के समान होते हैं जो स्नान करने के योग्य दिखाई देते हैं।

Friends having similar eyes and ears were unequal in the speed of their minds.

Some look like tanks that reach to the mouth or armpit, and some are like lakes in which a man can bathe.

१३ गृहस्थ आश्रम

पतिदेवनम् (wedded bliss)

आ नो अग्ने सुमतिं संभलो गमेदियां कुमारी सह नो भगेन। जुष्टा वरेषु समनेषु वल्गुरोषं पत्या सौभगमस्त्वस्यै ॥१॥ (अथर्ववेद २।३६।१)

हे अग्ने ! उत्तम वक्ता वर हमारी इस उत्तम बुद्धि वाली कुमारी कन्या को धन के साथ प्राप्त करे । इस कन्या को भी पति के साथ सौभाग्य प्राप्त हो। यह कन्या श्रेष्ठों में प्रिय और उत्तम मन वालों में मनोरम है।

May the suitor, O Agni, win our friendship
by seeking this maiden and bringing us good fortune.
Approved and praised in fine and holy assemblies
may she have good fortune with her husband.

इयमग्ने नारी पतिं विदेष्ट सोमो हि राजा सुभगां कृणोति ।सुवाना पुत्रान् महिषी भवाति गत्वा पतिं सुभगा वि राजतु ॥२॥ (अथर्ववेद २।३६।३)

हे अग्ने ! यह कन्या पति को प्राप्त हो; राजा सोम इसे सौभाग्यवती बनाये । यह पति को प्राप्त कर सौभाग्यशालिनी बन कर विराजे, और पुत्रों को उत्पन्न करती हुई श्रेष्ठ पत्नी एवं रानी हो ।

May this woman. O Agni, get a husband.
Then, verily, king Soma will make her happy.
May she bearing sons,, be the queen of the
home, and, fortunate, united with her husband,
hold the sway.

भगस्य नावमा रोह पूर्णामनुपदस्वतीम् ।
तयोपप्रतारय यो वरः प्रतिकाम्यः ॥३॥

(अथर्ववेद २।३६।५)

हे रानी ! पूर्ण और न डूबने वाली ऐश्वर्य की इस नौका पर सवार हो और उसके द्वारा तैर कर उस के पास जा (पहुँच) जो वर तुम्हारी कामना के योग्य है ।

Embark the ship of fortune,
that is whole and unbreakable,
and sailing in that approach the lover
who is of thy liking.

आ ते नयतु सविता नयतु पतिर्यः प्रतिकाम्यः ।
त्वमस्यै धेह्योषधे ॥४॥

(अथर्ववेद २।३६।८)

सविता देव तुम्हें प्रेरणा दे, वह तुम्हें तुम्हारे योग्य एवं तुम से काम्य पति को प्राप्त कराये । हे ओषधे! तू इसे धारण कर । (ओषधियों से तुझे पुष्टि प्राप्त हो) ।

May Savita lead thee and bring to thee the
husband of thy Choice.
Plant, may thou give her this (gift).

आ क्रन्दय धनपते वरमामनसं कृणु ।
सर्वं प्रदक्षिणं कृणु यो वरः प्रतिकाम्यः ।।५।।

(अथर्ववेद २।३६।६)

हे धनपते ! अपने वर को बुला और उसे अपने मन के अनुकूल बना। जो वर तुम्हारी अथवा कन्या की कामना के योग्य है उसे सब धन दो अथवा उसे पूर्णतया अपने अनुकूल बनाओ।

Call the lover, Lord of wealth !
and make him well inclined in mind;
have him fully on thy right hand,
the lover worthy of her choice.

गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्या जरदष्टिर्यथासः । भगो अर्यमा सविता पुरंधिर्मह्यं त्वादुर्गार्हपत्याय देवाः ।।६।। (ऋग्वेद १०।८५।३६; अथर्ववेद १४।१।५०)

मैं तेरा हाथ सौभाग्य के लिए पकड़ता हूँ जिस से तू मुझ पति के साथ वृद्धावस्था तक जीवित रहे। भग, अर्यमा, सविता, पुरंधि आदि सब देवों ने तुझ को गृहस्थाश्रम चलाने के लिए मुझे सौंपा है।

I take thy hand in mine for happy fortune, that thou
mayst attain old age with me, thy husband.
Davias---Bhaga. Aryaman, Savita, Purandhi---
have given me thee to be my house-hold's mistress.

अथर्ववेद में, 'गृभ्णामि' के स्थान पर 'गृह्णामि' पाठ ।

ममेयमस्तु पोष्या मह्यं त्वादाद् बृहस्पतिः ।
मया पत्या प्रजावति संजीव शरदः शतम् ॥७॥
(अथर्ववेद १४।१।५२)

यह मेरी पत्नी मेरे द्वारा पोषण करने योग्य हो। बृहस्पति ने तुझे मुझ को दिया है। हे सन्तानयुक्त स्त्री ! मुझ पति के साथ तू सौ वर्ष तक जीवित रह।

May she be cherihsed by me,
Brihaspati has made thee mine,
live, with me thy husband,
mother of many children, for a hundred years.

अक्ष्यौ नौ मधुसंकाशे अनीकं नौ समञ्जनम् ।
अंतःकृणुष्व मां हृदि मन इन्नौ सहासति ॥८॥
(अथर्ववेद ७।३६/१)

हम दोनों (पति-पत्नी) की आंखें मधु के समान मधुर हों, हम दोनों की आँखों के अग्रभाग अंजन से युक्त हों, हमारे मुख प्रेम और शान्ति से युक्त हों। तू मुझे अपने हृदय में रख। हम दोनों का मन ादा परस्पर साथ मिला रहे।

Be our mutual glances sweet,
may our faces show our concord,
take me with-in thy heart, and let
one spirit dwell in both of us.

समञ्जन्तु विश्वे देवाः समापो हृदयानि नौ ।
सं मातरिश्वा सं धाता समु देष्ट्री दधातु नौ ॥९॥
(ऋग्वेद १०।८५।४७)

विश्व देव और पवित्र जल हम दोनों (वर-वधू) के हृदयों को मिलावें, उन में तादात्म्य भाव उत्पन्न करें। मातरिश्वा, विधाता और देष्ट्री (माता के तुल्य उपदेश देने वाली वेदवाणी) हम दोनों को परस्पर एक साथ मिलाये।

May the universal Devas
and Apas join our hearts together,
and may Matrishvan, Dhata
and Deshtri Unite us both.

आ नः प्रजां जनयतु प्रजापतिराजरसाय समनक्त्वर्यमा । अदुर्मङ्गलीः पतिलोकमा विश शं नो भव द्विपदेशं चतुष्पदे ॥१०॥ (ऋग्वेद १०।८५।४३)

प्रजापति हमारे में से (हमार पति-पत्नी के हाँ) उत्तम सन्तान उत्पन्न करे। अर्यमा हमारी और हमारी सन्तान की वृद्धावस्था तक जीवन-रक्षा करे। हे स्त्री! तू अशुभ लक्षणों से रहित हो कर पति के घर में एवं उसके परिवार में प्रवेश कर। १ हमारे दोपायों (परिवार के सदस्यों तथा भृत्यादि बन्धु वर्गों) के लिए शान्तिदायिनी हो और तू हमारे चौपायों (गौ, अश्व आदि पशुओं) के लिए भी शान्तिप्रद हो।

May Prajapati bring forth children of us,
may Aryaman unite us together till old age,
not inauspicious, enter thou the house of your husband,
be gracious to our bipeds and our quadrupeds.

सुमङ्गलीरियं वधूरिमां समेत पश्यत ।
सौभाग्यमस्यै दत्त्वायाथास्तं[1] वि परेतन ॥११॥
(ऋग्वेद १०।८५।३३; अथर्ववेद १४।२।२८)

यह वधू सुमंगली है (मंगल युक्त है)। सब एकत्रित होओ और इसे देखो। इसे सौभाग्य का आशीर्वाद दे कर दुर्भाग्य को दूर करते हुए वापस (अपने घरों को) जाओ।

Most blissful is this bride. Come you
all together here and see her,
with her every good fortune
and then return to your homes.

(ख) गार्हपत्य (Householder's life)

इहैव स्तं मा वि यौष्टं विश्वमायुर्व्यश्नुतम् ।
क्रीडन्तौ पुत्रैर्नप्तृभिर्मोदमानौ स्वे गृहे[2] ॥१॥
(ऋग्वेद १०।८५।४२; अथर्ववेद १४।१।२२)

तुम दोनों पति-पत्नी यहाँ ही रहो, वियुक्त मत होवो। पुत्रों और पोतों=नातियों के साथ क्रीड़ा करते हुए और अपने घर में आनन्दित होते हुए पूरी आयु भोगो।

Dwell you here, be not parted from each other,
enjoy the full length of human life,
sporting with your sons and grandsons,
rejoicing in your happy home.

---

१. अथर्ववेद में 'अथास्तं विपरेतन' के स्थान पर 'दौर्भाग्यैर्विपरेतन' पाठ है।

२. अथर्ववेद में 'स्वे गृहे' के स्थान पर 'स्वस्तकौ' पाठ है।

युवं भगं सं भरतं समृद्धमृतं वदन्तावृतोद्येषु ।
ब्रह्मणस्पते पतिमस्यै रोचय चारु संभलो वदतु
वाचमेताम् ॥२॥ (अथर्ववेद १४।१।३१)

तुम दोनों सत्य व्यवहार में रह कर सत्य बोलते हुए समृद्धियुक्त भाग्य को प्राप्त करो। हे ब्रह्मणस्पते ! पति के विषय में इस स्त्री के मन में, रुचि और प्रेम उत्पन्न कर । पति (इस के प्रति) मधुर वाणी को सुन्दरता से बोले ।

Enjoy you two together happy and prosperous fortune,
observing the law in rightful bearing.
Brahmanaspati, make the husband dear to her,
and pleasant be the words the woor speaks.

स्योनाद्योनेरधि बुध्यमानौ हसामुदौ महसा मोदमानौ ।
सुगू सुपुत्रौ सुगृहौ तराथो जीवावुषसो विभातीः ॥३॥
(अथर्ववेद, १४।२।४३)

तुम दोनों पति-पत्नी हास्य विनोद करते हुए, महत्त्व की बातों से आनन्दित होते हुए सुखदायक शयन मन्दिर से प्रातः प्रसन्नतापूर्वक जागते हुए, अच्छी संतान, अच्छे पशु और अच्छे सुन्दर घर को रखते हुए प्रकाशमय शुभ उषाओं को सुखपूर्वक पार करो अर्थात् सुख भोगते हुए प्रेमपूर्वक दीर्घ आयुष्य के दिन व्यतीत करो ।

May you two, awaking both in your pleasant chamber,
filled with laughter and cheer, and enjoying
mightily, having good sons, a good home,
and good cattle. pass the shining mornings

इमां त्वमिन्द्र मीढ्वः सुपुत्रां सुभगां कृणु । दशास्यां पुत्रानां धेहि पतिमेकादशं कृधि ॥४॥ (ऋग्वेद १०।८५।४५)

हे इन्द्र देव ! हे उदार शक्तिशाली ! इस को (नवविवाहिता पत्नी को) उत्तम एश्वर्य से युक्त, उत्तम पुत्रों की माता बना । तू इस के लिए दस पुत्रों का आधान कर और इस के पति को उन में (उनके बीच) ग्यारहवाँ बना ।

Make her, thou bounteous Indra,
a good and graceful mother of sons; grant her
good fortune; give her ten sons
and make her husband the eleventh among them.

पूषा त्वेतो नयतु हस्तगृह्याऽश्विना त्वा प्र वहतां रथेन । गृहान् गच्छ गृहपत्नी यथासो वशिनी त्वं विदथमा वदासि ॥५॥

(ऋग्वेद १०।८५।२६; अथर्ववेद १४।१।२०)

पूषा तुझे हाथ से पकड़ कर यहाँ से ले जाये, अश्विनी देव तुम्हें रथ में बिठा कर (पति के घर में) पहुंचायें । घर की स्वामिनी बन कर पति के घर में जाओ । वहाँ सब को अपने वश में रखने वाली बन कर तुम उत्तम ज्ञान की बातें करो ।

May Pushan lead thee by the hand, from here
may Ashwins transport thee in their Chariot.
Go to the house as mistress of your lord. Ruler
of the house thou wilt address the assembly.

अथर्ववेद में 'पूषा' के स्थान पर 'भगः' पाठ है ।

अघोरचक्षुरपतिघ्न्येधि शिवा पशुभ्यः सुमनाः सुवर्चाः ।
वीरसूर्देवकामा स्योना शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे॥६॥

ऋग्वेद १०।८५।४४

हे स्त्री ! तू क्रूरतारहित चक्षुओं वाली, सौम्य दृष्टि वाली और पति की हत्या न करने वाली हो कर रह। तू पशुओं के लिए कल्याण-कारिणी, शुभ मन वाली, उत्तम तेज वाली, वीर पुत्रों को जन्म देने वाली, देवताओं की कामना (प्रार्थना) करने वाली और सुखकारिणी बन। तू हमारे दोपायों (परिवार के सदस्यों) के लिए और हमारे चौपायों (पशुओं) के लिए भी शांतिदायक हो।

Come thou, not with evil eyes, not a cause of thy husband's death;
good to animal, kind-hearted, glorious,
a mother of heroes, loving of the Devas,
pleasant, gracious to bipeds and quadrupeds.

आशासाना सौमनसं प्रजां सौभाग्यं रयिम् ।
पत्युरनुव्रता भूत्वा सं नह्यस्वामृताय कम् ।७।

(अथर्ववेद १४।१।४२)

उत्तम मन (प्रेम), संतान, सौभाग्य और धन की आशा करने वाली तू पति के अनुकूल आचरण वाली हो कर अमरत्व के लिए अच्छी प्रकार सन्नद्ध हो।

Hoping for love, children, fortune, wealth,
and by being always behind
thy husband in his life's vacation,
gird thyself for immortality.

इह प्रियं प्रजया ते समृध्यतामस्मिन् गृहे गार्हपत्याय जागृहि। एना पत्या तन्वं सं सृजस्वाऽधा जिव्री विदथमा वदाथः[1] ॥८॥ (ऋग्वेद १०।८५।२७; अथर्ववेद १४।१।२१)

यहाँ तुम्हारी संतान के द्वारा (के लिए) प्रिय भाव (प्रेम) की वृद्धि हो। इस घर में गृहस्थ धर्म के लिए तू जागती रह (सावधान रह)। इस पति के साथ तू अपने शरीर का स्पर्श कर अर्थात् पति के साथ शारीरिक सम्बन्ध रख। वृद्ध होने पर तुम दोनों (पति-पत्नी) उत्तम उपदेश करो।

Thou be happy and prosperous
May with thy children,
be watchful in this house in ruling the household,
unite thyself completely with this man thy husband,
and then, both growing old address the assembly.

ये वध्वश्चन्द्रं वहतुं यक्ष्मा यन्ति जनादनु[2]।
पुनस्तान् यज्ञिया देवा नयन्तु यत आगताः ॥६॥
(ऋग्वेद १०।८५।३१; अथर्ववेद १४।२।१०)

जो रोग मनुष्यों के सम्बन्ध से वधू के तेजस्वी दहेज के रथ के निकट पहुँचते हैं उन रोगों को यहाँ आये हुए यज्ञ के देव फिर वहीं ले जायें जहाँ से वे आये थे।

The diseases, which through various folk,
attack the grand bridal train
may the holy Devas take them
back to the place from where they came.

---

१. अथर्ववेद में 'वदाथः' के स्थान पर 'वदासि', 'प्रजया' के स्थान पर 'प्रजायै' और 'संसृजस्व' के स्थान पर 'संस्पृशस्व' पाठ है।

२. अथर्ववेद में 'जनादनु' के स्थान पर 'जनाँ अनु' पाठ है।

इदं हिरण्यं गुल्गुल्वयमौक्षो अथो भगः ।
एते पतिभ्यस्त्वामदुः प्रतिकामाय वेत्तवे ।१०।

(अथर्ववेद २।३६।७)

यह उत्तम सुवर्ण है, यह गाय और बैल हैं, यह धन और ऐश्वर्य है । ये सब हम तुम्हारे पति के लिए देते हैं, तुम्हें पति प्राप्त हो ।

Here is gold and this bullock,
here wealth and this bliss,
May these bring thee to the suitors,
to find one worthy of thy Choice.

मा विदन् परिपन्थिनो य आसीदन्ति दम्पती ।
सुगेभिर्दुर्गमतीतामप द्रान्त्वरातयः ।११।

(ऋग्वेद १०।८५।३२; अथर्ववेद १४।२।११)

जो मार्ग के बाधक लुटेरे समीप प्राप्त हों वे इस पति-पत्नी को न जान पायें । ये वरवधू सुगमता से कठिन प्रसंग से पार हो जायें । और इन के शत्रु दूर भाग जायें ।

Let not the highwaymen who lie in ambush,
find the wedded couple; may they
pass the danger through pleasant paths;
let the malignant run away.

पुनः पत्नीमग्निरदादायुषा सह वर्चसा ।
दीर्घायुरस्या यः पतिर्जीवाति शरदः शतम् ।१२।

(ऋग्वेद १०।८५।३९; अथर्ववेद १४।२।२)

अग्नि देव ने दीर्घ आयु और तेज के साथ पत्नी को पुनः प्रदान किया है । इस का जो पति है वह दीर्घायु बन कर सौ वर्ष तक जीवित रहे ।

Agni has given him the wife
with long life and brilliance,
long-lived be he who is her husband,
may he live a hundred autumns.

न देवानामपि ह्नुतः सुमतिं न जुगुक्षतः ।
श्रवो बृहद् विवासतः ॥१३॥ (ऋग्वेद ८।३१।७)

देवों के बीच रहते हुए वे कभी कुटिल व्यवहार न करें और देवों की अथवा अपनी सुमति को कभी न छिपाएं अर्थात् एक-दूसरे को उत्तम ज्ञान दें । वे महान् यश को अथवा श्रवणयोग्य ज्ञान को प्रकाशित करें (प्राप्त करें) ।

They should not go astray from Devas
nor should they conceal favour of the Devas,
they should win great glory for themselves.

पुत्रिणा ता कुमारिणा विश्वमायुर्व्यश्नुतः ।
उभा हिरण्यपेशसा ।१४। (ऋग्वेद ८।३१।८)

वे दोनों (पति-पत्नी) पुत्रों वाले और पुत्रियों वाले हो कर अर्थात् माता-पिता बन कर पूर्ण आयु का भोग करें और दोनों सुवर्ण के उत्तम अलंकार धारण करें ।

With sons and daughters by their sides,
may they enjoy the full span of life,
both decked with ornaments of gold.

वीतिहोत्रा कृतद्वसू दशस्यन्तामृतायकम् ।
समूधो रोमशं हतो देवेषु कृणुतो दुवः ।१५।
(ऋग्वेद ८।३१।९)

विशेष ज्ञान युक्त वाणी को बोलते हुए वे उत्तम धन का दान किया करें और अमरता को प्राप्त करें । पारस्परिक प्रेम रखते हुए और उत्तम सन्तान को उत्पन्न करते हुए वे देवों की सेवा करें ।

Inviting them to joys, offering wealth,
they should worship together for immotality,
and be united through mutual love
and should offer worship to the Devas.

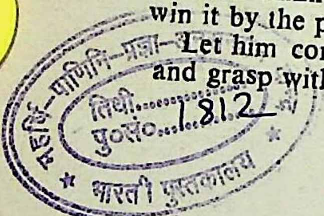
१४ धर्मपूर्वक धन की प्राप्ति

(Right way to wealth)

परि चिन्मर्तो द्रविणं ममन्यादृतस्य पथा नमसा विवासेत्। उत स्वेन क्रतुना सं वदेत श्रेयांसं दक्षं मनसा जगृभ्यात्॥१॥ (ऋग्वेद १०।३१।२)

मनुष्य धन को चारों ओर से प्राप्त करने का विचार करे और उसे सत्य, न्याय के मार्ग से तथा भगवान् की पूजा से प्राप्त करे। वह अपने उत्तम ज्ञान से परामर्श करे तथा अपने मन से कल्याणकारक धन और योग्यता को पाए।

Let a man think well of wealth, and try to
win it by the path of Law and by worship of God.
Let him consult his own intellect
and grasp with his mind greater ability.



भूर्भुवः स्वः सुप्रजाः प्रजाभिः स्याम सुवीरा वीरैः सुपोषाः पोषैः॥२॥ (यजुर्वेद ८।५३)

हम भूलोक, अन्तरिक्ष लोक और द्युलोक के लाभ से युक्त हों एवं सन्तानों से अच्छी सन्तान वाले, वीरों से अच्छे वीरों वाले तथा पोषक पदार्थों से अच्छे पोषण अथवा भोज्य पदार्थों वाले हों।

Earth, Ether, Sky!
May we be proud of fine heroic children,
proud fathers of fine heroes,
and be well nourished by fine food.

१५ विविध व्यवसाय

(Various Vocation)

नानानं वा उ नो धियो वि व्रतानि जनानाम् । तक्षा रिष्टं रुतं भिषग् ब्रह्मा सुन्वन्तमिच्छतीन्द्रायेन्दो परि स्रव ।१। (ऋग्वेद ९।११२।१)

हमारी बुद्धियाँ नाना प्रकार की हैं। मनुष्यों के कर्म भी नाना प्रकार के हैं। बढ़ई लकड़ी की टूटी हुई वस्तुओं को चाहता है जोड़ने के लिए, वैद्य रोगी को चाहता है उसे नीरोग करने के लिए, ब्रह्मा वेदज्ञ पुरोहित सोम रस निकालने वाले को अथवा सोम यज्ञ करने वाले को चाहता है। हे इन्दु सोम, ऐश्वर्य ! तुम इन्द्र के लिए बहो, आगे बढ़ो।

Various are the thoughts and diverse
the vocations of man : the carpenter
seeks what's broken, the physician,
the diseased, the priest, the soma-presser,
Flow, Indu, flow on for Indra.

कारुरहं ततो भिषगुपलप्रक्षिणी नना। नानाधियो वसूयवोऽनु गाइव तस्थिमेन्द्रायेन्दो परि स्रव ।२।
(ऋग्वेद ९। ११२।३)

मैं शिल्पकार (कलाकार) हूँ। मेरा पिता रोगों की चिकित्सा करने वाला वैद्य है। मेरी माता आटा पीसने वाली चक्की पर अनाज डालती है। हम सभी लोग धन की इच्छा करते हुए नाना कर्म करते हुए उसी प्रकार तुम्हारी आज्ञा के अनुसार कार्य करते हैं जिस प्रकार गौएं गोपालक की इच्छानुसार आचरण करती हैं। हे इन्दो ! तुम इन्द्र के लिए प्रस्रवित होवो।

I am a bard, my father is a physician,
Mother throws the corn on the grind-stone,
pursuing wealth in different ways
we follow our callings as the herdsman cows.
Flow, Indu flow on for Indra.

इमा याः पञ्च प्रदिशो मानवीः पञ्च कृष्टयः ।
वृष्टे शापं नदीरिवेह स्फातिं समावहान् ।३।

(अथर्ववेद ३।२४।३)

ये जो पाँच दिशाएं हैं और जो उन में रहने वाली मनुष्यों की पांच जातियाँ हैं वे यहाँ वृद्धि को उसी प्रकार प्राप्त करें जिस प्रकार वृष्टि होने के कारण नदियाँ सब कुछ भर लाती हैं ।

Let these five quarters of the globe,
all the five races of mankind
bring us full prosperity
as, after rains, the river brings up floating wood.

कृषि (Ploughing)

क्षेत्रस्य पतिना वयं हितेनेव जयामसि ।
गामश्वं पोषयित्न्वा स नो मृळातीदृशे ।४।

(ऋग्वेद ४।५७।१)

मित्र के समान हितकारी क्षेत्रपति की सहायता से हम खेतों को जीतें अर्थात् प्राप्त करें । वह क्षेत्रपति (देव) हमें गौएं, घोड़े और पुष्टिकारक धन प्रदान करे तथा उन धनों से हमें सुखी करे ।

May we with the Lord of the field,
as with a friend, win the food
that nourishes our cows and horses.
May he, in this way, be gracious to us.

कृषन्नित् फाल आशितं कृणोति यन्नध्वानमप वृङ्क्ते चरित्रैः। वदन् ब्रह्माऽवदतो वनीयान् पृणन्नापिर-पृणन्तमभि ष्यात् ।५। (ऋग्वेद १०।११७।७)

खेत जोतता हुआ फाल (फाल युक्त हल) किसान को अन्नभोक्ता बनाता है अर्थात् फाल से मनुष्य खाने योग्य अन्न को उत्पन्न करता है। जो पैरों से मार्ग पर चलता है वह दूर तक चला जाता है अर्थात् यात्रा समाप्त कर गन्तव्य लक्ष्य तक पहुँच जाता है। प्रवचन करता हुआ वेदज्ञ ब्राह्मण न उपदेश करने वाले से अधिक अच्छा और सत्कार योग्य है। अन्नादि से दूसरों को तृप्त करने वाला उदार बन्धु न देने वाले अनुदार से बढ़ कर है।

The plough-share ploughing fields produces food,
while a man rambles along the road on foot,
the speaker who knows the Veda is better than one who does not,
similarly the liberal kinsman surpasses the illiberal.

शुनं नः फाला वि कृषन्तु भूमिं शुनं कीनाशा अभि-यन्तु वाहैः। शुनं पर्जन्यो मधुना पयोभिः शुनासीरा शुनमस्मासु धत्तम् ।६। (ऋग्वेद ४।५७।८)

हल के फाले हमारी भूमि को सुखपूर्वक जोतें, किसान अपने बैलों के साथ सुखपूर्वक चलें, मेघ अपने मधुर जलों से हमारे लिए सुखकारी हों, इन्द्र और वायु अथवा शुना और सीर हमें सुख प्रदान करें।

May the plough-shares turn the soil happily,
and may the plough-man go with the oxen merrily,
May Parjanya sprinkle the earth with honey & water,
May Shuna & Sira, grant us prosperity.

कृषि गान (Harvest Song)

पयस्वतीरोषधयः पयस्वन्मामकं वचः ।
अथो पयस्वतीनामा भरेऽहं सहस्रशः ।७।

(अथर्ववेद ३।२४।१)

ओषधियां रसवाली हैं, मेरा वचन भी सरस और मधुर है, इस लिए रस वाली ओषधियों का हज़ारों प्रकार से मैं भरण-पोषण करता हूँ।

Full of sweetness are the plants of earth
and full of sweetness are my words,
With the things that are full of sweetness
may I prosper in a thousand ways.

मधुमतीरोषधीर्द्याव आपो मधुमन्नो भवत्वन्तरिक्षम् । क्षेत्रस्य पतिर्मधुमान् नो अस्त्वरिष्यन्तो अन्वेनं चरेम ।८। (ऋग्वेद ४।५७।३)

ओषधियां और वनस्पतियां हमारे लिए मिठास से भरपूर हों। द्युलोक, जल और अन्तरिक्ष हमारे लिए मधुर हों। क्षेत्र का पति भी हमारे लिए मधुरता से युक्त हो। किसी प्रकार से भी हिंसित न होते हुए हम इस क्षेत्रपति का अनुसरण करें।

Sweet be the herbs and waters to us,
and full of sweetness be the mid-air to us.
Let the Lord of the field be sweet to us,
and may we follow him uninjured.

शुनं वाहाः शुनं नरः शुनं कृषतु लाङ्गलम् ।
शुनं वरत्रा बध्यन्तां शुनमष्ट्रामुदिङ्गय ।९।

(ऋग्वेद ४।५७।४)

हमारे घोड़े, बैल आदि वाहन सुखकारी हों, सुखपूर्वक काम करें, मनुष्य हमारे लिए सुखकारी हों, हल सुखपूर्वक खेतों को जोते, जुवें आदि सुखपूर्वक बाँधे जाएं, उन पर (घोड़े, बैल आदि पशुओं पर) चाबुक आदि नम्रता से उठाई जाये (अत्याचार पूर्वक क्रूरता से नहीं)।

May the bulls and horses be means of happiness to us,
may our men be happy with us,
may happy the plough furrow,
May the yoke be means of happiness
and may the whip be full of mercy.

उदुत्सं शतधारं सहस्रधारमक्षितम् ।
एवास्माकेदं धान्यं सहस्रधारमक्षितम् ।१०।

(अथर्ववेद ३।२४।४)

जैसे (वृष्टि होने पर) सैकड़ों और हजारों धाराओं में प्रवाहित हो कर झरना अक्षय रहता है, उसी प्रकार हमारा यह धान्य भी हजारों धाराओं में देता हुआ भी अक्षय हो।

As a fountain rises in a
hundred and thousand streams
and remains exhaustless,
so may our corn flow in a thousand streams
and remain exhaustless.

ये धीवानो रथकाराः कर्मारा ये मनीषिणः।
उपस्तीन् पर्ण मह्यं त्वं सर्वान् कृण्वभितो जनान्॥११॥
(अथर्ववेद ३।५।६)

जो बुद्धिमान् रथ बनाने वाले हैं और जो बुद्धिमान् लुहार हैं, हे पर्णमणे ! तू उन सब जनों को मेरे चारों ओर उपस्थित कर।

Those talented chariot-makers
and the skilful blacksmiths—
make them and all from every side,
O Parna, obedient to my will.

जरतीभिरोषधीभिः पर्णेभिः शकुनानाम्।
कार्मारो अश्मभिर्द्युभिर्हिरण्यवन्त-
मिच्छतीन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥१२॥
(ऋग्वेद ६।११२।२)

जैसे जीर्ण होने पर परिपक्व औषधियों से, पक्षियों के पंखों से और तीक्ष्ण पाषाण-खण्डों से वाणादि वस्तुओं को बनाकर क्रियाकुशल शिल्पी धन-सम्पन्न (सुवर्णयुक्त) को चाहता है वैसे ही हे इन्दु ! (तेजस्विन् सोम) तुम इन्द्र के लिए प्रस्रवित होवो।

The smith, with his bellows made of
sipe plants and feathers of brids,
and with the sharpened stones that shine,
desires the man possessing gold.
Flow, Indu, flow on for Indra.

वाणिज्य (Merchant's prayer)

इन्द्रमहं वणिजं चोदयामि स न ऐतु पुरएता नो अस्तु । नुदन्नरातिं परिपन्थिनं मृगं स ईशानो धनदा अस्तु मह्यम् ॥१३॥ (अथर्ववेद ३।१५।१)

मैं वणिक् इन्द्र को प्रेरित करता हूँ । वह हमारे पास आए और हमारा नेता बने । मार्ग पर लूट करने वाले और पाशवी शक्ति से शत्रु को अलग करता हुआ वह समर्थ मुझे धन देने वाला हो ।

I arouse Indra, the Merchant,
may he come to us and be our guide and leader,
driving out the men with ill-will, the robber
and wild hearts,
may he, the mighty, give me riches.

येन धनेन प्रपणं चरामि धनेन देवा धनमिच्छमानः । तन्मे भूयो भवतु मा कनीयोऽग्ने सातघ्नो देवान् हविषा नि षेध ॥१४॥ (अथर्ववेद ३।१५।५)

हे देवो ! मूल धन से लाभ के धन की प्राप्ति की इच्छा करता हुआ मैं जिस धन से व्यापार करता हूँ वह मेरे लिए और अधिक हो, वह कम न हो । हे अग्ने ! हवन से युक्त हो कर लाभ का नाश करने वालों का तू निषेध कर ।

The wealth with which I carry on my trade,
seeking, Devas, wealth through wealth,
may that grow more for me and not less.
Agni, through sacrifice, check those who
spoil our earnings.

जुआ मत खेलो (Do not gamble)

अक्षैर्मा दीव्यः कृषिमित् कृषस्व वित्ते रमस्व बहु मन्यमानः। तत्र गावः कितव तत्र जाया तन्मे वि चष्टे सवितायमर्यः ॥१५॥ (ऋग्वेद १०।३४।१३)

हे कितव ! (जुआरी !) जुआ मत खेल । खेती कर और उस से प्राप्त फल को बहुत समझते हुए अपने धन का उपयोग कर । वहां गौएं हैं, वहां तेरी पत्नी है उन्हें देख । श्रेष्ठ सविता सृष्टिकर्ता परमेश्वर ने स्वयं मुझे यह उपदेश दिया ।

Do not play with dice, cultivate thy corn fields,
take delight in the gain, thinking highly of it.
These are thy cattle, gambler, there is thy wife."
So has the noble Savita himself told me.

१६. गृहस्थ और गौएं

(The house-holders and cows)

आ गावो अग्मन्नुत भद्रमक्रन्त्सीदन्तु गोष्ठे रणयन्त्वस्मे । प्रजावतीः पुरुरूपा इह स्युरिन्द्राय पूर्वीरुषसो दुहानाः ॥१॥ (ऋग्वेद ६।२८।१)

गृहस्थ आश्रम में गौएं हमें प्राप्त हुई हैं और उन्होंने हमारा कल्याण किया है । वे यहाँ इस गौशाला में ठहरें और हमें आनन्दपूर्ण तथा प्रसन्न करें । वे उत्तम सन्तान (बछड़ों) वाली, सुन्दर रूप वाली गौएं श्रेष्ठ उषाकाल में इन्द्र के लिए दूध देने वाली, कामनाओं को पूर्ण करने वाली हों ।

The cows have come and brought us good luck,
may they stay in the stall and be pleased with us,
may they, mothers of calves, many-coloured, live here
and yield milk for Indra on many dawns.

गावो भगो गाव इन्द्रो मे अच्छान् गावः सोमस्य प्रथमस्य भक्षः । इमा या गावः स जनास इन्द्र इच्छामीद्धृदा मनसा चिदिन्द्रम् ।२। (ऋग्वेद ६।२८५)

मेरे लिए गौएं ही भग (ऐश्वर्य) हैं, गौएं ही इन्द्र हैं, गौएं ही प्रथम (सर्वश्रेष्ठ) सोम सेवनीय भाग हैं इन्द्र मेरे लिए गौएं प्रदान करें । हे लोगो ! ये जो गौएं, (भूमियाँ, सूर्यरश्मियां, गौएं, वेदवाणियां आदि) हैं वे ही इन्द्र हैं जिसे मैं हृदय से और मन से चाहता हूँ ।

To me the cows are Bhaga, they are Indra,
they are a part of the first poured Soma.
These that are cows are Indra, O pepole ;
Indra I long for with heart and spirit.

प्रजावतीः सूयवसं रिशन्तीः शुद्धा अपः सुप्रपाणे पिबन्तीः । मा वः स्तेन ईशत माघशंसः परि वो हेती रुद्रस्य वृज्याः ।३। (ऋग्वेद ६।२८।७)

उत्तम बछड़ों वाली, उत्तम जौ आदि को खाने वाली, उत्तम घाटों पर शुद्ध जल को पीती हुई गौएं (सुरक्षित रहें)। हे गौओ! चोर तुम पर शासन न करे, पापी पुरुष तुम पर आधिपत्य न जमाये; रुद्र के शस्त्रास्त्र तुम्हारी रक्षा करें।

May you, cows, have many calves, graze on good pastures,
drink water at good drinking places,
may not the thieves and the wicked persons master you,
may the darts of Rudra leave you aside.

धनूर्जिन्वतमुत जिन्वतं विशो हतं रक्षांसि सेधतममीवाः । सजोषसा उषसा सूर्येण च सोमं सुन्वतो अश्विना ।४। (ऋग्वेद ८।३५।१८)

गौओं की और उन्हें पुष्ट करने वाली अन्न, घास, जल आदि वस्तुओं की वृद्धि करो और प्रजाओं की वृद्धि करो, उन्हें सन्तुष्ट करो। दुष्टों और राक्षसों को मारो तथा रोगों को दूर करो । हे अश्विदेवो! आप उषा और सूर्य के साथ सोम रस निकालने वाले अथवा सोम सवन (यज्ञ) करने वाले द्वारा निकाले गये सोम का पान करो।

**Animate the milch cow to put strength in the people.
Drive out the robbers and remove disease.
Come accordant with Ushas and Surya,
and partake of the Soma, Ashvins!**

(१७) धनान्नदानम्

(Spport of the needy with wealth and food)

न वा उ देवाः क्षुधमिद्वधं ददुरुताशितमुप गच्छन्ति मृत्यवः। उतो रयिः पृणतो नोप दस्यत्युतापृणन् मर्डितारं न विन्दते।१। (ऋग्वेद १०।११७।१)

देवों ने निश्चय ही भूख को हमारी मृत्यु नहीं बनाया। भर पेट खा चुके मनुष्य के पास मृत्युएं अनेक रूपों में आती हैं। दूसरे को अन्न धन आदि से तृप्त करने वाले का अर्थात् उदार दानी व्यक्ति का धन क्षीण नहीं होता। दूसरे को अन्नादि से तृप्त न करने वाला सुख देने वाले (ईश्वर) को नहीं पा सकता।

Devas have not given hunger to be our death:
even to the well-fed man death comes in many forms
The wealth of the liberal never wastes away,
he who does not protect others finds no consoler.

य आध्राय चकमानाय पित्वोऽन्नवान्त्सन् रफितायोप-जग्मुषे। स्थिरं मनः कृणुते सेवते पुरोतो चित् स मर्डितारं न विन्दते।२। (ऋग्वेद १०।११७।२)

जो अन्न वाला होता हुआ भी दरिद्र और दुर्बल के लिए हिंसित तथा रोगादि से पीड़ित व्यक्ति के लिए, शरण में आये हुए के लिए और अन्न की कामना करते हुए व्यक्ति के लिए मन को दृढ़ बना लेता है अर्थात् कुछ नहीं देता, अपितु स्वयं पहले ही अन्न का सेवन कर लेता है, वह व्यक्ति सुख देने वाले (परमात्मा) को नहीं पा सकता।

He who, having food, hardens his heart against
the weak carving nourishment, and suffering
who comes to him for help, though of old he
helped him
—surely such a person finds no consoler.

स इद्भोजो यो गृहवे ददात्यन्नकामाय चरते कृशाय।
अरमस्मै भवति यामहूता उतापरीषु कृणुते सखायम् ।३।

(ऋग्वेद १०।११७।३)

वह उदार भोजन दाता है जो चाहने वाले अर्थात् भोजन प्राप्ति की कामना करने वाले, अन्न चाहने वाले, भटकने और इधर-उधर फिरने वाले, निर्बल के लिए देता है। याम अर्थात् समय पर (आवश्यकता-पर) उस अन्नदाता के लिए अन्न स्वतः प्राप्त हो जाता है। और वह अन्य प्रजाओं में अपने आप को मित्र बनाता है। अर्थात् उस उदार व्यक्ति के सब मित्र बन जाते हैं।

He is liberal who gives to one who asks for alms,
to the distressed man who seeks food, wandering;
He meets the challenge and succeeds in the battle of life
and for future conflicts he makes a friend of him.

न स सखा यो न ददाति सख्ये सचाभुवे सचमानाय पित्वः। अपास्मात् प्रेयान्न तदोको अस्ति पृणन्तम-न्यमरणं चिदिच्छेत् ।४। (ऋग्वेद १०।११७।४)

वह मित्र नहीं है जो साथ रहने वाले, अवसर पर साथ देने वाले अथवा अन्न चाहने वाले मित्र के लिए अन्न नहीं देता। वह उस से अलग हो जाता है और उसे रहने के योग्य नहीं मानता। वह सद्भाव से तृप्त करने वाले अन्य व्यक्ति को पाना चाहता है जो उसे सुख देता है।

He is no friend who does not give to a friend,
to a comrade who comes to him imploring for food;
let him leave such a man---his is not a home—
and rather seek a stranger who brings him comfort.

पृणीयादिन्नाधमानाय तव्यान् द्राघीयांसमनु पश्येत पन्थाम् । ओ हि वर्तन्ते रथ्येव चक्राऽन्यमन्यमुप तिष्ठन्त रायः ।५। ऋग्वेद १०।११७।५

समृद्ध धनवान् को चाहिए कि वह प्रार्थना करने वाले अतिथि को अन्नादि से तृप्त करे और दूर तक उदारता के मार्ग को देखे (समझे), क्योंकि धन-सम्पत्तियां रथ के पहियों के समान सदा आवर्तन किया करती हैं अर्थात् किसी एक के पास सदा के लिए स्थिर नहीं रहतीं, अन्य के पास आती-जाती रहती हैं ।

Let the rich man satisfy one who seeks help,
and let him look upon a longer pathway,
wealth revolves like the wheels of a Chariot,
Coming now to one and then going to the other.

मोघमन्नं विन्दते अप्रचेताः सत्यं ब्रवीमि वध इत्स तस्य । नार्यमणं पुष्यति नो सखायं केवलाघो भवति केवलादी ।६। ऋग्वेद १०।११७।६

अप्रचेता अर्थात् मूर्ख बेसमझ मनुष्य अन्न को व्यर्थ प्राप्त करता है । मैं सच कहता हूँ कि वह धन-अन्न का लाभ उस के लिए वध अर्थात् मौत ही है । जो व्यक्ति अपने धन से न तो माननीय जनों की पुष्टि करता है और न ही मित्र की पालना करता है वह अकेला खाने वाला केवल पाप खाने वाला होता है ।

Foolish man acquires food in vain,
it is—I speak the truth—verily his death,
he does not support a comrade or a friend.
He is all sin who eats all alone.

शतहस्त समाहर सहस्रहस्त सं किर ।
कृतस्य कार्यस्य चेह स्फातिं समावह ।७। (अथर्ववेद ३।२४।५)

हे सौ हाथों वाले मनुष्य ! इकट्ठा कर के ले आ । हे हज़ारों हाथों वाले मनुष्य ! उसे बिखेर दो, उस का दान कर दो । किये हुए कार्य की यहाँ वृद्धि कर ।

O thou hundred-handed gather, wealth !
O thou thousand-handed, pour it out !
Bring together the abundant corn
that is reaped or waits to be reaped.

तद् यस्यैवं विद्वान् व्रात्योऽतिथिर्गृहानागच्छेत् ।८।
स्वयमेनमभ्युदेत्य ब्रूयाद् व्रात्य क्वाऽवात्सी व्रात्यो-दकं व्रात्य तर्पयन्तु व्रात्य यथा ते प्रियं तथास्तु व्रात्य यथा ते वशस्तथास्तु यथा ते निकामस्तथास्त्विति ।।६।।
अथर्ववेद १५।११।१-२।

इस प्रकार का विद्वान् व्रतपालक अतिथि जिस के घर में आये, वह स्वयं उस के समीप जा कर बोले कि हे व्रात्य ! व्रतपालक ! आप कहां रहे ? अर्थात् कहाँ से पधारे हैं ? हे व्रात्य ! यह जल आप के लिए है । हे व्रात्य ! ये जल अथवा घर के लोग आपको तृप्त करें । हे व्रात्य ! जो आप को प्रिय हो वही हो । हे व्रात्य ! जैसी आप की इच्छा हो वैसा ही हो । हे व्रात्य ! जैसी आप की कामना अभिलाषा हो वैसा ही हो ।

Let him to whose house the Vratya (Pravrajaka) who possesses the knowledge of Divine rule, comes as a guest, rise up of his own accord to meet him and say : "Vratya, where did you stop overnight ? Vratya, here is water. Let them refresh thee, Vratya; whatever thou likest, let that be Vratya, whatever thy wish, let that be Vratya, as thou desirest, so let it be."

१८। आरोग्य

(Health)

वाङ् म आसन्नसोः प्राणश्चक्षुरक्ष्णोः श्रोत्रं कर्णयोः ।
अपलिताः केशा अशोणा दन्ता बहु बाह्वोर्बलम् ।१।

(अथर्ववेद १९।६०।१)

हे परमात्मन् ! मेरे मुख में वाणी की शक्ति हो, नासिका में प्राणशक्ति [जीवन शक्ति] हो, आंखों में देखने की शक्ति हो, कानों में श्रवण शक्ति हो, मेरे केश सफेद न हों, दाँत मलरहित हों, भुजाओं में बल हो ।

May there be voice in my mouth, breath in my nostrils,
sight in my eyes, hearing in my ears,
may my hair not turn grey or my teeth turn purple.
n ay I have much strength in my arms.

ऊर्वोरोजो जङ्घयोर्जवः पादयोः ।
प्रतिष्ठा अरिष्टानि मे सर्वात्मानिभृष्टः ।२।

(अथर्ववेद १९।६०।२)

उरुओं में ओज शक्ति हो, जंघाओं में वेग हो, पैरों में प्रतिष्ठा (स्थिरता) हो, मेरे सब अंग नीरोग हों, मेरा सम्पूर्ण शरीर निर्दोष और अजेय हो ।

May I have power in my thighs, swiftness in my legs,
steadiness in my feet.
May all my limbs be uninjured,
and my soul remain unconquered.

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतँ शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ।३।

(यजुर्वेद ३६।२४)

देवों के लिए हितकर अथवा देवों द्वारा स्थापित प्रकाशमान् सूर्य रूपी आँख सामने उदय हुई है। हम सौ वर्ष तक उसे (सूर्य रूपी ब्रह्म-ज्योति को) देखते रहें । हम सौ वर्ष तक जीते रहें । हम सौ वर्ष तक सुनते रहें। हम सौ वर्ष तक बोलते रहें । हम सौ वर्ष अदीन बन कर रहें। हम सौ से भी अधिक वर्षों तक इसी प्रकार बने रहें ।

That Eye of the sky, divinely placed, rising bright before us,
may we see for a hundred autumns,
And may live for a hundred autumns,
may we hear for a hunded autumns,
may we speak for a hundred autumns,
and may we hold our heads high for a hundred autumns.

१६ पारिवारिक और सामाजिक अनुकूलता

(Family and social concord)

अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः ।
जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शन्तिवाम् ॥१॥
(अथर्ववेद ३।३०।२)

पुत्र पिता के अनुकूलव्रती हो कर माता के साथ एक मन वाला हो अर्थात् पुत्र माता-पिता के अनुकूल हो। पत्नी पति के प्रति मधुर और शान्तिप्रद वचन बोले।

पुत्र सदा अनुकूल रहें निज मात-पिता के।
पत्नी बोले मधुर शान्त वच अपने पिया से।

Let son be loyal to his father
and be of one mind with his mother:
Let wife speak to her husband
words which are sweet, gentle and kind.

मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्मा स्वसारमुत स्वसा ।
सम्यञ्चः सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया ॥२॥
(अथर्ववेद ३।३०।३)

भाई भाई के साथ द्वेष न करे और बहिन बहिन के साथ द्वेष न करे। वे एक मत वाले और एक व्रत हो कर कल्याणी रीति से वाणी को बोलें।

भाई बहिनें करें द्वेष न कभी परस्पर ।
हो अनुकूल एकव्रती वे मिलें परस्पर ॥
मंगलमय और मधुर वचन वे बोलें मिलकर ।
लक्ष्य सभी का सख्य भाव युत होवे हितकर ॥

Let not brother hate a brother,
nor sister hate a sister.
Unanimous, with one intent,
they should speak friendly words.

(ख) सामाजिक अनुकूलता (Social concord)

संगच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते॥१॥
(ऋग्वेद १०।१९१।२)

हे मनुष्यो ! आप सब परस्पर मिल कर चलो; परस्पर मिल कर संवाद करो, बातचीत करो; आप सब के मन सहमत अर्थात् समान ज्ञान वाले हों; जैसे पूर्व देव एक मन हो कर अपने भाग का सेवन कर रहे हैं अर्थात् अपना कर्तव्य पालन करते हुए विश्व को धारण किये हुए हैं वैसे ही आप भी एक मन हो कर कर्त्तव्य-पालन करो ।

प्रेम से मिल कर चलो, बोलो, सभी ज्ञानी बनो ।
देवगण की भाँति, तुम कर्तव्य के मानी बनो ॥

Move together, speak together,
let your minds be of one accord,
as the Devas of old, being of one mind,
accepted their share in performance of worship.

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम् । समानं मन्त्रमभि मन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि ॥२॥ (ऋग्वेद १०।१९१।३)

आप सब के विचार समान हों, समिति अर्थात् कार्यक्षेत्र में कार्य-प्रवृत्ति समान हो और सब के मन और चित्त समान हों; आप सब के लिए मैं समान मन्त्र (उद्देश्य) को अभिमन्त्रित करता हूँ (जिससे आप सब का कल्याण हो), और समान हवि से अर्थात् यज्ञाहुति की समान भावना से आहुत अर्थात् स्वीकार करता हूँ ।

हों विचार समान सब के, चित्त मन सब एक हों ।
ज्ञान देता हूँ बराबर, भोग पा सब नेक हों ॥

May your thoughts be common, the place of assembly
common,
common the mind and hearts of all united;
A common purpose do I lay before you,
and common provisions for common worship.

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ॥३॥
(ऋग्वेद १०।१९१।४; अथर्ववेद ६।६४।३)

आप सब की आकूति=चित्तवृत्ति एक समान हो; आप सब के हृदय अर्थात् हृद्गत भाव एक समान हों, आप सब का मन एक समान हो जिस से आप सब में सह-अस्तित्व की भावना उत्पन्न हो।

हों सभी के लक्ष्य औ' संकल्प अविरोधी सदा।
मन सदा हों एक-से औ' एक-सी हो भावना॥

Let your thoughts and spirit be common,
and your hearts be of one accord;
Let all of you be of one mind,
so that you may live well together.

सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः।
अन्यो अन्यमभिहर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या ॥४॥
(अथर्ववेद ३।३०।१)

हे मनुष्यो ! मैं (ईश्वर) तुम सब को समान हृदय वाला, समान मन वाला और द्वेष आदि की भावना से रहित करता हूँ। हनन के अयोग्य गौ जैसे उत्पन्न हुए बछड़े से प्रेम करती है वैसे ही तुम भी एक-दूसरे से प्रेमपूर्वक व्यवहार करो।

द्वेष रहित समान मन सौहार्द से संयुत रहो।
वत्स-नेह युत धेनु सम, तुम प्रेम से मन को भरो॥

The union of hearts and minds
and freedom from hatred I bring you.
Love one another as the cow
loves the calf that she has givan birth to.

समानी प्रपा सह वोऽन्नभागः समाने योक्त्रे सह वो युनज्मि । सम्यञ्चोऽग्निं सपर्यतारा नाभिमिवाभितः ॥५॥ (अथर्ववेद ३।३०।६)

तुम्हारी जलशाला एक ही हो; अन्न का भाग साथ-साथ हो; मैं तुम सबको साथ-साथ एक ही योक्त्र (जोत) में जोड़ता हूँ। साथ मिल कर तुम सब अग्निमय, ज्ञान और प्रकाश स्वरूप, परमात्मा की पूजा करो। जैसे पहिये के डंडे उसकी नाभि में चारों ओर से सटे रहते हैं वैसे ही तुम भी परमात्मा की पूजा से सम्बद्ध रहो ॥

एक प्रपा हो अन्न भाग हो एक तुम्हारा,
एक साथ मिल कार्य करो, इक जोत तुम्हारा;
रथ-नाभि से युक्त अराओं के सम मिल कर,
करो अर्चना परमेश्वर की सब विधि हितकर ।

Let your water-store be common and common share of food;
I put you together to a common yoke.
United, gather round the Divine fire,
like spokes around the nave of a wheel.

सध्रीचीनान् वः संमनसस्कृणोम्येकश्नुष्टीन्त्संवननेन सर्वान् । देवा इवामृतं रक्षमाणाः सायंप्रातः सौमनसो वो अस्तु ॥६॥ (अथर्ववेद, ३।३०।७)

मैं तुम सब को समान गति, अथवा इच्छा वाले, समान मन वाले और एक से संवनन (संभजन) द्वारा समान खानपान वाले बनाता हूँ। अमृत की रक्षा करने वाले देवों के समान सायं और प्रातः आप की सुमनस्कता (चित्त की प्रसन्नता) होवे ।

With your common desire I make you all
United and of one mind, eating same food.
Like Devas, preservers of immortality,
at morn and eve may you be kindly-hearted.

(घ) अन्तर्राष्ट्रीय अनुकूलता (International concord)

संज्ञानं नः स्वेभिः संज्ञानमरणेभिः ।
संज्ञानमश्विना युवमिहास्मासु नि यच्छतम् ॥१॥
(अथर्ववेद ७।५२।१)

हे अश्विदेवो ! हमें स्वजनों के साथ उत्तम ज्ञान प्राप्त हो, तथा जो निम्न श्रेणी के अथवा अन्य श्रेणियों के लोग हैं उन के साथ भी उत्तम ज्ञान प्राप्त हो। इस संसार में आप दोनों (अश्विदेव) हम सब में परस्पर उत्तम ज्ञान स्थापित करो। हम सब में एकता का भाव स्थापित करो।

Let us have concord with our people,
and peace with people who are strangers to us;
Ashvins, create between us and the strangers
a unity of hearts, sympathy and love.

सं जानामहे मनसा सं चिकित्वा मा युत्स्महि मनसा दैव्येन। मा घोषा उत्थुर्बहुले विनिर्हते मेषुः पप्तदिन्द्रस्याहन्यागते ॥२॥ (अथर्ववेद ७।५२।२)

हम सब मन से उत्तम ज्ञान, एकता का भाव प्राप्त करें। उत्तम ज्ञान प्राप्त कर के हम एक मत से रहें, परस्पर विरोध न करें। हम दिव्य मन से युक्त हों। बहुतों का वध होने के पश्चात् दुःख के शब्द उत्पन्न न हों, आये हुए अथवा आगे आने वाले दिन में इन्द्र का बाण हम पर न गिरे।

May we agree in our minds, agree in our purposes,
let us not fight against the divine spirit within us.
Let not the battle-cry rise amidst many slain,
nor the arrows of Indra fall with the break of day.

अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते सं भ्रातरो वावृधुः सौभगाय । युवा पिता स्वपा रुद्र एषां सुदुघा पृश्निः सुदिना मरुद्भ्यः ॥३॥ (ऋग्वेद ५।६०।५)

संसार के सब प्राणी (मनुष्य), छोटे और बड़े आपस में भाई हैं। उन सब को परस्पर मिल कर ऐश्वर्य प्राप्त करना चाहिये। ईश्वर सब का पिता और पृथिवी सब की माता है। कोई छोटा और बड़ा नहीं है। जैसे एक ही पिता के पुत्र मिल कर काम करते हैं, वैसे ही तुम सब भी करो।

None is superior or inferior, high or low,
all men are brothers, children of father God
and mother Earth,
They should advance and flourish under their care,
practising eternal and universal code of life.

ज्यायस्वन्तश्चित्तिनो मा वि यौष्ट संराधयन्तः सधुराश्चरन्तः । अन्यो अन्यस्मै वल्गु वदन्त एत सध्रीचीनान् वः संमनसस्कृणोमि ॥४॥ (अथर्ववेद ३।३०।५)

वड़े बनो और विवेकशील बनो। एक-दूसरे से कभी अलग मत हो। एक साथ मिल कर अपने लक्ष्य को सम्यक् प्रकार से सिद्ध करते हुए, एक समान नियन्त्रण में रहते हुए एवं परस्पर मधुर वाणी बोलते हुए एक-दूसरे के निकट आओ। मैं तुम्हें समान लक्ष्य वाला और समान मन वाला बनाता हूँ।

बढ़ो, विवेकी बनो और मिल साधो अपना लक्ष्य।
बोलो मधुर, नियन्त्रण में रह पाओ जीवन-लक्ष्य ॥
एक लक्ष्य हो एक हृदय हो सदा तुम्हारा।
एक भाव हो, ग्रहण करो आदेश हमारा ॥

Grow old and great, think and thrive together,
move under a common yoke, be not parted.
Speaking sweetly join one another,
I make you of one aim and one mind.

ऋजुनीती नो वरुणो मित्रो नयतु विद्वान्। अर्यमा देवैः सजोषाः ।१। (ऋग्वेद १।९०।१; सामवेद २१८)

विद्वान् वरुण और मित्र हमें सरल नीति के मार्ग से ले जावें। देवों के साथ उत्साही अर्यमा भी हमें सरल मार्ग से ले जावे।

सरल नीति मार्ग ही अपनाना चाहिये, कुटिल मार्ग नहीं।

And again for more than a hundred autumns.
By straight paths may Varuna lead us,
and may Mitra, the wise, lead us,
and puissant Aryaman, with Devas.

मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ।२। (ऋग्वेद १९०।६; यजुर्वेद १३।२७)

सरल और नीतिपरक मार्ग पर चलने वाले के लिए वायु माधुर्य को वहा कर लावे, नदियाँ उसके लिए मधुर रस वहा कर लावें; औषधियाँ हमारे लिए मधुर रस से युक्त हों।

May the sweet breeze blow for him who lives,
by law, may rivers pour sweets for him.
So may the plants be sweet to us.

मधु नक्तमुतोषसो मधुमत् पार्थिवं रजः।
मधु द्यौरस्तु नः पिता।३।

(ऋग्वेद १।९०।७; यजुर्वेद १३।२८

रात्रियाँ हमारें लिए मधुर हों, उषाएं भी हमारे लिए मधुर हों, पार्थिव धूलि भी मधुर हो; पिता द्युलोक भी मधुर हो।

May our nights be pleasant, pleasant dawns,
and pleasant the dust of the earth!
Pleasant for us be Father Heaven.

२२. वीर भावना

(Heroic attiude to life)

अश्मन्वती रीयते सं रभध्वं वीरयध्वं प्र तरता सखायः । अत्रा जहीत ये असन् दुरेवा अनमी वानुत्तरेमाभि वाजान् ।१। (अथर्ववेद १२।२।२६)

दुःख रूपी पत्थरों वाली संसार रूपी नदी बह रही है । हे मित्रो ! समान विचार वाले बन कर एक साथ उद्योग करो; उठो, सम्भलो और इस नदी को अच्छी प्रकार पार करो । जो अमंगलदायक और दुःखदायी हैं उन्हें हम यहीं छोड़ दें । और रोगरहित तथा कल्याणकारी शक्तियों, ज्ञानों एवं पदार्थों को लक्ष्य कर के हम उत्तमता से तर जायें ।

The strong stream flows, : hold you my friends, all together
quit you like heroes, and cross this stream ;
Abandon here all thou that are evil-minded.
let us cross to powers who are undiseased.

उत्तिष्ठता प्र तरता सखायोऽश्मन्वती नदी स्यन्दत इयम् । अत्रा जहीत ये असन्नशिवाः शिवान्त्स्योनानुत्तरेमाभि वाजान् ।२। (अथर्ववेद १२।२।२७)

हे मित्रो ! उठो, पार करो । यह पत्थरों वालो नदी बह रही है । जो जो अमंगलकारक और अशुभ हैं उन सब को यहीं छोड़ दो । जो शक्तियाँ, ज्ञान तथा पदार्थ लाभप्रद और मंगलदायक हैं उन को लक्ष्य कर के पार उतरो ।

Stand erect, and cross you over, my comrades !
this strong river flows on before us.
Abandon here all those that are ungracious,
let us cross to powers, benign and ple.

यत इन्द्र भयामहे ततो नो अभयं कृधि । मघवं छग्धि तव त्वं न ऊतिभिर्वि द्विषो विमृधो जहि ।१।

(अथर्ववेद १६।१५।१)

हे इन्द्र ! जिस-जिस से हमें भय हो उस-उस से हमें अभय बनाओ। हे मघवन् ! तू इसे कर सकता है । तू अपनी रक्षक शक्तियों द्वारा हमारे शत्रुओं का विनाश कर, प्रजानाशक संग्रामों का विनाश कर ।

Free us Indra, from the fear of all that we are afraid of.
May thou, with thy saving power,
drive foes and enemies afar.

अभयं नः करत्यन्तरिक्षमभयं द्यावापृथिवी उभे इमे ।
अभयं पश्चादभयं पुरस्तादुत्तरादधरादभयं नो अस्तु ।२।

(अथर्ववेद १६।१५।५)

अन्तरिक्ष लोक हमारे लिए भयरहित हो, ये दोनों पृथ्वी लोक और द्युलोक भयरहित हों । हम पीछे से अर्थात् पीठ की ओर से, सामने से, ऊपर से और नीचे से सभी ओर से अभय हों ।

May the atmosphere free us from all fear,
may both Heaven and Earth make us secure ;
may we be free from danger from west and east,
from behind and from in front.

अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं पुरो यः ।
अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं
भवन्तु ।३। (अथर्ववेद १६।१५।६)

हे भयहर्ता परमात्मन् ! हमें मित्र से भय न हो, शत्रु से भय न हो, ज्ञात से भय न हो और अज्ञात से भी भय न हो । हमें रात्रि में भय न हो और दिन में भी भय न हो । सभी दिशाएं हमारी मित्र हों ।

May there be no fear from friend, no fear
from foe,
may we never fall in dread from the known
and unknown,
may we have no fear from night and from day,
may all the quarters be friendly to us.

यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु ।
शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ।४।
(यजुर्वेद ३६।२२)

हे परमात्मन् ! तू जिस-जिस स्थान से चाहता है वहाँ-वहाँ से हमें अभय प्रदान कर । हमारी सन्तान का कल्याण करो और हमारे पशुओं के लिए अभय-दान दो ।

Make us free from fear
of all that thou wishest ;
give bliss to our children,
security to our animals.

२४. आदर्श क्षत्रिय शासक

(The Ideal Kshatriya King)

ततुरिर्वीरो नर्यो विचेताः श्रोता हवं गृणत उर्व्यूतिः। वसुः शंसो नरां कारुधाया वाजी स्तुतो विदथे दाति वाजम् ।१। (ऋग्वेद ६।२४।२)

शत्रुओं का नाशक, श्रेष्ठ वीर, मनुष्यों में श्रेष्ठ नायक, विविध ज्ञानों का जानने वाला (इन्द्र) प्रार्थी स्तोता की प्रार्थना को सुनता है और सुरक्षा प्रदान करता है। वह हमारा धन है, मनुष्यों द्वारा प्रशंसा के योग्य है, शिल्पियों और विद्वान् कवियों का सहायक है, बलवान् और प्रशंसित है। वह संसद् और संग्राम में हमें ऐश्वर्य और बल प्रदान करता है।

Surpassing Hero, friend of man, wisest of all, he the big
hears the call and gives far-reaching aid to the singer;
he is our treasure, praised by men, the poets' supporter,
the strong, extolled in the assembly, given of strength.

अक्षो न चक्र्योः शूर बृहन् प्र ते मह्ना रिरिचे रोदस्योः। वृक्षस्य नु ते पुरुहूत वया व्यूतयो रुरुहुरिन्द्र पूर्वीः ।२। (ऋग्वेद ६।२४।३)

गाड़ी के पहियों में लगे धुरे के समान, हे शूरवीर! तेरा विशाल तेज और व्यापक बल तेरे महान् सामर्थ्य से पृथिवी और आकाश के बीच खूब बढ़ा है। हे बहुतों से प्रशंसित इन्द्र! वृक्ष की शाखाओं के समान तुम्हारे हितकारक गुण, ज्ञान, क्रिया आदि व्यापक शक्तियाँ विविध दिशाओं में विविध प्रकार से उत्पन्न हों, प्रसृत हों।

**Like the axle of the wheel, great Hero, by
thy splendour are the heaven and earth exceeded;
like the branches of a tree, O much invoked Indra!
grow thy numerous benefits.**

न वीळवे नमते न स्थिराय न शर्धते दस्युजूताय स्तवान्। अज्रा इन्द्रस्य गिरयश्चिदृष्वा गम्भीरे चिद् भवति गाधमस्मै ।३। (ऋग्वेद ६।२४।८)

हमारे द्वारा स्तुत इन्द्र न तो बलवान् व्यक्ति के सामने झुकता है, न स्थिर और दृढ़ व्यक्ति के सामने झुकता है, न बल प्रकट करने वाले प्रजा नाशकारी के सामने झुकता है। इन्द्र के वज्र पर्वतों के समान अभेद्य, दृढ़ और महान् हैं। इस के लिए गहरे से गहरे स्थान (सागर आदि) में भी थाह है।

He whom we worship bows not to the strong or the stiff,
or to the challenger incited by the foe,
Like plains are the lofty mountains to Indra,
and in the deeps there is a foothold for him.

अहमस्मि सहमान उत्तरो नाम भूम्याम्।
अभीषाडस्मि विश्वषाडाशामाशां विषासहिः ।४।
(अथर्ववेद १२।१।५४)

पृथिवी पर मैं अन्यों की अपेक्षा उत्कृष्ट हूं, सहनशील हूँ अर्थात् किसी के अधीन और दबने वाला नहीं हूँ। मैं अन्यों को अभिभूत करने वाला अर्थात् विजेता हूँ, सब पर छा जाने वाला हूं, दिशा-दिशा पर अर्थात् प्रत्येक दिशा में विजय पाने वाला हूँ।

I am victorious,
I am called the most sublime on the earth,
I am conqueror everywhere
over everything and on every side.

२५. युद्ध में विजय

(Victory in battle)

गोत्रभिदं गोविदं वज्रबाहुं जयन्तमज्म प्रमृणन्त-मोजसा । इमं सजाता अनु वीरयध्वमिन्द्रं सखायो अनु सं रभध्वम् ।१। (ऋग्वेद १०।१०३।६।)

हे सजाता: ! (बल, कीर्ति, वंश आदि में समान भाइयो) आप लोग शत्रुओं के गढ़ों और दलों के भेदक, पृथिवी अथवा प्रकाश को प्राप्त करने वाले, वज्रबाहु, संग्राम के विजेता और अपने ओज से शत्रुओं के मर्दक इस इन्द्र के अनुकरण पर शूरवीरता के कार्य करो । आप लोग उस के अनुकूल ही मिल कर उद्योग करो ।

Breaker of hurdles, finder of light, thunder-armed,
he wins the battle, crushing the foe with his might.
Follow him brothers ! Quit yourselves like heroes !
Emulate Indra in prowess, my comrades !

अस्माकमिन्द्रः समृतेषु ध्वजेष्वस्माकं या इषवस्ता जयन्तु । अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्त्वस्माँ उ देवा अवता हवेषु ।२। (ऋग्वेद१०।१०३।११)

हमारे ध्वजों के एकत्र मिल कर जुट जाने पर इन्द्र और हमारे बाण आदि सब विजय प्राप्त करें । हमारे वीर जन शत्रुओं पर विजयी हों, उन से बढ़ कर सिद्ध हों । हे देवो ! युद्ध के अवसरों पर अथवा युद्ध क्षेत्रों में हमारी रक्षा करो ।

May Indra be on our side when our banners gather !
May our arrows bring us victory !
May our heroes rise superior to all !
Protect us, ye Devas ! in the battle.

प्रेता जयता नर इन्द्रो वः शर्म यच्छतु ।
उग्रा वः सन्तु बाहवोऽनाधृष्या यथासथ ।३।

(ऋग्वेद १०।१०३।१६)

हे वीर पुरुषो ! आगे बढ़ो । विजय प्राप्त करो । इन्द्र तुम्हें सुख अथवा रक्षा प्रदान करें । आप की भुजाएं उग्र हों जिस से तुम कभी पराजित न होवो, अजेय बनो ।

Advance forward, warriors ! and conquer.
May Indra give you protection '
Valiant be your arms, so that
you may become invincible

अयुद्ध इद्युधा वृतं शूर आजति सत्वभिः ।
येषामिन्द्रो युवा सखा ।४। (ऋग्वेद ८।४५।३)

जिन का मित्र बलवान् शत्रुहन्ता इन्द्र है वह शूरवीर अपने बल से ही योद्धाओं से घिरे ससैन्य शत्रु को भी उखाड़ फेंकता है और उस से युद्ध करता है ।

Irresistible in war, the Hero,
who has Indra, ever young, for freind,
drives the foes surrounded by warriors.

क्षत्रं जिन्वतमुत जिन्वतं नॄन् हतं रक्षांसि सेधतममीवाः। सजोषसा उषसा सूर्येण च सोमं सुन्वतो अश्विना ।५। (ऋग्वेद ८।३५।१७)

आप दोनों क्षात्र बल की वृद्धि करो, वीर नायकों की वृद्धि करो। दुष्टों, राक्षसों को मारो। रोगों को दूर करो। हे अश्विदेवो ! आप उषा और सूर्य के साथ सोम रस निकालने वाले अथवा सोम सवन (यज्ञ) करने वाले द्वारा निकाले गये सोम का पान करो।

Animate protective power and stir up heroes !
Drive out maranders and remove disease.
Come accordant with Ushas and Surya,
and partake of the Soma, Ashvins !

२६ सम्मिलित नेतृत्व
(United Leadership)

यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यञ्चौ चरतः सह ।
तं लोकं पुण्यं प्रज्ञेषं यत्र देवाः सहाग्निना ।१।

(यजुर्वेद २०।२५)

जहाँ ब्रह्मशक्ति और क्षत्रशक्ति अर्थात् ज्ञानशक्ति और धर्मशक्ति अथवा आध्यात्मिक शक्ति और राजन्य शक्ति एकरस हो कर, मिल-जुल कर साथ-साथ विचरण करते हैं और जहाँ देव अग्नि के साथ (विद्वान् तेज के साथ) विचरते हैं उस देश को मैं पुण्य एवं पवित्र मानता हूँ ।

Where spiritual and ruling powers
move together in unity,
that world I shall know as holy,
these Devas with Agni dwell.

इदं मे ब्रह्म च क्षत्रं चोभे श्रियमश्नुताम् ।
मयि देवा दधतु श्रियमुत्तमां तस्यै ते स्वाहा ।२।

(यजुर्वेद ३२।१६)

मेरा यह ब्रह्म ज्ञान (वेद विज्ञान) और क्षात्र बल दोनों ही शोभा को प्राप्त हों । देवगण मुझमें उत्तम श्री (आत्मविद्या, शोभा और धन-सम्पत्ति) को धारण करावें । उस श्री के लिए वे दोनों ब्रह्म और क्षत्र कल्याणकारक हों ।

Let both my knowledge and valour
possess the lustre that I seek.
May the Devas grant me the noblest prosperity.
To thee, that lustre and prosperity, Hail !

२७. आध्यात्मिक नेतृत्व

(Spiritual Leadership)

अपक्रामन् पौरुषेयाद्वृणानो दैव्यं वचः।
प्रणीतीरभ्यावर्तस्व विश्वेभिः सखिभिः सह ।१।
(अथर्ववेद ७।१०५।१)

पौरुषेय से अर्थात् सामान्य मानवों द्वारा करने योग्य कर्मों से हट कर (उन्हें छोड़ कर) दिव्य वचनों को स्वीकार कर । अपने समस्त मित्रों के साथ उत्कृष्ट नीति-नियमों के अनुकूल आचरण कर ।

Leave behind what is human,
make the heavenly word they choice,
and establish thy leadership,
along with all the friends thou hast.

ये राजानो राजकृतः सूता ग्रामण्यश्च ये ।
उपस्तीन् पर्ण मह्यं त्वं सर्वान् कृण्वभितो जनान् ।२।
(अथर्ववेद ३।५।७)

जो राजा और जो राजाओं को बनानें वाले हैं, और जो सूत और ग्राम के नेता हैं; हे पर्णमणे ! तू उन सब जनों को मेरे चारों ओर उपस्थित कर ।

Those that are kings and king-makers,
charioteers and troop-leaders—
make all of them on every side,
O Parna ! obedient to my will.

२८. सभा
(The Assembly)

सभा च मा समितिश्चावतां प्रजापतेर्दुहितरौ संविदाने। येना संगच्छा उप मा स शिक्षाच्चारु वदानि पितरः संगतेषु ।१। (अथर्ववेद ७।१२।१)

सभा (राष्ट्र सभा) और समिति (ग्राम समिति) ये दोनों प्रजापति (प्रजारक्षक राजा) की पुत्रियाँ है। वे दोनों परस्पर एक मत हो कर मेरी राजा की अथवा प्रजा की रक्षा करें। इन में से जिस से मैं मिलूँ वह मुझे शिक्षा देवे। हे पितरो! मैं इन सभाओं में उत्तम रीति से बोलूँ।

राष्ट्र में राजा और प्रजा के हित के लिए सभा और समिति होनी चाहियें।

May the Assembly and the Council,
the two Daughters of Prajapati;
be in concord protect me!
May every one I meet respect and guide me;
Fathers; fair be my word at the meetings.

विद्म ते सभे नाम नरिष्टा नाम वा असि।
ये ते के च सभासदस्ते मे सन्तु सवाचसः ।२।

अथर्ववेद ७।१२।२

हे सभा! तेरा नाम हमें विदित है। तुम्हारा नाम है 'नरिष्टा' (अहिंसक अथवा मानवों द्वारा अभीष्ट)। जो कोई तेरे सभासद हैं वे मुझ से (राजा से अथवा प्रजा से) समता का भाषण करने वाले हों; अनुकूलभाषी हों।

सभा और समिति के सदस्य स्वार्थी और मनमानी बातें करने वाले नहीं होने चाहियें।

We know thy name, O Assembly,
"The Desired of Men" is thy name;
May all those who are thy members
agree with me to my opinion,

एषामहं समासीनानां वर्चो विज्ञानमा ददे ।
अस्याः सर्वस्याः संसदो मामिन्द्र भगिनं कृणु ।३।
(अथर्ववेद ७।१२।३)

सभा और समिति में बैठे हुए इन सभासदों से मैं विज्ञान और तेज स्वीकार करता हूँ । हे इन्द्र ! इस समस्त सभा का मुझे भागी बना, सर्वातिशायी बना ।

Let me receive the brilliance
and the wisdom of those seated here together.
Make me the most illustrious, Indra !
among these people assembled here.

यद्वो मनः परागतं यद् बद्धमिह वेह वा ।
तद्व आ वर्तयामसि मयि वो रमतां मनः ।४।
(अथर्ववेद ७।१२।४)

हे सभासदो ! तुम्हारा जो मन दूर हट गया है, अथवा जो इधर-उधर के विषयों में बन्धा हुआ है, तुम्हारे उस मन को मैं पुनः लौटा लाता हूं । अब तुम्हारा मन मुझ में रमण करे अर्थात् राज्यशासन सम्बन्धी मेरे कार्यों में लगे ।

Whether your thoughts are turned away,
or are bound fast here and there,
I turn those thoughts of your sound ;
may your minds take delight in me.

यद् वदामि मधुमत् तद् वदामि यदीक्षे तद्वनन्ति मा ।
त्विषीमानस्मि जूतिमानवान्यान् हन्मि दोधतः ।५।

(अथर्ववेद १२।१।५८)

मैं जो कुछ बोलता हूं, मधुर बोलता हूं। मैं जिस को देखता हूं वह मुझ से प्यार करता है। मैं प्रकाश और प्रेरणा को धारण करता हूं, परन्तु आक्रमणकारी क्रुद्ध शत्रुओं का दमन करता हूं।

What I speak, I speak sweet and pleasant ;
what I look at endears itself to me ;
I am full of splendour and propensity ;
But I smite down others who fly at me with anger.

ब्रह्म जिन्वतमुत जिन्वतं धियो हतं रक्षांसि सेधतममीवाः । सजोषसा उषसा सूर्येण च सोमं सुन्वतो अश्विना ।४। (ऋग्वेद ८।३५।१६)

आप दोनों ब्रह्म (ज्ञान, वेद) की वृद्धि करो; बुद्धियों और सत्कर्मों की वृद्धि करो; दुष्टों, राक्षसों को मारो; रोगों को दूर करो। हे अश्विदेवो ! आप उषा और सूर्य के साथ सोम रस निकालने वाले अथवा सोम सवन यज्ञ करने वाले द्वारा निकालने गये सोम का पान करो।

Animate the power of knowledge and rouse the intellect,
Drive out the evil-doers and remove disease.
Come accordant with Ushas and Surya
and partake the Soma, Ashvins !

२९. राष्ट्रीय अभ्युत्थान (National Prpsperity)

आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ।१। (यजुर्वेद २२। २२)

हे ब्रह्मन्, अनन्त शक्तिसम्पन्न परमात्मन् ! हमारे राष्ट्र में सब ओर तप, त्याग वेद ज्ञान से युक्त ब्राह्मण उत्पन्न हों; शूर वीर, बाण-विद्या (शस्त्रास्त्र विद्या) में चतुर, दुष्टों और शत्रुओं को नष्ट करने वाले राजन्य (क्षत्रिय राजपुत्र) उत्पन्न हों। यहाँ बहुत-सा दूध देने वाली गौएं, भार उठानें वाले बैल, शीघ्र चलने वाले घोड़े, सधवा और पुत्र-वती नारियाँ हों। इस यजमान के राष्ट्र में सभा के उत्तम वक्ता, युवक, जयशील और युद्ध कुशल वीर पुरुष हों। हमारे देश में सदा अपेक्षित समय पर मेघ वर्षा करें। हमारी फसलें (खेतियां) खूब फलें-फूलें। हमारा सुख-कल्याण सदैव होता रहे।

Brahman,

may there be born in our country (empire) Brahmans, possessing the lustre of spiritual knowledge; may there be born Rajanyas, capable of ruling the people, skilled in military enterprise, heroic in spirit, expert in the use of military weapons and excellent marksmen and mighty wariors who can vanquish the enemy;

may there be cows giving plentiful milk; oxen, carrier of heavy loads and horses with swift speed;

may there be women at home with husbands and children

may the sons of this worshipper he heroic youths, fit to shine in assemblies, all-conquering possessors of war-chariots:

may the clouds shower rain on the required occasions; may our fruit-bearing trees bear ripe fruits in abundance and may our power of acquisition and preservation ever remain in us.

३०—शान्ति, मित्रता, प्रसन्नता और तेज के लिए प्रार्थना

(Prayer for peace, amity, happiness and energy)

शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा।
शं न इन्द्रो बृहस्पतिः शं नो विष्णुरुरुक्रमः ।१।

(ऋग्वेद १।९०।९; यजुर्वेद ३६।९; अथर्ववेद १९।९।६)

मित्र (परमात्मा) हमारे लिए सुखदायक हों; वरुण (श्रेष्ठ ईश्वर) सुखप्रद हों; अर्यमा (न्यायकारी ईश्वर) हमारे लिए शान्तिप्रद हों; इन्द्र और वृहस्पति हमारे लिए सुखदायक हों; और महाबली विष्णु हमारे लिए कल्याणप्रद हों।

Gracious to us be Mitra
and gracious Varuna and Aryaman.
Gracious be Indra and Brihaspati,
and gracious Vishnu of wide stride.

अहानि शं भवन्तु नः शं रात्रीः प्रति धीयताम्। शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या। शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः ।२। (ऋग्वेद ७।३५।१; यजुर्वेद ३६।११)

दिन हमारे लिए कल्याणकारी हों; रात्रियाँ हम में कल्याण को प्रतिष्ठापित करें; इन्द्र और अग्नि अपनी सहायक शक्तियों से हमारा कल्याण करें; इन्द्र और वरुण जिन के लिए हव्य दिया जाता है हमारे लिए कल्याणकारी हों; अन्न देने वाले तथा युद्ध क्षेत्र में विजय दिलाने वाले इन्द्र और पूषा हमारे लिए कल्याण देने वाले हों; इन्द्र और सोम हमारे कल्याण के लिए शान्ति युक्त हों।

May days be full of bliss for us,
and may nights approach us with bliss.
Blissful to us be Indra and Agni with their aids,
and blissful to us Indra and Varuna to whom
our offerings are made,
blissful to us be Indra and Pushan in battle,
and blissful Indra and Soma to grant us
health and happiness.

शं नो वातः पवतां शं नस्तपतु सूर्यः ।
शं नः कनिक्रदद्देवः पर्जन्यो अभिवर्षतु ।२।

(यजुर्वेद ३६।१०)

वायु हमारे लिए कल्याणकारी हो कर बहे; सूर्य हमारे लिए मंगलमय ताप दे; गरजता हुआ मेघ मंगलमयी वर्षा करे ।

May the wind blow us wealth,
may the sun shine clear on us
may Parjanya with loud voice
rain his grace on us.

शं नो वातो वातु शं नस्तपतु सूयः । अहानि शं भवन्तु
नः शं रात्री प्रति धीयतां शमुषा नो व्युच्छतु ।३।

(अथर्ववेद ७।६९।१)

हे परमात्मन् ! वायु हमारे लिए शान्तिप्रद हो कर बहे, सूर्य हमारे कल्याण के लिए तपे और प्रकाश दे, दिन हमारे लिए शान्तिदायक हों, रातें हमारे लिए शान्तिप्रद हों और उषा हमारे लिए शान्तिदायिनी हो ।

May the wind blow us bliss,
may the sun shine bliss on us,
may the days be blissful to us ;
may the nights approach as blissfully
and the dawn glow blissfully.

शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये ।
शं योरभि स्रवन्तु नः ।४। (अथर्ववेद १।६।१; सामवेद ३३)

दिव्य गुणों से युक्त जल हमारे संरक्षण के लिए और हमारे पीने के लिए कल्याणकारी हों। वे हमारे स्वास्थ्य और सुख के लिए हम पर सब ओर से शान्तिपूर्वक बरसें।

Gracious be divine waters for
our protection, be thy for our drink
and stream on us health and delight.

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः। देवा नो यथा सदमिद् वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे ।५।

(ऋग्वेद १।८९।१; यजुर्वेद २५।१४)

हमें सब ओर से भली भावनाएं और भले कर्म प्राप्त हों। उन में धोखा न हो, बाधा न हो, उन्नति ही उन्नति हो। उन से सन्तुष्ट हो कर देवता दिन प्रति दिन हमारी रक्षा करें, वृद्धि करें, सदा हमारा साथ दें, हमारी प्रगति को न रोकें।

May come to as from all sides noble wisdom,
undeceived, unhindered, overflowing,
so that the Devas may always help us onward,
unceasing in their care and being our Guardians
day by day.

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानां रातिरभि नो नि वर्तताम् । देवानां सख्यमुप सेदिमा वयं देवा न आयुः प्र तिरन्तु जीवसे ।६। (ऋग्वेद १।८६।२; यजुर्वेद २५।१५)

सरल मार्ग से जाने वाले देवों की कल्याणकारिणी सुबुद्धि और उन की उदारता सदा हमारे अनुकूल हो । हमें देवों की मित्रता प्राप्त हो । वे हमें दीर्घ आयु प्रदान करें और हम पूर्ण जीवन प्राप्त करें ।

May we have the blissful love of Devas who desire
straight life ; about us may we have the grace
of Devas.
We have approached Devas for freindship; may they
prolong our life to the fuil, so that we may
live full life.

तान् पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्रमदितिं दक्षमस्रिधम् । अर्यमणं वरुणं सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ।७। (ऋग्वेद १।८९।३; यजुर्वेद २५।१६)

प्राचीन मन्त्रों से हम उन देवों को भग, मित्र, अदिति, दक्ष, विश्वास योग्य मरुतों के गण, अर्यमा, वरुण, सोम और अश्विनी-कुमारों को बुलाते हैं । भाग्ययुक्त सरस्वती हमें सुख देवे ।

And with an ancient hymn we in-voke
Bhaga, Mitra, Aditi and friendly Daksha,
and Aryaman, Varuna, Soma and Ashvins.
May the gracions Sarasvati grant us happiness.

तन्नो वातो मयोभु वातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः। तद्ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणुतं धिष्ण्या युवम् ।८। (ऋग्वेद १।८९।४; यजुर्वेद २५।१७)

वायु उस सुखप्रद और स्वास्थ्यप्रद औषध को हमारे पास वहावे। माता पृथिवी और पिता द्युलोक भी उस औषध को हमें देवें। सोमरस निकालने वाले सुखप्रद और स्वास्थ्यप्रद पत्थर भी वह औषध हमें देवें। हे बुद्धिमान् अश्विदेवो! तुम हमारी इस प्रार्थना को सुनो।

May air bear us healthful medicament,
and so may Mother Earth, so Father Heaven,
and so the health-giving stones that press the Soma.
May Ashvins, meditated on by us, listen to
our prayer.

तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ।९। (ऋग्वेद १।८९।५; यजुर्वेद २५।१८)

स्थावर और जंगम के अधिपति बुद्धि के प्रेरक उस ईश्वर को हम अपनी सुरक्षा के लिए बुलाते हैं। इस से वह पोषणकर्ता देव हमारे ऐश्वर्य की समृद्धि करने वाला और सुरक्षा करने वाला हो। वह अपराजित देव हमारा संरक्षक बने।

We call to our help The Supreme Lord of all,
that moves and stands still, the Inspirer of
the spirit,
that He, Pushan, the Defender, the Guardian,
unfailing may give us wealth and bring us bliss.

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः । स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ।१०। (ऋग्वेद १।८९।८; यजुर्वेद २५।२१; सामवेद १८७४)

हे देवो ! हम कानों से कल्याणकारक बातें सुनें। हे यजनीय देवो ! हम आंखों से कल्याणकारक वस्तुएं देखें। स्थिर और सुदृढ़ अवयवों से युक्त शरीरों वाले हम तुम्हारी स्तुति करते हुए देवताओं द्वारा दी गयी आयु का उपभोग करें अथवा देवताओं के हित के लिए शुभ कर्मों में ही आयु का उपभोग करें।

May we Devas ! hear with our ears what is good,
may we, holy Ones ! see with our eyes what is good,
may we praise you with our firm limbs and bodies.
and enjoy the divine life bestowed on us.

वैश्वदेवीं वर्चस आ रभध्वं शुद्धा भवन्तः शुचयः पावकाः। अति क्रामन्तो दुरिता पदानि शतं हिमाः सर्ववीरा मदेम ।११। (अथर्ववेद १२।२।२८)

वर्चस् (तेज) को प्राप्त करने के लिए वैश्वदेवी (सब विषयों का ज्ञान कराने वाली वेदवाणी) को आरम्भ करो और उसके द्वारा स्वयं पवित्र बनते हुए दूसरों को भी पवित्र करने वाले बनो । दुरवस्था वाले स्थानों और चिह्नों का अतिक्रमण करते हुए हम सब वीर सौ वर्ष तक आनन्द से रहें।

Becoming pure and bright and purifying
strike the universal strain to attain lustre !
May we, passing beyond troblous paths,
enjoy a hundred winters with all our heroes.

यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते ।
तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ।१२।
(यजुर्वेद ३२।१४)

जिस मेधा शक्ति की देवगण और पितर जन भावना करते हैं, हे प्रकाशस्वरूप अग्नि (परमेश्वर), वही मेधा मुझे प्रदान करो और उस के द्वारा मुझे मेधावी बनाओ ।

Endow me today, O Agni, with that talent
which Devas and Fathers regard favourable.

मेधां मे वरुणो दधातु मेधामग्निः प्रजापतिः ।
मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधां धाता ददातु मे
स्वाहा ।१३। (यजुर्वेद ३२।१५)

वरुण देव मुझे मेधा प्रदान करें, अग्नि देव मुझे मेधा देवें, प्रजापति मुझे मेधा दें, इन्द्र और वायु मेधा शक्ति प्रदान करें और विधाता भी मुझे मेधा देवें ।

May Varuna grant me wisdom,
may Agni and Prajapati give it to me ;
May Indra and Vayu give me talent,
and Dhata grant it to me. Hail !

तेजोऽसि तेजो मयि धेहि । वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि । बलमसि बलं मयि धेहि । ओजोऽस्योजो मयि धेहि । मन्युरसि मन्युं मयि धेहि । सहोऽसि सहो मयि धेहि ।१४। (यजुर्वेद १९।९)

हे परमात्मन् ! आप तेज हैं, मुझे भी तेज प्रदान करें; आप वीर्य-वान् हैं, मुझे भी वीर्य देवें; आप वल हैं, मुझे भी वल दें; आप ओज हैं; मुझे भी ओजस्वी वनायें; आप मन्यु हैं, मुझे भी मन्यु देवें; आप सहनशील हैं, मुझे भी सहनशील वनायें ।

O Lord ! Thou art splendour, implant splendour in me;
Thou art manliness, give me manliness ;
Thou art strength, give me strength ;
Thou art vigour, implant vigour in me ;
Thou art vehemence, give me vehemence ;
Thou art endurance, implant endurance in me.

नमस्ते अस्तु विद्युते नमस्ते स्तनयित्नवे ।
नमस्ते भगवन्नस्तु यतः स्वः समीहसे ।१५।

(यजुर्वेद ३६।२१)

हे परमात्मन् ! तुम्हारी विद्युत् का स्वागत है, उसे नमस्कार है; तुम्हारे गरजते हुए मेघ का स्वागत है, उसे नमस्कार है; हे परमात्मन् ! जिस से कि तुम प्रकाश को हमारी ओर प्रेरित करते हो, अतः तुम्हारे लिए स्वागत है ।

Welcome to the lightning,
Welcome to the thunder,
homage to thee, glorious Lord,
who winnest us heavenly light.

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्ध श्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ।१६।

(ऋग्वेद १।८९।६; यजुर्वेद २५।१९; सामवेद १८७५)

वहुत यशस्वी इन्द्र देव हमारा कल्याण करे। सव को जानने वाला पूषा हमारा कल्याण करे। अप्रतिहत रथ वाला ताक्ष्र्य हमारा कल्याण करे। वृहस्पति हमारा कल्याण करे।

May the blessing of far-famed Indra be on us,
may we be blessed by Pushan, the all-knowing,
may be we blessed by Tarkshya with his wheel's rim unworn,
may Brihaspati bestow his blessing on us.

३१—यज्ञ की भावना

(Spirit of Sacrifice)

आयुर्यज्ञेन कल्पतां प्राणो यज्ञेन कल्पतां चक्षुर्यज्ञेन कल्पतां श्रोत्रं यज्ञेन कल्पतां पृष्ठं यज्ञेन कल्पतां यज्ञो यज्ञेन कल्पताम्। प्रजापतेः प्रजा अभूम स्वर्देवा अगन्मामृता अभूम ।१।

(यजुर्वेद ९।२१)

आयु यज्ञ से (श्रेष्ठ कर्म से) समर्थ हो; प्राण (जीवन शक्ति) यज्ञ से समर्थ हो; चक्षु (दर्शन शक्ति) यज्ञ से समर्थ हो; श्रोत्र (श्रवण शक्ति) यज्ञ समर्थ हो; पृष्ठ यज्ञ से समर्थ हो; यज्ञ (श्रेष्ठ कर्म) यज्ञ से समर्थ हो; हम प्रजापति परमात्मा की प्रजा बनें। हे देवो ! हम सुख एवं स्वर्ग को प्राप्त होवें, हम अमरता को प्राप्त करें।

May life prosper by sacrifice.
May life-breath prosper by sacrifice.
May the eye prosper by sacrifice.
May the ear prosper by sacrifice.
May the back prosper by sacrifice.
May sacrifice prosper by sacrifice.

We have become the children of the Lord of life (Prajapati). Devas ! may we attain heaven, may we become immortal.

को अद्धा वेद क इह प्र वोचद् देवाँ अच्छा पथ्या ३ का समेति। ददृश्र एषामवमा सदांसि परेषु या गुह्येषु व्रतेषु ।१। (ऋग्वेद, ३।५४।५)

कौन यह निश्चयपूर्वक जानता है और कौन यह बता सकता है कि देवों की ओर कौन सा मार्ग जाता है अर्थात् देवमार्ग कौन सा है। इन देवों के उत्कृष्ट एवं छिपे हुए जो स्थान हैं उन में से जो नीचे के स्थान हैं वे ही दिखाई देते हैं।

Who knows this truly? who will declare it here?
what paths lead together to the Devas?
Only the lowest abodes of these are seen
which exist in supreme and secret spheres.

यो धर्ता भुवनानां य उस्राणामपीच्या वेद नामानि गुह्या। स कविः काव्या पुरु रूपं द्यौरिव पुष्यति ।२।
(ऋग्वेद ८।४१।५)

जो समस्त भुवनों को धारण करने वाला है, जो उत्तम ऊपर के मार्ग में चलने वाले सूर्यादि के गुप्त (बुद्धिगम्य) और अन्तर्हित नामों तथा स्वरूपों को जानता है, वह कवि (क्रान्तदर्शी और परम मेधावी), सूर्य के समान, विद्वान् मेधावी पुरुषों के अभ्यासयोग्य ज्ञानों को अनेक प्रकार से पुष्ट करता है।

He who supports the worlds
and knows the secret and mystical
names of the morning beams,
He, poet, cherishes like heaven
manifold forms by His poetic powers.

चत्वारि वाक् परिमिता पदानि तानि विदुर्ब्राह्मणा ये मनीषिणः । गुहा त्रीणि निहिता नेङ्गयन्ति तुरीयं वाचो मनुष्या वदन्ति ।३। (ऋग्वेद १।१६४।४५)

वाणी के चार परिमित (मापे हुए) स्थान हैं उन्हें केवल मनीषी ब्रह्मण ही जानते हैं : उन में से तीन गुहा में निहित और गुप्त हैं; वे प्रकट नहीं होते । यह वाणी का चौथा रूप है जिसे मनुष्य बोलते हैं ।

There are four grades of speech that have been measured;
they are know to wise men with divine knowledge.
Three of these grades, kept in secret, make no motion,
it is the fourth grade that people speak.

पुण्डरीकं नवद्वारं त्रिभिर्गुणेभिरावृतम् ।
तस्मिन् यद्यक्षमात्मन्वत् तद्वै ब्रह्मविदो विदुः।४।

(अथववेद १०।८।४३)

तीन गुणों (सत्त्व, रजस् और तमस्) से आवृत नौ द्वारों वाला (जो) कमल (शरीर) है उस में आत्मा वाला जो पूजनीय तत्त्व है उसे ही ब्रह्मवेत्ता लोग जानते हैं, प्राप्त करते हैं ।

Nine-portalled lotus is enclosed with three bonds, where in
lives the spirit with the Atman within.
Men versed in sacred knowledge of the Vedas realise it.

अकामो धीरो अमृतः स्वयंभू रसेन तृप्तो न कुतश्चनोनः । तमेव विद्वान् न बिभाय मृत्योरात्मानं धीरमजरं युवानम् ।५। (अथर्ववेद १०।८।४४)

कामनारहित, धीर, अमर, स्वयंभू (अपने आप उत्पन्न), रस (वीर्य अथवा पराक्रम) स तृप्त (परिपूर्ण) परमात्मा को जानता हुआ पुरुष मृत्यु से नहीं डरता। अर्थात् ऐसा पुरुष निर्भय होता है, उसे मृत्यु का भय भी नहीं सताता।

Desireless serene immortal, self-existent,
contented with the essence, lacking nothing, is He.
One has no fear of death who has known Him,
the Atman—serene, undecaying truthful.

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात् । तमेव विदित्वातिमृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय ।६। (यजुर्वेद ३१।१८)

अज्ञानान्धकार से परे वर्तमान, आदित्यस्वरूप उस महान् (अनन्त) पुरुष (परब्रह्म) को मैं जानता, क्योंकि उसे जान कर ही ममुष्य मृत्यु का अतिक्रमण कर सकता है, मृत्यु को पार कर उस से बच सकता है। और कोई मार्ग जाने के लिए अथवा मोक्ष की प्राप्ति के लिए नहीं है।

I know this Supreme Absolute Being, who is
refulgent as the sun and is beyond darkness.
By knowing Him alone one transcend death.
There is no other path to go.

ऋचो अक्षरे परमे व्योमन् यस्मिन् देवा अधि विश्वे निषेदुः। यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति य इत्त-द्विदुस्त इमे समासते ।७।
(ऋग्वेद १।१६४।३६; अथर्ववेद ६।१०।१८)

परम ब्रह्म परमात्मा परम आकाश के समान व्यापक और वेद की ऋचाओं के समान अविनाशी है। उस में ही समस्त देवगण स्थित हैं। जो उस परब्रह्म को नहीं जानता वह इन वेदमन्त्रों से भी क्या करेगा ? जो उस परम तत्त्व को जानते हैं वे ही उत्तम स्थान पर बैठते हैं।

What will he do with the hymn of the Veda
who does not know its theme—the Eternal Brahma
in the supreme region, where the Devas dwell ?
But they who know it are perfect.

परीत्य भूतानि परीत्य लोकान् परीत्य सर्वाः प्रदिशो दिशश्च। उपस्थाय प्रथमजामृतस्यात्मनाऽऽत्मानमभि-संविवेश ।८। (यजुर्वेद ३२।११)

समस्त भूतों (पदार्थों और प्राणियों) को व्याप्त कर, सब लोकों को व्याप्त कर के, सब दिशाओं और उपदिशाओं एवं सीमाओं को व्याप्त कर के ऋत (सत्य शाश्वत मूल तत्त्व) से प्रथम प्रादुर्भूत स्थिति को स्वाश्रय में रख कर परमात्मा ने अपने आप को प्रविष्ट किया। अर्थात् परमात्मा सर्वत्र व्याप्त है।

Having encompassed all creatures, encompassed all world,
encompassed all the regions and directions,
and having approached His first-created Eternal Order
He with the Self entered into the Self.

परि द्यावा पृथिवी सद्य इत्वा परि दिशः परि स्वः ।
ऋतस्य तन्तुं विततं विचृत्य तदपश्यत्तदभवत्त-
दासीत् ।९। (यजुर्वेद ३२।१२)

द्युलोक और पृथ्वीलोक को (उन की उत्पत्ति के अनन्तर) तुरन्त ही परिप्राप्त हो कर (घेर कर, स्वाधीन कर के), समस्त लोकों को परिप्राप्त कर के, दिशाओं को परिप्राप्त कर के, सूर्य को परिप्राप्त कर के जो ब्रह्म विराजमान है, उस नेऋत (अव्यक्त प्रकृति) के फैले तन्तु को विच्छिन्न कर के देखा कि सर्वत्र वह (स्वयं) था और वह ही हो गया ।

'Going swiftly round the sky and earth,
around the worlds, around the quarters, around
the Heaven,
and lengthening out the wide-spread thread of Order,
He saw that, He became That, He was That.

इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गरु-
त्मान् । एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मात-
रिश्वानमाहुः ।१०।(ऋग्वेद १।१६४।४६)

वह (परमात्मा) एक ही है परन्तु विद्वान् ब्राह्मण उसे अनेक नामों से पुकारते हैं। उसी को इन्द्र, मित्र, वरुण और अग्नि कहते हैं। वह ही दिव्य सुपर्ण और गरुत्मान् है। उसी को अग्नि, यम और मात-रिश्वा कहते हैं।

They call Him Indra, Mitra, Varuna and Agni,
and He is glorious Suparna Garutman ;
He is One but the sages call Him by various mames,
they call him Agni, Yama and Matarishvan.

तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद्वायुस्तदु चन्द्रमाः ।
तदेव शुक्रं तद् ब्रह्म ता आपः स प्रजापतिः ।११।
(यजुर्वेद ३२।१)

वह (परब्रह्म) ही अग्नि है, वह ही आदित्य है, वह ही वायु है और वह ही चन्द्रमा है; वह ही शुक्र है और वह ही ब्रह्म है; वह ही आपः (जल) है और वह ही प्रजापति है।

He is Agni, He is Aditya,
He is Vayu, He is Chandrama,
He is Shukra and He is Brahman,
He is Apah and He is Prajapati.

अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः । विश्वे देवा अदितिः पञ्च जना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम् ।१२।
(ऋग्वेद १।८९।१०; यजुर्वेद २५।२३; अथर्ववेद ७।६।१)

अदिति ही द्युलोक है; अदिति अन्तरिक्ष है; अदिति माता, पिता और पुत्र है; अदिति ही सब देवता हैं और अदिति ही पंच जन (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और निषाद) हैं; जो बन चुका है और जो बनने वाला है वह सब अदिति ही है ।

Aditi is heaven, Aditi mid-region.
Aditi is Mother, Father and Son,
Aditi is all the Devas and the five peoples,
Aditi is all that is born and that is to be born.

रूपं रूपं प्रतिरूपो बभूव तदस्य रूपं प्रतिचक्षणाय । इन्द्रो मायाभिः पुरुरूप ईयते युक्ता ह्यस्य हरयः शता दश ।१३। (ऋग्वेद ६।४७।१८)

प्रत्येक रूप में उसी का प्रतिरूप है अर्थात् सब प्राणियों में वही तदाकार हो कर विराज रहा है। उसी का रूप ही सर्वत्र दिखाई देता है। इन्द्र मायाओं (विविध प्रकार की बुद्धियों और शक्तियों) से नाना रूपों में जाना जाता है। उस के अधीन सैंकड़ों प्राणी (मनुष्य, अश्व आदि) काम करते हैं।

For each and every form He is the image :
it is His form that is to be seen everywhere ;
Indra moves multiform by his creative charm ;
the steeds yoked to his chariot are a thousand.

विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात् । सं बाहुभ्यां धमति सं पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन् देव एकः ।१४। (ऋग्वेद १०।८१।३)

उस देव (परब्रह्म परमात्मा) के चक्षु सब ओर हैं; उस के मुख सब ओर हैं; उस की भुजाएं सब ओर हैं और उस के पैर सब ओर हैं। वह अपनी सर्वव्यापिनी भुजाओं से सर्वत्र व्याप्त है। वह देव एक ही है और द्युलोक तथा पृथ्वीलोक को उत्पन्न करता है।

With eyes everywhere, with mouths in all sides,
with arms all around and with feet in all quarters,
and with His all-spreading arms, One Divine Being,
the creator of the heaven and the earth, infuses
life into all beings.

न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम महद्यशः।
हिरण्यगर्भ इत्येष मा मा हिंसीदित्येषा यस्मान्न जात इत्येषः ।१५। (यजुर्वेद ३२।३)

उस परमात्मा की कोई प्रतिमा (मूर्ति अथवा तुलना) नहीं है जिस का नाम (नाम स्मरण) महान् यश देने वाला है। वह हिरण्य-गर्भ परमात्मा मुझे मत मारे अर्थात् मेरी किसी प्रकार भी हानि न करे, यही मेरी उस से प्रार्थना है, क्योंकि वह कभी उत्पन्न नहीं होता।

There is no image of him, none to compare with him,
His name 'Hiranyagarbha' is highly glorifying.
May He not harm me.
I pray to him Who is never born.

सदसस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम्।
सनिं मेधामयासिषं स्वहा ।१६। (यजुर्वेद ३२।१३)

समस्त सदनों (भुवनों, लोकों) के अद्भुत (अभूतपूर्व) पति, इन्द्र के भी काम्य परमात्मा को एवं उस की सम्भजनीय बुद्धि को प्राप्त होऊँ, यही प्रार्थना है।

May I approach wonderful Lord of the Assembly, dear to Indra, lovable and bestower of wisdom, Hail !

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।१७।
(ऋग्वेद ७।५९।१२)

हम उस परब्रह्म परमात्मा की स्तुति करते हैं जो त्रिकालज्ञ है और तीनों कालों में एक रस रहने वाला है, जो यशस्वी और बलदाता है। जैसे पका हुआ खरबूज़ा लता-बन्धन से छूट जाता है वैसे ही वह परब्रह्म मुझे भी मृत्यु के बन्धन से मुक्त कर दे, परन्तु अमरता (मोक्ष) से न छुड़ाए।

To Tryambaka our offerings :
to the fragrance-bearer, the increaser of nourishment,
My he release me, like the cucumber from its stem,
from mortal life, not from immortality.

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम् ।
तत्त्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये ।१८।
(यजुर्वेद ४०।१७)

हिरणमय (स्वर्णिम चमकदमक वाले) पात्र से सत्य का मुख ढका हुआ है। हे पूषन् देव ! (सब का भरण-पोषण करने वाले परमेश्वर !) सत्य धर्म को देखने के लिए तू उस ढकने (पर्दे) को हटा दे ताकि हम उसे देख सकें।

The face of truth is covered with a lid of gold.
unveil, O God, His golden lid, so that
we may see the truth and know our duty.

**यमो नो गातुं प्रथमो विवेद नैषा गव्यूतिरपभर्तवा उ ।
यत्रा नः पूर्वे पितरः परेयुरेना जज्ञानाः पथ्या अनु-
स्वाः ।१।** (ऋग्वेद १०।१४।२)

सर्वप्रथम यम ने हमारे लिए अर्थात् प्राणियों के लिए यह मार्ग (मृत्यु का मार्ग) जाना । यह मार्ग किसी के द्वारा अपहृत नहीं किया जा सकता । जिस मार्ग से हमारे पूर्वज गए हैं उसी से अपना हित जानते हुए सभी अनेक मार्गों से जाते हैं ।

Yama first found out for us the road to Death,
this is a road that none can rob us of.
Thither the living go their several ways, along the road
by which our forefathers passed.

**प्रेहि प्रेहि पथिभिः पूर्व्येभिर्यत्रा नः पूर्वे पितरः परेयुः ।
उभा राजाना स्वधया मदन्ता यमं पश्यासि वरुणं
च देवम् ।२।** (ऋग्वेद १०।१४।७)

जाओ, जाओ, उन्हीं मार्गों से जाओ जिन से हमारे पूर्वज गये थे । वहाँ मृत्युलोक में जा कर तुम अमृतान्न से तृप्त होते हुए दोनों राजाओं यम और वरुण को देखोगे ।

Go forth, go forth, by the old paths.
by which our forefathers passed.
There thou shalt look on the Twin Kings,
Yama and Varuna, rejoicing in our sacrifice.

सं गच्छस्व पितृभिः सं यमेनेष्टापूर्तेन परमे व्योमन् ।
हित्वायावद्यं पुनरस्तमेहि सं गच्छस्व तन्वा सुवर्चाः ।३। (ऋग्वेद १०।१४।८)

जाओ, उस उत्कृष्ट लोक में अपने पितरों के साथ मिलो। यमराज से मिलो और अपने शुभ कर्मों का फल प्राप्त करो। पाप को यहाँ छोड़ कर वहाँ अपने घर में जाओ; वहाँ प्रकाशमय शरीर के साथ जाओ।

Go, meet the fathers in heaven on high,
meet Yama, meet the good works done by thee.
Leave here all evil, and go home,
meet there another glorious body.

वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्तँ शरीरम् ।
ओ३म् क्रतो स्मर । क्लिबे स्मर । कृतँ स्मर ।४।
(यजुर्वेद ४०।१५)

प्राणवायु (मृत्यु के समय) अमर वायु में (समष्टि वायु तत्त्व में) विलीन हो जाता है। वह अमर है। यह शरीर भस्मान्त है अर्थात् तभी तक है जब तक अग्नि में जल कर भस्म नहीं हो जाता। हे कर्म करने वाले जीव! ईश्वर को स्मरण कर; आगे किये जाने वाले कर्म को स्मरण कर; पीछे किये हुए कर्म को स्मरण कर। हे कर्म करने वाले जीव, ईश्वर को स्मरण कर और अपने कर्म को स्मरण कर।

My breath and spirit shall go to the immortal,
and this body shall end in ashes,
Remember Om, O Mind, remember thy deeds.
Remember thy actions that thou shalt reap.

मृत्योः पदं योपयन्तो यदैत द्राघीय आयु प्रतरं दधानाः। आप्यायमानाः प्रजया धनेन शुद्धाः पूता भवत यज्ञियासः ।५।

(ऋग्वेद १०।१८।२)

मृत्यु के पाँव को परे हटाते हुए, दीर्घ आयु को और दीर्घ बना कर धारण करते हुए (जीवन मार्ग में) चलो और प्रजा (सन्तान) से तथा धन से वृद्धि को प्राप्त करते हुए शुद्ध और पवित्र हो कर यज्ञमय जीवन व्यतीत करो।

While, avoiding the path of Death, you go,
taking hold of a long and prosperous life,
may you, increasing with off-spring and riches,
become pure and clean performing yajnas in
your life

३४—परलोक (स्वर्ग)

(Heaven)

यत्र राजा वैवस्वतो यत्रावरोधनं दिवः। यत्रामूर्यह्व-तीरापस्तत्र माममृतं कृधीन्द्रायेन्दो परि स्रव।१।

(ऋग्वेद ६।११३।८)

जहाँ प्रकाशमान और सब का स्वामी, विवस्वान् का पुत्र राजा बन कर विराजता है, जहाँ द्युलोक की सदा स्थिति है, जहाँ वे जल अथवा आप्त शक्तियाँ व्यापक हैं, उस लोक में मुझ को अमर बना। हे इन्दु! (सोम अथवा दयालु) तू इन्द्र के लिए द्रवित हो।

Make me immortal in the realm
where the son of Vivasvat reigns,
where lies heaven's secret shrine, where
are those waters that are ever young.

यत्र ज्योतिरजस्रं यस्मिन् लोके स्वर्हितम्। तस्मिन् मां धेहि पवमानाऽमृते लोके अक्षित इन्द्रायेन्दो परि स्रव।२।

(ऋग्वेद ६।११ ।७)

जहाँ सदा प्रकाश रहता है, जिस लोक में सदा दिव्य प्रकाश अथवा सुख बना रहता है, उस मृत्युरहित और विनाशरहित लोक में मुझे स्थान दो। हे इन्दु! तू इन्द्र के लिए बह।

Place me, Purifier, in that
deathless, imperishable world
Where eternal lustre glows, the realm
in which the light divine is set.

यत्रानुकामं चरणं त्रिनाके त्रिदिवे दिवः
लोका यत्र ज्योतिष्मन्तस्तत्र माममृतं कृधि० ।३।
(ऋग्वेद ९।११३।९)

जहाँ कामनानुसार यथेच्छ विचरण होता है, जहां तीनों प्रकार का सुख और तीनों प्रकार का प्रकाश है, जहाँ लोक दिव्य ज्योति से युक्त हैं, वहां मुझे अमर बनाओ। हे इन्दु ! इन्द्र के लिए द्रवित होवो ।

Make me immortal in that realm
where movement is according to wish,
in the third region, the third heaven of heavens
where the worlds are resplendent.

यत्र कामा निकामाश्च यत्र ब्रघ्नस्य विष्टपम् ।
स्वधा च यत्र तृप्तिश्च तत्र माममृतं कृधि० ।४।
(ऋग्वेद ९।११३।१०)

जहाँ सब कामनाएं और इच्छाएं पूर्ण होती हैं, जहाँ प्रकाशमान (परमात्मा) का सुखमय स्थान है, जहाँ स्वधा और तृप्ति प्राप्त होती हैं, उस लोक में मुझे अमर बनाओ। हे इन्दु ! इन्द्र के लिए प्रवाहित होवो ।

Make me immortal in that realm
where all wishes and longings are obtained,
where spreads the radiant One's region,
and where there is holy bliss and happiness.

यत्रानन्दाश्च मोदाश्च मुदः प्रमुद आसते ।
कामस्य यत्राप्ताः कामास्तत्र मामममृतं कृधि० ।५।

(ऋग्वेद ९।११३।११)

जहाँ (जिस लोक में) आनन्द और मोद (प्रसन्नता) है, जहाँ सुखप्रद सम्पत्तियाँ और ऐश्वर्य विराजते है, जहाँ कामनायुक्त की कामनाएं पूरी होती हैं, उस लोक में मुझे अमर बनाओ । हे इन्दु ! इन्द्र के लिए प्रवाहित होवो ।

Make me immortal in that realm
where beatitude and joy and cheer
and transports of delight abound,
where the highest desires are filled.

नमस्कृत्यद्यावा पृथिवीभ्यामन्तरिक्षाय मृत्यवे ।
मेक्षाम्यूर्ध्वस्तिष्ठन् मा मा हिंसिषुरीश्वराः ।६।

(अथर्ववेद ७।१०२।१)

द्युलोक और पृथिवीलोक को एवं अन्तरिक्ष और मृत्यु को नमस्कार कर के ऊंचा खड़ा हो कर निरीक्षण करता हूं । अतः ईश्वर (स्वामी—अधिकारी) मेरी हिंसा न करें ।

Having paid my homage to Heaven and Earth,
and to Mid-region and Death,
I stand at a hight and observe.
Let not the authorities harm me.

स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम् । आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम् । मह्यं दत्त्वा व्रजत ब्रह्मलोकम् ।

(अथर्ववेद १९।७१।१)

मैंने वेदमाता की स्तुति की है । द्विजों को पवित्र करने वाली वेद माता उत्साह और प्रेरणा देने वाली हो । आयु, प्राण, प्रजा (सन्तान), पशु, कीर्ति, धन और तेज मुझे देकर ब्रह्मलोक को जाओ अथवा यह सब मुझे देकर ब्रह्मलोक प्राप्त कराओ ।

I have praised Veda, the holy mother, boons-giving
may she be inspirer of the songs of twice-born.
Having enriched me with life and breath,
with children and cattle, with fame and wealth.
and with Brahman's lustre,
go ye to Brahma's world.



वैदिक जीवन-पद्धति के उद्धारक : आर्यसमाज के संस्था

महर्षि दयानन्द सरस्वती



राय साहिब चौ॰ प्रताप सिंह धर्मार्थ ट्रस्ट,

५७, माडल टाऊन, करनाल